मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (मुहास)

MANGALORE UNIVERSITY

HINDI ADHYAPAK

SANGH, MANGALORE

(MUHAS)

मुहास वाणी

1st SEMESTER

HINDI NOTES

2022-23

I SEM B.A

SL. NO.	CHAPTER	LECTURER NAME
1.	राही और रोज़	सुकन्या शेट्टी, धवला कालेज
2.	सुभागी और पाजेब	अमिता
3.	दोपहर का अभोजन और पिता	गीताक्षी
4.	सिलिया और काठलूम अपने-अपने	ज्योती ज्ञानेश्वरी

1.राही सुभद्रा - सुभद्रा कुमारी चौहान

लेखिका का परिचय हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान जी का जन्म 16th अगस्त 1904 को नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक एक छोटे से गाव में रामनाथ सिंह के जमींदार परिवार में हुआ था। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं के देखरेख में उनकी प्रारंभिक शिक्षा भी हुई । इलाहाबाद के क्रस्थवेस्ट गर्ल्स स्कूल में महादेवी वर्मा उनकी जूनियर और सहेली थी । 1919 में खंडवा में ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ विवाह के बाद वह जबलपुर आ गई थी। 1921 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थी और वे दो बार जेल भी गई थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी इनकी पुत्री सुधा चौहान ने "मिला तेज से तेज" नामक पुस्तक में लिखी है। भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान के राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए नए नियुक्त एक तटरक्षक जहाज को सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम दिया। भारतीय डाक तार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक टिकट जारी किया है । दुर्भाग्य से 15 फरवरी 1948 को एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया था। उनकी रचनाएं इस प्रकार है दो काव्य संग्रह मुकुल और त्रिधारा अत्यंत जनप्रिय है।

सारांश - राही एक ऐसी महिला है जिसे चोरी के जुर्म में एक साल की जेल की सज़ा हुई थी । अपने भूखे बच्चों की भूख मिटाने के लिए पाच सेर अनाज की गठरी चोरी की थी। चोरी करते समय पकडी गई थी। उसका पति जेल में मर गया था ।

राही मागरोरी जाती से संबंध रखती थी जिन्हें समाज में काम-धन्धा करने की अनुमति नहीं थी । और वे केवल भीख मागकर ही पेट भरते या भीख न मिलने पर चोरी करनी पडती थी । जेल में राही अनिता नाम की सत्याग्रही से अपनी विवशता प्रकट करती है । अनिता स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने से जेल आई थी । वह एक धनिक परिवार से थी इसलिए उसे 'बी' श्रेणी जेल से 'ए' श्रेणी के जेल में भेज दिया गया था ।

जब अनिता को राही के दयनीय स्थिति का पता चलता है तो उसे बहुत दुख होता है । राही जैसे लोगों के उद्धार के बारे में सोचती है । और निश्चय कर लेती है कि इन लोगों के लिए कुछ करना ही सच्ची देश सेवा है । एक आश्रम खोलकर बेसहारा, गरीब, विधवा स्त्रियों के शिक्षण, उनके बच्चों का शिक्षण देने के सपने देखती है । अनिता के पिता के बीमारी के कारण उसे जेल से रिहा करते हैं । बाहर आते ही उसका सपना साकर करने का निर्णय लेती है ।

'राही' कहानी द्वारा लेखिका ने गरीबों के पीडा का वर्णन किया है । और सत्याग्रहियों में शामिल सत्ता के लोलुप व्यक्तियों पर व्यंग्य किया है ।

एक अंक के प्रश्न उत्तर

1 राही कहानी के लेखिका का नाम क्या है । - सुभद्रा कुमारी चौहान

2 असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली पहेली महिला कौन थी - सुभद्रा कुमारी चौहान

3 राही को कितने साल की सजा सुनाई थी - 1 साल

4 राही किस जाति के थे - मांगरो

5 राही में क्या चुराया था - अनाज की गटरी

6 राही कितने शेर अनाज की बैटरी चोरी की थी - 5

7 मांगरोल जाति का क्या काम था - भीख मांगना अथवा भीख ना मिलने पर चोरी करना

8 जेल में राही की मुलाकात किससे हुई- अनीता से

9 अनीता जेल क्यों आई थी - स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण

10 अनीता को जेल से रिहा क्यों किया - अनीता के पिता के बीमारी के कारण

संदर्भ स्पष्टीकरण

1 तुझे किस अपराध में सजा हुई?

2 अब तेरे बच्चे किसके पास हैं? उनका बाप है?

3 कल तक जो कतर भी ना पहनते थे बात बात पर कांग्रेसका मजाक उड़ाते थे कांग्रेस के हाथों में थोड़ी शक्ति आते ही रे कांग्रेश भक्त बन गए ।

4 यह हमारी छोटी जेल यात्रा है यह हमारी पांचवी जेल यात्रा है

निबंधात्मक प्रश्न

1 राही कहानी का सारांश लिखिए ।

2 राही कहानी में व्यक्त गरीबों की पीड़ा का चित्रण कीजिए ।

3 राही कहानी का उद्देश्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

<u>प्रस्तुति : सुकन्या शेट्टी, धवला कालेज, मूडुबिदिरे</u>

<u>2.सुभागी - प्रेमचंद</u>

<u>लेखक परिचय: -</u> प्रेमचंद हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक है। इनका जन्म 31 जुलाई 1880 को बनरस के एक छोटे लमही गाँव में हुआ था। इनका मृत्यु 8 अक्टूबर 1936 में हुआ।
इनके रचनाए: गोदान (उपन्यास) गबन, सेवादान, प्रेमश्रम, कर्म भूमि, रंग भूमि, मंगलसूत्र उपन्यास को अमृत राय ने पूरा किया।

कथावस्तु : सुभागी कहानी मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखी गई है। इसमें कहानीकार ने एक ऎसी युवती का चित्रण किया है, जो वृद्ध माता-पिता की जी-जान से सेवा करती है। रात-दिन मेहनत

करके कर्जा भी चुकाती है और गाँव में सभी से पूरा स्नेह और सहयोग पाती है। उस युवती का नाम सुभागी (सुन्दर भाग्यवाली) बताया गया है।

तुलसी महतों अपनी बेटी सुभागी से ज्यादा बेटे रामू से प्यार करते थे। रामू जवान होकर भी उल्लू था। सुभागी ग्यारह साल की बालिका होकर भी घर के काम में चतुर और खेती-बारी के काम में इतनी निपुण थी कि उसकी माँ लक्ष्मी डरती थी कि कहीं लड़की पर देवताओं की आँख न पड़ जाये। यानी बुरी नज़र न लगा जाए। वही सुभागी आज ग्यारह साल की उम्र में विधवा हो गयी। घर में कुहराम (रोना-दोना) शुरु हो गया था। माता-पिता सिर पिटते थे उन्हें देखकर सुभागी भी रोती थी, बार- बार माँ से पूछती थी, क्यों रोती हो माँ, मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी। तुम क्यों रोती हो? उसकी भोली बाते सुनकर माँ का दिल और भी फटा जाता।

सुभागी सोचती हे कि उसके पास कोठरी भर रुपये होते तो वह उन्हें छिपाकर रख देती फिर एक दिन चुपके से बाजार चली जाती और माँ के लिए अच्छे-अच्छे कपड़े लाती, दादा जब बाकी माँगने आते,तो चट रुपये निकालकर दे देती, माँ और दादा कितने खुश होते।

जब सुभागी जवान हुई तो लोग तुलसी महतों पर दबाव डालने लगे कि लड़की की शादी कहीं कर दें जवान लड़कीका यो-फिरना ठीक नहीं । जब हमारी बिरादरी में इसकी कोई निंदा नहीं है, तो क्यों सोच विचार करते हो ।

सुभागी ने सिर झुकाकर कहा चाचा, मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ, लेकिन मेरा मन शादी करने को तैयार नहीं है। मुझे आराम की चिंता नहीं है। मैंसब कुछ झेलने को तैयार हूँ। अगर मैं सच्चे बाप की बेटी हूँगी तो बात की भी पक्की हूँगी। फिर लाज रखने वाले तो भगवान है। मेरी क्या हस्ती है कि अभी कुछ कहूँ।

तब रामू ने कहा - तुम अगर सोचती कि भैया कमावेंगो और मैं बैठी मौज करूँगी तो इस भरोसे न रहना। यहाँ किसी ने जनम भर का ठेका नहीं लिया है।

रामू की पत्नी ने रामू से भी दो कदम ऊँची थी। मटककर बोली यहाँ तो खाने को भी महीन चाहिए। पहनने को भी महीना चाहिए। यह हमारे बस की बात नहीं।

सुभागी ने गर्व से भरे हुए स्वर में कहा भाभी, मैने तुम्हारा आसरा कभी नहीं किया और भगवान ने चाहा तो कभी करूँगी भी नहीं। तुम अपनी देखो मेरी चिंता न करो।

रामू की दुल्हन को जब मालूम हो गया कि सुभागी दूसरी शादी नहीं करेंगी उसे भी चिता होने लगी। वह बेचारी पहर रात से उठकर कूटने-पीसने में लगा जाती, चौका बरतन करती, गोबर पाथती। फिर खेत में काम करने चली-जाती दोपहर को आकर जल्दी खाना पकाकर सबको खिलाती रात को कभी माँ के सिर में तेल डालती थी। कभी उसकी देह दबाती तुलसी महतों चिलम के भक्त थे। उन्हें बार-बार चिलम पिलाती, जहाँ तक अपना बस चलता। माँ-बाप को कोई काम न करने देती। हाँ, भाई को न रोकती। सोचती, यह तो जवान आदमी है, यह काम न करेंगे तो गृहस्थी कैसे चलेगी।

मगर रामू को यह बुरा लगता। माँ-बाप को तिनका तक नहीं उठाने देती। रामू ने सुभागी से बोला अगर उन लोगों का बडा मोह है, तो क्यों नहीं अलग-लेकर रहती हो। तब सेवा करो तो मालूम हो कि सेवा कड़वी लगती है कि मीठी। दूसरों के बल पर वाह-वाही लना आसान

है बहादुर वह है, जो अपने बल पर काम करे। तुलसी महतोजब तक मैं जीता हूँ। तुम उसे कुछ नहीं कह सकते । मेरे पीछे जो चाहे करना बेचारी घर में रहना मुश्किल कर दिया है।

रामू, आप को बेटी बहुत प्यारी है, तो उसे गले बाँध कर रखिए मुझसे तो नहीं सहा जाता । तुलसी महतों रात को पुरानी बात याद आई। जब रामू के जन्मोत्सव में उन्होंने रुपये कर्ज लेकर जलसा किया था, और सुभागी पैद हुई तो, कुछ नहीं किया पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्वजन्म के पापों का दंड। वह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलय ।

दूसरे दिन महतों ने गाँवों के आदमियों को जमा करके कहा पंचों, अब रामू और मौं एक ही घर में नहीं रह सकते। तब रामू ने कहा - मुझे अपना इस्सा देदो गाँव के मुख्यतार बाबू सजनसिंह बड़े सजन पुरुष थे। रामू तुम अपने पिता से अलग होना चाहते हो? तुम्हें शर्म नहीं आती कि अपने पत्नी के कहने से माँ-बाप को अलग किये देते हो तुलसी ने कहा उसे जो चाहिए वो देदो अब मैं इस दुष्ट के साथ नहीं रहूँग भगवान ने बेटी को दुःख दे दिया, लेकिन ऐसा बेटा किसी जन्म में भी नहीं चाहिए। महतों बहू को मारे, मगर लोगों ने पकड़ लिया।

बाटवारा होने ही महतों और लक्ष्मी को मानो पेशन मिल गयी। अब सुभागी एक काम करने नहीं देती पहले घर में दूध घी के लिए तरसतेथे अब रुपया बचाकर एक भैंस लेली। बूढ़े आदमियों की जान तो उनका भोजन है। सुभागी ने बोला दूध के बिना मुझे खाना अच्छा नहीं लगता गाँव में जहाँ-देखो सब के मुहाँ में सुभागी की तारीफ है। सजनसिंह तो कहते थे यह जन्म की देवी है।

सात आठ दिन से तुलसी महतों को जोर का ज्वर चढ़ा हुआ था। रामू को बुलाने गयी तो वह कहने लगा की मैं कोई डाक्टर नहीं हूँ तुम उनके गलेका हार बनी हुई थी। अब जब मरने लगे तो मुझे बुलाने आयी हो । सब रामू को मानने लागे सजनसिंह भी मनाने की कोशिश की लेकिन रामू ने किसी की बात नहीं माना जब महतों को इस बात का पता चला तो "उस पापी हत्यारे का मुँह नहीं देखना चाहता था"। इसके बाद गोदान की तैयारी होने लगी। तुलसी महतों का दाह क्रिया लक्ष्मी ने किया । सुभागी ने बाबूजी का काम तो धूम-धाम से किया । तेरह दिन आठ गाँव के ब्रह्मणों का भोजन हुआ चारों तरफ सुभागी के तारीफ होने लगी ।

कुछ समय के बाद माँ लक्ष्मी भी गुजर गयी। उसकी अंतिम संस्कार सुभागी ने किया। अब सुभागी एक मात्र लक्ष्य रहा की सजनसिंह से उदार लिये पैसे को वापस करना। इस तरह मेहनत करके कर्ज के पैसे सजनसिंह को लौटया । सजनसिंह सुभागी से उसके बेटा के साथशादी का प्रस्ताव रखता है उनका बेटा सुभागी से प्यार करता था । पिता समान सजनसिंह की वे बातों को माना नहीं कर पायी।

सजनसिंह ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा - तुम्हारा सुहाग अमर हो। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ-सा भगयाशाली संसार में और कौन होगा।

सुभागी का अर्थ भाग्यवान । अगर हम सुभागी के चरित्र को पाठ के आधार पर देखे तो यह उसके चरित्र को शत प्रतिशत सार्थक करता है। वह एक ईमानदार, मेहनती, परोपकारी और माता पिता की योग्य संतान थी। किन्तु अपने स्वयं के लिए उसका नाम सार्थक नहीं था क्योंकि

वह स्वयं कष्ट में रही। अकेली रहनेवाली सुभागी के जीवन में सजनसिंह का बेटा उसे शादी करके उसके जीवन को नया अर्थ देता इस तरह सुभागी कहानी समाप्त होता है।

एकशब्द या वाक्य में उत्तरलिखिए ।

1. तुलसी महतों के कितने बच्चे थे ? (दो बच्चे थे 'सुभागी'औररामू)
2. तुलसी महतों ने गाँववालों को क्यों इकट्ठा किया था?(अपने बेटे रामू से अलग होने के लिए)
3. 'सुभागी' कहानी के रचनाकार कौन है ? (प्रेमचंद)
4. 'सुभागी'को कब अपना जीवन पहाड जैसा लगने लगा?(जब'सुभागी 'छोटी उम्र में ही विधवा हो गई ।)
5. सजनसिंह'सुभागी' की शादी किससे करवाना चाहते थे?(अपने बेटे से)
6. 'सुभागी'कौन-सीउम्र में विधवा हो जाती है? (ग्यारह)
7. गाँव केमुखिया का नामक्या था ? (सजनसिंह)
8. सुभागी किसके कर्जदार थी? (सजनसिंह की)
9. 'सुभागी' की माँ का नामक्या है ? (लक्ष्मी)
10. लक्ष्मी का दाह संस्कार किसने किया ? (उनकी बेटी 'सुभागी')

<u>संदर्भसहित व्याख्य कीजिए ।</u>

1. "तुम अगर सोचती हो कि भैया कमारेंगे और मैं बैठी मौज करूँगी, तो इस भरोसे न रहना। यहाँ किसी ने जनमभर का ठेका नहीं लिया है ।"P.No.27
2. "महतो-नहीं भैया उस पापी हत्यारे का मुँह मैं नहीं देखना चाहता ।'P.No.31
3. "सुभागी" ने कहा,'अभी थकी नहीं हूँ दादा। आपने जोड लिया कुल कितने रुपये उठे?"P.No.31
4. "सजनसिंह देखों इनकार ना करना, नहीं मैं फिर तुम्हें अपना मुँह न दिखाऊँगा।' P.No.33
5. दादा, इतना सम्मान पाकर पागल हो जाऊँगी। P.No.34

<u>निबंधात्मक प्रश्न</u>

1. 'सुभागी' कहानी के आधारपर 'सुभागी' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
2. 'सुभागी' कहानी का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
3. 'सुभागी' कहानी का सार आपने शब्दों में लिखिए ।
4. 'सुभागी' कहानी का सार लिखकर, शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए ।

<u>Dr.Amitha, Dep, of Hindi, Badria First Grade College Mangalore</u>

3.पाजेब - जैनेन्द्र कुमार

लेखक परिच: जैनेन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी, 1905 - मृत्यु 24 दिसम्बर,1988
पुरस्कार- उपाधि : साहित्य अकादमी पुरस्कार (1966), अन्य नाम : आनंदी लाल (मूलनाम)
पूरा नाम : जैनेन्द्र कुमार, जन्म भूमि: कौड़ियालगंज, अलीगढ, उत्तर प्रदेश

जैनेन्द्र कुमार का हिंदी साहित्य में काफी विशेष स्थान है । वे हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार उपन्यासकार, तथा निबंधकार हैं।

प्रकाशित कृतियाँ : 'सुनीता' 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'विवर्त', 'सुखदा', 'व्यतीत' तथा 'जयवर्धन' और 'मुक्ति-बोध' कथा के पात्र-मैं, पत्नी-राजी, बेटी-अंजु (अन्जो) आदि।

पाजेब जैनेन्द्र कुमार जी द्वारा लिखी गयी एक बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है। पाजेब कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी कहानी है। आपके साहित्य में दर्शन और मनोविज्ञान का समावेश है। इनकी कहानियों में व्यक्तित्व की प्रधानता है। बच्चों में देखा देखी की आदत होती है। यही नकल का रूप ले लेती है। कहानी के प्रारम्भ में मुन्नी ने जब पड़ोस की सहेलियाँ रुकमनी और शीला की नए किस्म की पाजेब पहने देखकर जिद्द कर लिया कि उसे भी वैसे ही पाजेब चाहिए। माता-पिता को बाल हठ के सामने झुकना पड़ता है। दोपहर को बुआ आई। उसने अगले इतवार को पाजेब लाने का वादा किया। बच्चे जल्दी बहल जाते हैं। इतवार को बुआ पाजेब ले आई। मुन्नी पाजेब पहन कर खुश हो गयी। घस्आँगन, बाहर-भीतर, घूमती फिरी। सबसे प्रशंसा पाने के लिए सबको दिखाती फिरी। भाई आशुतोष भी खुश हुआ। बच्चों में भोलापन तो होता ही है, साथ ही ईषर्या, हठ और रूठना जैसी आदतें भी हॊती है। आशुतोष ने साइकिल की फरमाईश कर डाली। बुआ ने जन्मदिन पर साइकिल दिलाने का वादा किया तो वह मान गया। पजेब का उत्साह थॊड़ी देर में समाप्त हो गया। पाजेब उतार कर रख दी गयी।

एक दिन पाजेब ना मिलने पर उसकी खोज हुई । माँ ने नौकर बंसी पर शक किया। जब उसने इनकार कर दिया कि उसने पाजेब नहीं ली तो पिता ने बेटे आशुतोष से पूछा किया। इस तरह बिना आधार किसी तर्क और छानबीन की। आशुतोष अचानक प्रश्नों की बौछार से बचने के लिए कभी कुछ उत्तर देता कभी कुछ। वह डांट और मार से बचाना चाहता था। पिता सच्च उगलवाने के लिए साम दाम दंड भेद सभी नीतियाँ अपना रहे थे। बालक तन के कोमल और मन के पवित्र होते हैं। वे झूठ बोलने में माहिर नहीं होते। पिता ने जब पडोसी बालक छुन्नू का नाम लिया तो आशुतोष ने जान बचाने के समर्थन में सर हिला दिया। जब उसे छुन्नू से पाजेब लाने को कहा गया तो आशुतोष ने कहा, उसके पास नहीं हुई तो वह देगा कहाँ सेदेंग।

आशुतोष को पतंग का शौक था। फिर पसंद वाले पर शक हुआ। जब आशुतोष ने पतंग वाले के पास जाने से इनकार कर दिया। उधर छुन्नू की माँ ने भी छुन्नू की पिटाई कर डाली। आड़े-तिरक्षे प्रश्नों से सत्य को कबूल करवाने की कोशिश की गयी। अंत में जब आशुतोष को पकड़ कर जबरदस्ती पतंगवाले के पास लेकर जा रहे थे, उसी समय बुआ जी आ जाती है। उनके पास कुछ जरुरी कागजात थे। वे अपनी बास्केट की जेब से पाजेब निकाल कर रख देती है और कहती है कि वह भूल से उसके साथ चली गयी थी। पाजेब को देखकर सब हतप्रभ रह जाते हैं।

पाजेब कहानी के माध्यम से जैनेन्द्र कुमार जी ने पाठकों को यह दिखाना चाहते हैं कि माता पिता या अभिभावक कभी कभी बिना सोचे समझे अपने अनुभव या आयु के महत्व को दिखाने के लिए बच्चों पर ऎसे आरोप थोप देते हैं जो असत्य होते हैं। बच्चे भय के कारण उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। उन्हें स्वयं भी दुःख होता हैं लेकिन अपने बड़ों के सामने वे व्यक्त नहीं कर पाते हैं। अतः माता-पिता को बिना सोचे समझे बच्चों पर संदेह नहीं करना चाहिए। इससे बच्चों के मन में माता-पिता के लिए गलत धारणाएं बन जाती है। वह माता-पिता को शत्रु भी समझने लगते हैं। बार-बार विवश करने पर बच्चा झूठे आरोप को स्वीकार कर लेता हैं जिसे माता-पिता अपनी उपलब्धि समझते हैं। बच्चे को इस प्रकार विवश करने से उसमें अपराधवृत्ति आ सकती है। खोयी पाजेब आशुतोष की बुआ के पास मिलने पर माता-पिता हतप्रभ रह गए। पर आशुतोष को कोई खुशी नहीं हुई क्यॊंकि वह उस अपराध की इतनी सजा पर चुका था जो

उसने किया ही नहीं था। इस प्रकार पाजेब बालमनोवैज्ञानिक के चित्रण के साथ साथ बच्चों पर बिना सोचे समझे शक करनेवाले माता-पिताओं पर एक व्यंग्य है।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए ।

1. मुन्नी के लिए पाजेब कौन लाया था? (बुआ)
2. लेखक की पत्नी को पाजेब चुराने का संदेह सबसे पहले किस पर हुआ?(नौकरबंसी पर)
3. 'पाजेब' कहानी के अनुसार आशुतोष को किस चीज़ का शैंक था?
   (साईकल चलाने तथा पतंग उडाने का)
4. 'पाजेब' कहानी का लेखक कौन है? (जैनेन्द्र कुमार)
5. 'पाजेब' कहानी के अनुसार गुम हुई 'पाजेब' कहाँ से मिली? (बुआ के बास्केट मिली)
6. मुन्नी का भाई कौन है? (आशुतोष)
7. 'पाजेब' कहानी के अनुसार क्या गुम हो जाती है? (मुन्नी की 'पाजेब')
8. मुन्नी ने बाबू जी से कैसी 'पाजेब' लाने के लिए कहा? (रुकमन और शीला पहनती है)
9. मोहल्ले की राजनीति का भार किन पर होता है? (स्त्रियों पर होता है)
10. 'पाजेब' कहानी का रचना का उद्देश्य क्या है? (बालमनोविज्ञान का चित्रण करना)

<u>संदर्भ सहित व्याख्य कीजिए ।</u>

1. बुआ ने कहा, छी-छी तू कोई लड़की है? जिद तो लड़कियाँ किया करती हैं। और लड़कियाँ रोती है। कहीं बाबू साहब लोग रोते है?" P.No.38
2. "तो उसी के पास होनी चाहिए न ! या पतंगवाले के पास होगी ! जाओं बेटा उससे ले आओ। कहना, हमारे बाबूजी तुम्हें इनाम देंगे।P.No.42
3. "मैनें पुकारा,"बंसी,तू भी साथ जा। बीच से लौटने न पाए, सो मेरे आदेश पर दोनों आशुतोष को जबरदस्ती उठाकर सामने से ले गए। बुआ ने कहा, क्यों उसे सता रहे हो?" P.No.49
4. "बोली कि उस रोज भूल से यह एक पाजेब मेरे साथ चली गई थी।"P.No.50
5. "बाबूजी हम पाजेब पहनेंगे । बोलिए भला कठिनाई से चार बरस की उम्र और पाजेब पहनेगी।" 37

<u>निबंधात्मक प्रश्न</u>

1. 'पाजेब' कहानी का सार लिखकर उसकी विशेषताएँ बताइए।
2. 'पाजेब' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'पाजेब' कहानी में आशुतोष का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4. 'पाजेब' को आप बालमनोविज्ञान पर आधारित कहानी कैसे कह सकते हैं? उदाहरण के साथ स्पष्ट किजिए।

<u>Dr.Amitha, Dep, of Hindi, Badria First Grade College Mangalore</u>

4. रोज - सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय जी का जन्म ७ मार्च १९११ को उत्तरप्रदेश के देवरिया जिले के कुशीनगर में हुआ था । प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा पिता हीरानंद शास्त्री के देखरेख में घर पर ही संस्कृत , फ़ारसी , अंग्रेजी और बांग्ला भाशा व साहित्य के अध्ययन के

साथ हुई । दिल्ली के 'दिनमान', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान',नवभरत टाइम्स ,अंग्रेजी पत्र 'वाक' और 'एवरीमैंस' जैसी पत्र पत्रिकाओं का संपादन किया । दिल्ली मेंही ४ अप्रैल १९८७ को उनकी मृत्यु हुई। १९६४ में 'आँगन के द्वार' पर उन्हे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ और १९७८ में 'कितनी नावों में कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार ।

रचनाएँ:- कवितासंग्रह:- भग्नदूत १९३३, चिन्ता १९४२, इत्यलम १९४६,हरी घास पर क्षण भर १९४९, आँगन के पार द्वार १९६१, कितनी नावों में कितनी बार १९६७ आदी ।

कहानियाँ:-विपथ्गा१९३७, परंपरा१९४४, कोठरी की बात१९४५,शरणार्थी १९४८, जयदोल १९५१आदी ।

उपन्यास:- शेखर एक जीवनी १९४१, नदी के द्वीप १९५१, अपने अपने अजनबी १९६१ आदी।

निबंध एवं आलोचना:- सबरंग, त्रिशंकु १९४५, आत्मनेपद १९६० आदी ।

संस्मरण :- स्मृति लेखा । **नाटक :-** उत्तर प्रियदर्शी । **डायरी :-** भवन्ती, अन्तरा और शाश्वती ।

कथावस्तु : -प्रस्तुत कहानी "रोज" में अज्ञेयजी ने मध्यमवर्ग के भारतीय समाज के घरेलू स्त्री के यांत्रिक वैवाहिक जीवन और उसके उबाऊ जीवन का चित्रण किया है। इस कहानी का संकलन "विपथग" के पहले संस्मरण में है । यह कहानी पहले "गेंग्रीन" शीर्षक से प्रकाशित हुई ।

सारांश:- लेखक अपने दूर के रिश्ते की बहन मालती से मिलने उसके घर अठारह मील पैदल चलकर आते है । मालती और लेखक बचपन से इकटटे खेले, पढे और बढे भी हुए । इसाए वे मालती को बहन से ज्यादा सखी समझते है ।

चार साल बाद लेखक मालती से मिलने आये थे लेकिन वह उनका स्वागत अपेक्षित खुशी के साथ नही करती है । उनका कुशलक्षेम तक नहीं पूछती है । विवाह के बाद मालती के स्वभाव में बहुत से परिवर्तन आये थे । वह बहुत सुस्त और उदास दिखती है । लेखक को लगता है कि उसपर कोई भयंकर छाया घर कर गई है।उसका एक छोटा बच्चा है, जिसका नाम टी टी है, वह भी चिड्चिडा सा रहता है।

मालती के पति महेश्वर पहाडी गाँव के सरकारी डिस्पेन्सरी के डाक्टर है । वह सुबह सात बजे डिस्पेन्सरी चले जाते है और डेढ दो बजे लौटते । शाम को फ़िर रोगियो को देखने चले जाते। डिस्पेन्सरी के साथ छोटे से अस्पताल में पडे रोगियों को देखते है । अक्सर छोटे छोटे जख्म गैग्रिन (एक बीमारी) हो जाते हैजिसका आपरेशन करना पड्ता है । उनका जीवन भी एक निर्दिष्ट ढर्रे पर चलती थी। वही नुस्खे,वही दवाई, वही हिदायदे । इसाए वह भी सुस्त दिखते है।

खाना खाने के बाद महेश्वर तीन बजे वापस अस्पताल जाते है, और लेखक थके थे इसाए सो जाते है । मालती पती के जाने के बाद खाना खाती है । वहाँ पानी ठीक से नही आता था । जब पानी आता है तभी बर्तन माँजना था । इसी कारण मालती को रात के ग्यारह बजे तक काम करना पड्ता था ।

छह बजे के आसपास महेश्वर वापस घर आते है, तभी लेखक भी उठते है । दोनों गैंग्रिन के बारे मे बातचीत करते है। सात बजे पानी आती है और मालती बरतन धोकर आती है। महेश्वर उससे आम धोने केिए कहा । आम पुराने अखबार सेिपटे हुए थे । और मालती छाटे से अखबार के टुकडे के दोनों ओर से पढ्ती है और फ़िर आम धोती है । उसे देखकर लेखक को बचपन की यादें आती है । बचपन मे मालती पढ्ने में कमजोर थी । और इसाए उसके पिता ने एक पुस्तक लाकर रोज दस पन्ने पढ्ने को कहा था। लेकिन मालती रोज दस पन्ने फ़ाडकर फ़ेंक दिया । जब पिता को इस बात का पता चला तो उन्होंने उसे खूब पीटा था । लेखक सोचते है वह उद्धत और चंचल मालती आज कितनी शांत हो गई है ।और एक अकबार के टुकडे के लिए तरसती है।

खाने के बाद लेखक और महेश्वर चाँदनी की आनंद लेने पलंग को बाहर रखते है और सोने की तैयारी करते है तभी टीटी पलंग से नीचे गिरता है और जोर से रोने लगता है । मालती उसे उठाती है । बच्चे के गिरने पर भी कोई प्रतिक्रिया नही देती है । उसे देखकर लेखक को आश्चर्य होता है । वो सोचते है कि मालती एक युवती है, एकमात्र बच्चे के गिरने पर भी उसे कोई चिंता नही है। क्या मालती का मशीनतुल्य जीवन केवल समय गिनने में ही बीतता है ?

लेखक को लगता है कि उस घर पर जो छाया घिरी हुई थी वह उन्हे भी वश कर रहा हो, जिससे लेखक भी वैसे ही नीरस निर्जीव से होने लगे हो ,जैसे मालती, जैसे वो घर ।

I. एक अंक के प्रश्नोत्तर ।

१. "रोज" कहानी के लेखक का नाम क्या है? उ: सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय ।

२. "रोज"कहानी में अतिथि बनकर कौन आता है? - (सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेयजी) ।

३. मालती के पति का नाम क्या है? उ: महेश्वर ।

४. लेखक कितने वर्षों के बाद मालती से मिलने आए थे?उ: चार साल ।

५. मालती के पति किस बीमारी का आपरेशन करके आए थे? उ: गैंग्रिन ।

६. मालती के बच्चे का नाम क्या है? उ: टी टी ।

७. गैंग्रीन क्या है? उ: एक बीमारी ।

८. लेखक की कौन सी कहानी "गैंग्रीन" शीर्षक से प्रसिद्ध है? उ: "रोज " कहानी ।

९. महेश्वर कौन सा फ़ल लेकर आए थे? उ: आम ।

१०.अज्ञेय जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर प्राप्त हुआ ?-कितनी नावों में कितनी बार ।

II. संदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए ।

१. "अभी आए नहीं, दफ्तर में है , थोडी देर में आ जाएँगें । कोई डेढ दो बजे आया करते है "।

२. "नाम तो कोई निश्चित नही किया , वैसे टी टी कहते है "।

३. "जान पडता है, तुम्हे मेरे आने से विशेष प्रसन्नता नहीं हुईहै " ।

४. “आज पानी ही नही है, बरतन कैसे मँजेगें ?”

५.“एक काँटा चुभा था, उसी से हो गया , बडे लापरवाह लोग होते है यहाँ के ”।

III. निबँधात्मक प्रश्न ।

1. अज्ञेयजी की “रोज ” कहनी का सारांशाखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
2. “रोज ” कहानी का सारांशाखकर उसका उद्देश्य अपने शब्दों मेंखिए ।
3. “रोज ” कहानी में मालती के वैवाहिक जीवन का चित्रण कीजिए ।
4. मालती के घर के वातावरण को अपने शब्दों मेंखिए ।
5. “रोज ” कहानी में व्यक्त स्त्री सामाजिक स्थिति का वर्णन कीजिए ।

सुकन्या एस शेट्टी - श्री धवला कालेज मूडबिद्री

5.दोपहर का भोजन - अमरकांत

सारांश : अमरकांत द्वारा रचित “दोपहर का भोजन” कहानी गरीबी से जूझ रहे एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की कहानी है । इस कहानी में समाज में व्याप्त गरीबी को चित्रित किया गया है । जिसके मुखिया की अचानक नौकरी छूट जाने के कारण परिवार के सामने आर्थिक संकट खडा हो जाता है । कहानी की नायिका सिद्धेश्वरी संकट की इस घडी में परिवार के सभी सदस्यों को चिंता मुक्त करने का अथक प्रयास करती है ।

सि् द्धेश्वरी तथा मुंशी जी के परिवार में उनके अलावा तीन पुत्र हैं । इक्कीस वर्षीय बडा बेटा रामचन्द्र, अट्ठारह वर्षीय मंझला बेटा मोहन तथा छः वर्षीय छोटा बेटा प्रमोद । रामचन्द्र एक स्थानीय दैनिक समाचार पत्र के दफ्तर में प्रूफरीडिंग का काम सीखता है तथा नौकरी की तलाश में है । मोहन हाईस्कूल के परीक्षा की तैयारी कर रहा है ।

सिद्धेश्वरी पाठ का जीवंत पात्र है । परिवार की स्थिति अत्यंत दयनीय होने पर भी वह परिवार को जोडने का प्रयास करती है । परिवार को जोडे रखने के लिए वह झूठ का सहारा भी लेती है । वह परिवार के सदस्यों के सामने एक-दूसरे की कमी ना बताकर उनकी बातों को छुपाती है, ताकि किसी भी सदस्य को मानसिक कष्ट ना हो । यह सभी बातें उसके अपार धैर्य को दर्शाती है । सिद्धेश्वरी ने झूठ बोलकर कोई पाप नहीं किया बल्कि परिवार के सदस्यों को एक दूसरे से जोडे रखा है ।

घर के सभी सदस्य रामचन्द्र, मोहन तथा मुंशी बारी-बारी भोजन के लिए आते हैं । वे कुछ बहाना करके आधे पेट ही भोजन करके उठ जाते हैं । सभी मन ही मन इस वास्तविकता से परिचित है कि घर में पर्याप्त भोजन नहीं हैं । रामचन्द्र के भोजन के दौरान सिद्धेश्वरी के मंझले बेटे मोहन की पढाई की झूठी तारीफ करती है । वह मोहन से झूठ-मूठ कहती है कि रामचंद्र उसकी प्रशंसा करता है । मुंशी जी से भी वह झूठ बोलती है कि रामचन्द्र उन्हें देवता के समान कहता है । मकान किराया नियंत्रण विभाग के क्लर्क के पद पर उनकी छंटनी हो चुकी

है और आज कल मुंशी जी काम की तलाश में है । मुंशी जी भोजन करते समय सिद्धेश्वरी से नज़रे चुराती है, उन्हें मालूम है कि घर में भोजन बहुत कम है और वह स्वयं को इस स्थिति का जिम्मेदार मानते हैं ।

अपने दुखों को कम करने के लिए दोनों (सिद्धेश्वरी और मुंशी जी) अन्य की संबंध बाते करते हैं।जैसे बारिश का ना होना, मक्खियों का होना, फूफा की बीमारी तथा गंगा शरण बाबू की लडकी की शादी इन बातों को करके शायद वे मूल विषय गरीबी एवं अभाव से बचना चाहते थे ।

सिद्धेश्वरी पर्याप्त भोजन ना होते हुए भी सदस्यों से और भोजन लेने का आग्रह करती है, ऐसा करके वह घर के सदस्यों को गरीबी एवं अभाव का एहसाह नहीं होने देना चाहती । सबको भोजन करवाने के पश्चात सिद्धेश्वरी जब स्वयं भोजन करने बैठती है तो उसके हिस्से थोडी सी दाल ज़रा सी चने की तरकारी तथा एक रोटी बचती है । तब उसे अचानक अपने सबसे छोटे पुत्र प्रमोद का ध्यान आता है, जिसने अभी तक भोजन नहीं किया था । वह आधी रोटी तोड कर प्रमोद के लिए रख देती है तथा शेष आधी लेकर भोजन करके बैठ जाती है । पहला ग्रास (टुकडा) मुह में रखते ही उसकी आखों से आसू गिरने लगे जो उसकी विवशता को बयान करते हैं ।

इस प्रकार "दोपहर का भोजन" एक गरीबी परिवार की विवशता को बयान करती कहानी है जिसमें परिवार के सभी लोग अभावग्रस्त तथा संघर्ष पूर्ण वातावरण में खुश रहने का प्रयास करते हैं ।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. "दोपहर का भोजन" कहानी के कहानिकार कौन हैं ? - अमरकान्त
२. सिद्धेश्वरी के बडे बेटे का नाम क्या है ? - रामचन्द्र
३. सिद्धेश्वरी के कितने बेटे हैं ? - तीन
४. रामचन्द्र क्या काम करते हैं ? - एक दैनिक समाचार पत्र में प्रूफ रीडिंग का काम
५. मोहन कौन है ? - सिद्धेश्वरी का मंझला बेटा

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

१. "आज तो सचमुच नहीं रोया । वह बडा ही होशियार हो गया है ।"
२. "बडका (बडा लडका) तुम्हारी बडी तारीफ कर रहा था । कह रहा था मोहन बड दिमागी होगा । उसकी तबीयत चौबीसों घंटे पढने में रहती हैं ।"
३. तो थोडे गुड का ठंडा रस बनओ, पीऊगा । तुम्हारी कसम भी रह जाएगी, जायका भी बदल जाएगा ।"
४. बडका की कसम एक रोटी देती हू । अभी बहुत-सी हैं ।
५. अधिक खिलाकर बीमार कर डालने की तबीयत है क्या ?

निबंधात्मक प्रश्न

१. 'दोपहर का भोजन' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
२. सिद्धेश्वरी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

<u>प्रस्तुती - गीताक्षी के. आर डा. दयानंद पै .पि.स.गवर्नमेंट कालेज, कारस्ट्रीट, मंगलूर ।</u>

6.पिता - ज्ञानेश्वर

कहानी का पात्र : पिता : मुख्य पात्र जो पुरानी पीढी का प्रतिनिधित्व करते हैं । स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर पात्र । **पुत्र** : आधुनिक पईढी का प्रतिनिधित्व करता है । **देवा** : बेटे के पत्नी का नाम । **कप्तान भाई** : दूसरा बेटा ।

पिता कहानी ज्ञानरंजन की महत्वपूर्ण कहानियों में से एक है । पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप को यह कहानी दर्शाती है । परानी और नई पीढियों के सोच में आए बदलाओं का चित्रण करती है । पिता अपने पुत्र के पीढी से तारत्म्यता नहीं बैठा पा रहे । वही पुत्र अपने पिता के पीढियों को नहीं समझ पाता है ।

'पिता' कहानी में पिता-पुत्र संबंधों के यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं । पुत्र उमस भरी गर्म रात में घर लौटा, उसने आध पल को बिस्तर का अंदाजा लेने के लिए बिजली जलाई । बिस्तर फर्श पर ही पडे थे । पत्नी ने सिर्फ इतना ही कहा "आ गये" और बच्चे की तरफ करवट लेकर चुप हो गयी ।

वातावरण बहुत गर्म है । गर्मी के वजह से कपडे पसीने में पूरी तरह से भीग चुके हैं । घर में सभी लोग सो चुके है घर के भीतर सिर्फ वहीं जागा है । रोती बिल्ली को देख पिता सचेत हो गये और उन्होंने डंडे की आवाज़ से बिल्ली को भगा दिया । जब वह घूमकर लौट रहा था तब उसने कनखी (तिरछि नज़र से देखना) से पिता को गंजी से अपनी पीठ खुजाते देखा था । लेकिन वह पिता से बचकर घर में घुस गया । पहले उसे लगा कि पिता को गर्मी की वजह से शायद नींद नहीं आ रही लेकिन फिर एकाएक उसका मन रोष से भर गया क्योंकि घर सभी लोग पिता से पंख के नीचे सोने के लिए कहा करते हैं लेकिन पिता हैं कि सुनते ही नहीं ।

कुछ देर वह अपने बिस्तर पर ही पडा रहा फिर कुछ देर बाद उत्सुकतावश उठा जौर उसने खिडकी से बाहर देखा । पिता बैचैन थे सडक की बत्ती बिल्कुल उनकी छाती पर पड रही थी वे बार बार करवट बदल रहे थे । फिर कुछ देर बाद उठकर पंखा झलने लगे । इसके बाद पिता उठकर चौकिदारों की तरह घर के चारों ओर घूमने लगते हैं । पुत्र को यह सब अपनी प्रतिष्ठा के खिलाफ लगता है । उसे लगता है कि इससे पिता मोहल्ले में हमारे इज्जत को ठेस पहुचा रहे हैं । वह कमरे की दीवर से पीठ टिकाकर तनाव में सोचने लगता है । बिजली का मीटर तेज चल रहा है सब लोग आराम से पंखे के नीचे सो रहे हैं लेकिन पिता की रात कष्ट में ही बीत रही है । पिता जीवन की अनिवार्य सुविधाओं से भी चिढते हैं क्यों ? पिता चौक से आने के लिए रिक्शेवाले से चार आने मागने पर तीन आने और तीन आने मागने पर दो आने लेने के लिए काफी चिरौरी करते है । घर में वाश बेसिन है ज्पर वे बाहर जाकर बगियावाले नल पर ही कुल्ला-दातुन करते हैं । गुसलखाने में खूबसूरत शावर होने के बावजूद पिता को आगन में धोती

को लंगोट की तरह लपेटकर तेल चुपडे बदन पर बाल्टी भर भर पानी डालना ही भाता है । इसलिए वह पिता पर ही क्रोध में चिल्लने लगता है । लडकों द्वारा बाजार से लाई गयी बिस्किटें, महगे फल पिता कुछ भी नहीं लेते । कभी लेते भी हैं तो बहुत नाक-भौं सिकोडकर बाहर पिता ने लडते चिचियाते कुत्तों को भगाया । वह पिता के व्यवहार से फिर दुखी हो गया । उसने कितनी बार पिता से कहा कि क्मुहल्ले में हम लोगों का सम्मान है आप भीतर सोचा कीजिए । अच्छे कपडे पहना कीजिए और बाहर पहरा मत दिया कीजिए ये सब बहुत बुरा लगता है, पर पिता इन सब बातों पर कोई ध्यान नहीं देते । कितना भी बढिया कपडा लाकर दो और कहों कि इसे किसी अच्छे दर्जी से सिलवा लो तो भी वे मोहल्ले के ही किसी भी सामान्य से दर्जी से कमीज़ कुरता सिलवा लेते हैं । घर के लोग पिता के इस व्यवहार को देखकर हर बार प्रण लेते हैं कि अब पिता को उनके हाल पर छोड देंगे, लेकिन कुछ समय बाद फिर से पिता के लिए सबका मन उमडने लगता है ।

वह इन सब बातों को भुलाना चाहता था उसने सोने की इच्छा की पर खुद को असहाय पाया । फिर उसने अपनी पत्नी देवा के बारे में सोचने की, उसके शरीर को स्पर्श करने की इच्छा मन में की ताकि उसका ध्यान पिता से हट सके पर देवा के कुल्हे को स्पर्श कर भी वह अपने भीतर उत्तेजना पैदा नहीं कर सका । वह पिता के लिए द्वंद्व की स्थिति से भर जाता है । उसे पिता बडे हठी और अहंकारी लगते हैं लेकिन दूसरे ही ज्क्षण उसे लगता है कि पिता लगातार विजयी है । कठोर है तो क्या, उन्होंने पुत्रों के सामने अपने को कभी झुका नहीं ।

एक बार उसके मन में आया कि वह पिता को आग्रहपूर्वक भीतर आकर पंखे नीचे सोने के लिए कहे लेकिन वह ऐसा न कर सका । पूरी रात जागने के बाद सुबह पिता को देखा । पिता सो नहीं गये हैं अथवा कुछ सोकर पुन: जगे हुए है, पता नहीं । अभी ही कुन्होंने हे राम कहकर जम्हाई ली है । पिता उठे उन्होंने अपना बिस्तर गोल करके एक सिराहने पर रखा और पंखा झलने लगे । सबेरा होने में अभी देर थी । वह खिडकी से हटकर बिस्तर पर आया । अंदर हवा वैसी ही लू की तरह गर्म है । दूसरे कमरे स्तब्ध हैं पता नहीं बाहर भी उमस और बेचैनी होगी । वह जागते हुए सोचने लगा, अब पिता निश्चिंत रूप से सो गये हैं, शायद ।

एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

१. 'पिता' कहानी के लेखक का नाम लिखिए । - ज्ञानरंजन
२. सवारी गाडी कहा से गुज़र रही थी? - घनश्यामनगर के मकानों के लम्बे सिलसिलों से
३. पिता ने किसे डांटकर चुप कराया ? - बिल्ली को
४. पिता को किस बात से चिड थी ? - जीवन के अनिवार्य सुविधाओं से
५. पिता का स्वभाव कैसा था ? - ज़िद्धी
६. पिताजी चौक से आते वक्त घंटों किसके लिए रुकते थे ?-दो आने में चलनेवाले रिक्शे के लिए ।

७. पिताजी रोज़ कुल्ला-दातुन कहा करते थे ? बगिया वाले नल पर ।

८. लेखक का कप्तान भाई हर महीने किसके लिए रुपये भेजा करते थे?-बहन के युनिवर्सिटी के खर्चे

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

१. "बडी भयंकर गर्मी है, एक पत्ता भी नहीं डोलता" ।

२. पहले लोग उनकी काफी चिरोरी करते थे, अब लोग हार गए है । जानने लगे है कि पिता के आगे किसी की चलेगी नहीं ।"

३. "आप अंदर आराम से क्यों नहीं नहाते ।"

४. खिलाडी तबीयत के हैं । यान की तरह चुटकी में धरती छोडे देते हैं । कितने मस्त हैं कप्तान भाई !

५. उसको लगा, पिता लगातार विजयी हैं । कठोर है तो क्या, उन्होंने पुत्रों के सामने अपने को कभी पसारा नहीं ।

निबंधात्मक प्रश्न :

१. "पिता" कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

२. पुरानी और नयी पीढी की सोच को दर्शाती "पिता" कहानी की वस्तु लिखिए ।

<u>प्रस्तुती - गीताक्षी के. आर डा. दयानंद पै .पि.स.गवर्नमेंट कालेज, कारस्ट्रीट, मंगलूर ।</u>

7.सिलिया

लेखक परिचय : सुशीला टाकभौरे का जन्म ४ मार्च १९५४ में बानापुर जिला होरंगाबाद में हुआ था। उन्होंने हिन्दी साहित्य में एम.ए तथा बी.एड और पी.एच. डी किया हैं। सुशीला टाकभौरे जी दलित स्त्री रचनाकारों में अग्रणी हैं। 'स्वाति बूँद और खारे मोती', 'यह तुम भी जानो' 'हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी परिवर्तन जरूरी है आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। शिकंजे का दर्द उनकी आत्मकथा है ।

सिलिया का असली नाम शैलजा है परंतु उसके माता-पिता उसे सिलिया तथा सिल्लो रानी नाम से पुकारते थे। सिलिया एक अछूत कन्या थी और मैट्रिक की पढाई कर चुकी थी। सिर्फ पढाई में ही नहीं वह खेल-कूद में भी होशियार थी। अपने स्कूल के खो-खो टीम की कप्तान थी। सिलिया का जन्म अछूत कुल में हुआ था। समाज में अछूतों की दशा के बारे में वह अच्छी तरह से जानती थी। भले ही उम्र में वह छोटी थी परंतु समाज की सभी गतिविधियों से वह परिचित थी। एक बार 'नई दुनिया' नामक अखबार में विज्ञापन छपा था कि भोपाल के एक नामी युवा नेता पढी-लिखी दलित कन्या से विवाह करना चाहता है। गाँववाले, रिश्तेदार सिलिया के माता-पिता से सिलिया का रिश्ता उस नेता से करने की सलाह देते हैं। लेकिन सिलिया के माता-पिता अपनी बेटी की शादी अभी नहीं करना चाहते हैं। उसके माता-पिता चाहते हैं कि वह ऊँची शिक्षा

प्राप्त करे और समाज में अपने बल-बूते अपना नाम कमाएँ। सिलिया की भी इच्छा यही थी कि वह अधिक से अधिक पढाई करें।

सिलिया अपने स्कूल के दिनों में अपने जाति के कारण कई लोगों से अपमानित हो चुकी थी। वह पढ- लिखकर अपने समाज की दयनीय हालत को सुधारना चाहती थी। वह अपने दलित समाज का उद्धार करना चाहती थी। वह स्वयं सर उठाकर जीना चाहती थी। सिलिया ने अथक प्रयास से उच्च शिक्षा प्राप्त किया। वह शिक्षा के बल से 'दलित मुक्ति आन्दोलन' की एक कार्यकर्ता बन गई। करीब बीस वर्षों तक सिलिया ने दलितों के उद्धार के लिए दिन-रात काम किया। वह प्रसिद्ध लेखिका थी, भाषणकार थी, क्रियाशील कार्यकर्ता थी। वह अथक परिश्रम से राष्ट्रीय दलित नेता बन गई। मंत्री महोदय ने सिलिया का सम्मान किया। दलित महिला सिलिया के मुख पर विजय का आनंद दिखाई देने लगा।

निष्कर्ष :

'सिलिया' सुशीला टाकभौर की महत्वपूर्ण कहानी है। यह कहानी एक तरफ दलित चेतना के विभिन्न चिंतन आयामों पर प्रकाश डालती है तो दूसरी तरफ नारी-विमर्श के विभिन्न आख्यानों से उसे जोडती है। इस कहानी में लेखिका ने शिक्षा के माध्यम से शोषण से मुक्त होने का संदेश दिया है।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए ।

१. 'सिलिया' कहानी को किस ने लिखा है? - उत्तर: सुशिला टाकभौरे
२. कौन शूद्रवर्ण की वधू से शादी करना चाहते हैं ? - उत्तर: भोपाल के जाने माने युवा नेता
३. हेमलता कौन थी? - उत्तर: सिलिया की सहेली
४. सिलिया ने मन ही मन क्या संकल्प लिया था ?
   उत्तर: उसने पढ-लिखकर परंपराओं के मूल कारण का पता लगाने का संकल्प लिया।
५. मलती कौन है?- उत्तर: सिलिया की मामी की बेटी

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

१. "सिलिया की माँ, तुम्हारी सिलिया तो मैट्रिक पढ रही है, वह शोशियार है, समझदार भी है। तुम उसका फोटो, परिचय, नाम-पता लिखकर भेज दो।"
२. "बाई माफ कर दो, इतनी बडी हो गई है मगर अकल नहीं आई इसको कितना तो मारूँ हूँ फिर भी नहीं समझे..."
३. "हेमलता, तुम इसे भी अपनी बहन के घर ले जाओं। शाम को सभी एक साथ गाँव लौटेगे, तब तक वहाँ आराम कर लेगी ।"
४. "कौन है...किसकी बेटी है...कौन ठाकुर है..."
५. "कोई बात नहीं बेटी, हमारा भैया तुम्हें साइकिल पे बिठाके वहाँ छोड आएगा"

निबंधात्मक प्रश्न

१. 'सिलिया' कहानी के माध्यम से लेखिका ने निम्न वर्ग को कैसे सचेत किया है?

२. सिलिया कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

३. सिलिया का चरित्र भारतीय नारियों में आत्मविश्वास जागृत करती है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

प्रस्तुति : ज्योति ज्ञानेश्वरी, विश्व विद्यलय कालेज, मंगलूरु

8.काठलूम अपने-अपने

लेखक परिचय: समकालीन कहानीकार मुक्ता जी का जन्म ८ जून १९५४ में उत्तर प्रदेश के मथुरा में हुआ है। उनके द्वारा रचित कई कहानी संग्रह, कविता संग्रह और जीवनी प्रकाशित हुई हैं। उनकी कहानियाँ बंगाली, उडिया पंजाबी, मराठी औए उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं में अनुदित हुई हैं। मुक्ता जी ने वृत्तचित्रों का भी निर्माण किया हैं। उनके द्वारा रचित 'आधाकोश' कहानी संग्रह को अम्बेडकर विशिष्ट सेवा सम्मान पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

'काठलूम अपने-अपने' कहानी मुक्ता के चुनी हुई कहानी संग्रह में संग्रहित है। भारत जैसे बहु आयामी देश में भूमंडलीकरण का गहरा प्रभाव पडा हैं। भूमंडलीकरण से जितना लाभ हुआ हैं उतनी ही हानी भी हुई है। भूमंडलीकरण ने कभी हमारे संस्कृति पर प्रहार किया है तो कभी हमारे गृह उद्योगं पर। बुनाई एक ऎसा गृह उद्योग हैं जिसमें लाखों लोगों को रोजगार मिलता था। अब बुनाई अपनी अंतिम सांस गिन रहा हैं। भूमंडलीकरन से बुनकरों की दशा दयानिय बन गयी है। मुक्ता ने इस सच्चाई को 'काठलूम अपने-अपने' कहानी में व्यक्त किया है।

'काठलूम अपने-अपने' बुनकरों के जीवन पर आधारित कहानी हैं। इस कहानी का मुख्य चरित्र सैयद, जावेद और सुलेमान उस्ताद हैं। कहानी का नायक सैयदअली और जावेदअली दोनों भाई हैं और वे कालीन बुनकर उसे बेचते हैं। यह कला उन्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई थी। इनका परिवार गरीब हैं। ईद का समय था और घर में एक भी दाना नहीं था। वे दोनों अपने पिता द्वारा बुनी हुई किमती कालीन को मजबूरन बेचने जाते हैं। लाख कोशिशों के बाद एक औरत कालीन देखने को तैयार होती है। वह औरत कालीन को खरीदना नहीं चाहती है, लेकिन गिरवी ले कर उन्हें तीन हजार रुपये देती है। उन पैसों से उनके घर में ईद का त्योहार मनाया जाता है।

भदोही के प्रसिद्ध बुनकर सुलेमान उस्ताद ने सैयद और जावेद को कालीन बुनने की कला सिखाया था। काम की तंगी के कारण सुलेमान उस्ताद की आर्थिक दशा बहुत बूरी थी। उनके घर में तीन जवान बेटियाँ थी। घर की दशा से चिंतित उनकी बेटी रजिया नौकरी करके घर संभालने की बात करती है तो सुलेमान उस्ताद इनकार करते हैं। भुखमरी से जब सुलेमान उस्ताद की

मौत होती है तो पुरे शहर में मायूसी छा जाती हैं। आगे के कर्म का सारा इन्तजाम सैयद और जावेद करते हैं। सुलेमान उस्ताद के जनाजा उठाने से पहले मंत्री जी प्रेस को यह बयान देते हैं-" सुलेमान उस्ताद की मौत भूखमरी से नहीं बल्कि बीमारी और कुपोषण से हुई है। सरकार ने बुनकरों के हित के लिए बहुत-सी योजानाएँ लागू की हैं इसलिए भूखमरी का सवाल ही नहीं हैं।"

बुनाई से ही रोजी रोटी कमानेवाले दोनों भाईयों की दशा दिन-प्रतिदिन दयनीय बन जाती हैं। अपनी जिन्दगी से तंग आकर सैयद अली बुनकर से मजदूर बन जाता है। वह मजदूरी करने के लिए चेन्नई चला जाता है। जावेद अली रिक्षा चलाता है। जावेद गिरवी रखी हुई कालीन को छुडाने कि लिए रात-दिन रिक्षा चलाता है। कलीन को गिरवी रखे हुए मोहल्ले के चक्कर लगाते समय जावेद को ऎसा महसूस होता है कि उसने अपने अब्बा को ही गिरवी रखा है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने विश्व प्रसिद्ध भदोही के बुनकरों की दशा का वर्णन किया है। भूमंडलीकर से भारतीय गृह उद्योग हासिये पर हैं। गृह उद्योग से अपनी रोजी रोटी कमानेवाले कई लोग आज मजबूरन मजदूर बन रहे हैं। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने सरल भाषा के माध्यम से इस सच्चाई को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है। वे पाठकों की दृष्टि उन कलाकारों की ओर डालना चाहती हैं जिनको सामान्य रूप से नजर-अंदाज कर दिया जाता हैं। हम भारतीय गृह उद्यों को संचार माध्यम से जोडकर गृह उद्यों की समस्या में थोडा-बहुत सुधार ला सकते हैं।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए।

१. 'काठलूम अपने-अपने' कहानी के कहानीकार का नाम लिखिए। उत्तर: मुक्ता
२. 'काठलूम अपने-अपने' कहानी में लेखिका ने किस की समस्याओं का चित्रण किया है? उत्तर: बुनकरों की समस्याओं का चित्रण किया हैं।
३. एक औरत कलीन को गिरवी रखकर कितना पैसा देती है? उत्तर: तीन हजार रुपये
४. जवेद और सैयद को किस ने बुनकरी सिखाया था? उत्तर : सुलेमान उस्ताद ने
५. सुलेमान उस्ताद की मौत का कारण क्या है? उत्तर: भुखमरी

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

१. "मजबूरी है, इसीलिए बेच रहे हैं। वरना बुजर्गों की निशानी नमूने का कालीन है। आप समझकर पैसे दे दीजिएगा..."।
२. "घर में राशन खत्म हो चुका है। अब तो फाके की नौबत आ गई है..." आखिरी लफ्ज बोलते ही भाभी जान की आँखे बरसने लगीं।
३. "या अल्लाह। यह क्या हो रहा है, किसकी नजर लग गई। याद है न सैयद अली, क्या रौनक थी। रामपुर के नवाब तक हमारे हुन के कायल थे।

४. “अब्बा हम भूखे हैं, और भूख से बढ़कर कोई जलालत नहीं। आप हमें कत्ल कर दें... अब घर के ये हालात हमसे देखे नहीं जाते।”

५. “हमारे मुँह में जब तक ताले पडे रहेंगे तो यही होगा जावेद। क्या हमने कभी साहूकारों के खिलाफ मुहँ खोला? हमेशा डरते रहे। द्लालों की मंडी बन गया बुनकारी का धंधा-छोटे-बडे कई दलाल, जिनकी पहुँच गैर-मुल्कों तक है ।”

निबंधात्मक प्रश्न

१ ‘काठलूम अपने-अपने’ कहानी का सारांश लिखिए।

२. ‘काठलूम अपने-अपने’ कहानी बुनकरों की दुःख-दर्द भरी दास्तान हैं। स्पष्ट कीजिए।

३ पठित कहानी के आधार पर सैयद अली और जावेद अली का चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

<u>प्रस्तुति : ज्योति ज्ञानेश्वरी, विश्व विद्यलय कालेज, मंगलूरु</u>

I SEM B.COM

SL. NO.	CHAPTER	LECTURER NAME
1.	बातचीत और कुटज	डॉ. कविता
2.	भय और गौरा	डॉ. सुजना
3.	बाज़ार दर्शन और मौत की घाटी में	जयकाला
4.	मातृभूमि और त्रसदी एक कामना की	डॉ. नागेश

1.बातचीत -बालकृष्ण भट्ट

लेखक परिचय : बालकृष्ण भट्ट- का जन्म 3 जून, 1844 इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था तथा मृत्यु 20 जुलाई, 1914 को हुई । वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के शीर्ष निर्माताओं में से एक थे। आज की गद्य प्रधान कविता का जनक इन्हें माना जाता है। बालकृष्ण भट्ट एक सफल नाटककार, पत्रकार, उपन्यासकार और निबन्धकार थे। भट्ट जी ने निबन्ध, उपन्यास और नाटकों की रचना करके हिन्दी को एक समर्थ शैली प्रदान की। ये पहले ऐसे निबन्धकार थे, जिन्होंने आत्मपरक शैली का प्रयोग किया था।

रचनाएँ : **उपन्यास** - रहस्य कथा, नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान, गुप्त वैरी, रसातल यात्रा, उचित दक्षिणा, हमारी घड़ी, सद्भाव का अभाव।

नाटक - पद्मावती, किरातार्जुनीय, वेणी संहार, शिशुपाल वध, नल दमयंती या दमयंती स्वयंवर, शिक्षादान, चंद्रसेन, सीता वनवास, पतित पंचम, मेघनाद वध, कट्टर सूम की एक नकल, वृहन्नला, इंगलैंडेश्वरी और भारत जननी, भारतवर्ष और कलि, दो दूरदेशी, एक रोगी और एक वैद्य, रेल का विकट खेल, बालविवाह आदि ।

प्रहसन - जैसा काम वैसा परिणाम, नई रोशनी का विष, आचार विडंबन आदि।

निबंध - 1000 के आस-पास निबंध जिनमें सौ से ऊपर बहुत महत्त्वपूर्ण ।'भट्ट निबंधमाला' नाम से दो खंडों में एक संग्रह प्रकाशित।

सारांश : बालकृष्ण भट्ट आधुनिक हिन्दी गद्य के आदि निर्माताओं और उन्नायक रचनाकारों में एक हैं। बालकृष्ण भट्ट 'बातचीत' निबंध के माध्यम से मनुष्य को ईश्वर द्वारा दी गई अनमोल वस्तु वाक्शक्ति का सही इस्तेमाल करने को बताते हैं।

लेखक का कहना है कि अनेक प्रकार की शक्तियाँ जो वरदान की भाँति ईश्वर ने मनुष्यों को दी हैं, उनमें वाक्शक्ति भी एक है । यदि हममें वाक्शक्ति न होती तो मनुष्य गूंगा होता, वह मूकबधिर होता। मनुष्य को सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण देन उसकी वाक्शक्ति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह समाज में वार्तालाप करता है। वह अपनी बातों को अभिव्यक्त करता है और उसकी यही अभिव्यक्ति वाकशक्ति भाषा कहलाती है। व्यक्ति समाज में रहता है। इसलिए अन्य व्यक्ति के साथ पारस्परिक सम्बन्ध और कुछ जरूरतें होती हैं जिसके कारण वह वार्तालाप करता है। यह ईश्वर द्वारा दी हुई मनुष्य की अनमोल कृति है। इसी वाक्शक्ति के कारण वह मनुष्य है। यदि हममें इस वाक्शक्ति का अभाव होता तो मनुष्य जानवरों की भाँति ही होता। वह अपनी क्रियाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाता। जो हम सुख-दुख इंद्रियों के कारण अनुभव करते हैं वह मूक रहने के कारण नहीं कह पाते।

वे बताते हैं कि यदि वाक्शक्ति मनुष्य में न होती तो हम नहीं जानते कि इस गूंगी सृष्टि का क्या हाल होता। सब लोग मानों लुज-पुंज अवस्था में कोने में बैठा दिए गए होते। लेखक बातचीत के विभिन्न तरीके भी बताते हैं। घरेलू बातचीत मन रमाने का ढंग है। वे कहते हैं कि

बातचीत में वक्ता को स्पीच की तरह नाज-नखरा जाहिर करने का मौका नहीं दिया जाता। स्पीच में वक्तृता (भाषण) और बातचीत दोनों है। भाषण में मानव पहले संभल-संभल कर बोलता है और फिर कोई चुटीली बात करता है ताकि ताल-ध्वनि से कमरा गूँज उठे। हमें अपने भाषण में ऐसा मौका लाना पड़ता है जिससे ताली बजे। बातचीत में ताली बजाने का कोई मौका नहीं होता है और न लोगों के कहकहे उड़ाने की कोई बात ही रहती है। बातचीत में कभी कोई चुटीली बात आ जाने पर थोड़ी हँसी आ जाती है। मुसकराहट से होठों का फड़क उठना हँसी की अंतिम सीमा होती है। स्पीच का उद्देश्य सुनने वाले के मन में जोश और उत्साह पैदा करना होता है। बातचीत मन बहलाने का तरीका है।

लेखक बताते हैं कि जहाँ आदमी की अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने, फिरने आदि की जरूरत महसूस करता है, वहाँ बातचीत की भी जीवन में अत्यन्त आवश्यकता होती है। जो कुछ मवाद या धुआँ मन में जमा रहता है वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल पड़ता है। इससे चित्त हल्का और स्वच्छ हो जाता है तथा मनुष्य परम आनंद में मग्न हो जाता है। बातचीत का भी एक खास तरह का मजा होता है।

बातचीत के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से अनेक विचार रखे हैं। इनमें बेन जॉनसन और एडिसन के विचारों को लेखक ने यहाँ उद्धृत किया है। वे बतलाते हैं कि जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष नहीं प्रकट होता। बेन जॉनसन के अनुसार बोलने से ही मनुष्य के असली रूप का साक्षात्कार होता है। दूसरे विद्वान एडिसन के अनुसार असल बातचीत केवल दो व्यक्तियों में हो सकती है। कहने का तात्पर्य है कि जब दो आदमी होते तभी अपने दिल की बात एक-दूसरे के सामने खोलते हैं। तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति मात्र से ही बातचीत की धारा बदल जाती है। जब चार आदमी हुए तो 'बेतकल्लुफी' का स्थान 'फार्मेलिटी' ले लेती है। अर्थात् गौरव और संजीदगी वाली बात होती है। वे कहते हैं कि चार से अधिक की बातचीत तो केवल राम-रमौवल कहलाएगी।अर्थात हँसी-मजाक होता है।

हम अक्सर देखते है कि दो बुड्ढों की बातचीत में जमाने की शिकायत होती है। वे बाबा आदम के समय के दास्तान शुरू करते हैं जिसमें चार सच तो दस झूठ होता है। एक बार जब उनके बातचीत का घोड़ा छूट जाने पर पहरों बीत जाते पर भी बातचीत का अंत नहीं होता है।

लेखक कहते हैं कि दो सहेलियों के बीच बातचीत का जायका निराला होता है। भाग्य से ही दो सहेलियों के बीच का बातचीत सुनने को मिलता है। इनकी बातचीत रसभरी होती है। दो बुढ़ियाओं की बातचीत अपनी बहुओं या बेटों के संबंध में गिला शिकवा वाली होती है या बिरादरी की ऐसी बात छेड़ देती है जिससे अंत में झगड़ा होने लगता है। स्कूल के लड़कों के बातचीत में अपने उस्ताद की शिकायत या तारीफ या अपने सहपाठियों में किसी के गुण-अवगुण की बात होती

है। इसके अलावा लेखक ने बातचीत के अनेकों प्रकार बताएं है। जिसमें राजकाज की बात, व्यापार संबंधी बातचीत ,दो मित्रों में प्रेमालाप आदि।

लेखक कहते हैं कि हमारे देश में अशिक्षित लोगों में बातकही होती है। लड़की व लड़के वालों की ओर से एक-एक आदमी बिचवई होकर दोनों में विवाह संबंध की कुछ बातचीत करते हैं। उस दिन से बिरादरीवाले को यह जाहिर कर दिया जाता है कि विवाह पक्का हो गया और यह रस्म बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है।चंडूखाने(गांजे और शराब के अड्डे) की बातचीत भी निराली होती है। इस प्रकार बात करने के अनेक प्रकार और ढ़ंग होते हैं ।

यूरोप के लोगों में बातचीत का हुनर है जिसे 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' कहते हैं। 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' का अर्थ है-वार्तालाप की कला। 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' के हुनर की बराबरी स्पीच और लेख दोनों नहीं कर पाते। इस हुनर की पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वतमंडली में है। इस कला के माहिर व्यक्ति ऐसे चतुराई से प्रसंग छेड़ते हैं कि श्रोताओं के लिए बातचीत कर्णप्रिय तथा अत्यन्त सुखदायी होती है। सहृदय गोष्ठी इसी का नाम है। सहृदय गोष्ठी की विशेषता है कि वक्ता के वाकचातुर्य का अभियान या कपट कहीं प्रकट नहीं हो पाता तथा बातचीत की सरसता बनी रहती है। कपट और एक-दूसरे को अपने पांडित्य के प्रकाश से परास्त करने का संघर्ष आदि रसाभास की सामग्री 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' का मूलतंत्र होती है। यूरोप के लोगों का 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' जगत् प्रसिद्ध है।

अंत में लेखक कहते हैं कि मनुष्य की बातचीत का सबसे उत्तम तरीका उसका आत्मवार्तालाप है। वह अपने अन्दर ऐसी शक्ति विकसित करे जिस कारण वह अपने आप से बात कर लिया करे। आत्मवार्तालाप से तात्पर्य क्रोध पर नियंत्रण है जिसके कारण अन्य किसी व्यक्ति को कष्ट न पहुँचे। क्योंकि हमारी भीतरी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नएनए रंग दिखाया करती है। साथ ही वह हमेशा बदलती रहती है। लेखक इस मन को प्रपंचात्मक संसार में एक बड़े आइना के रूप में देखता है जिसमें जैसी चाहो वैसी सूरत देख लेना कोई असंभव बात नहीं। अतः मनुष्य को चाहिए कि मन की चित्त को एकाग्र कर मनोवृत्ति स्थिर कर अपने आप से बातचीत करना चाहिए। इससे आत्मचेतना का विकास होगा। उस वाणी पर नियंत्रण हो जायेगा जिसके कारण दुनिया में किसी से न बैर रहेगा और बिना प्रयास के हम बड़े-बड़े अजेय शत्रु पर भी विजय पा सकते हैं। यदि ऐसा हुआ तो हम सर्वथा एक नवीन संसार की रचना कर सकते हैं। वाकशक्ति के दमन से न जाने कितने प्रकार की आंतरिक शक्ति दमन हो जायेगा । अतः व्यक्ति को चाहिए कि अपनी जिहवा को काबू में रखकर मधुर वाणी बोले। इससे न किसी के साथ कटुता रहेगी न वैर । तब दुनिया बहुत खुबसूरत हो जायेगी। यही, सही मायने में मनुष्य के बातचीत करने का उत्तम तरीका है। इसलिए अवाक् रह कर अपने आप बातचीत करने का यह उत्तम साधन है । यही शांति का परम पूज्य मंदिर है, मोक्ष का एक मात्र मार्ग है ।

I. एक वाक्य अथवा एक शब्द में उत्तर लिखिए :

1. 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' कहाँ के लोगों में सर्वाधिक प्रचलित हैं ? **(यूरोप)**
2. किसे वश में कर लेने पर अजेय शत्रुओं को वश में किया जा सकता है? **(जिह्वा)**
3. 'बातचीत' निबंध के रचनाकार कौन है ? **(बालकृष्ण भट्ट)**
4. बालकृष्ण भट्ट ने किस पत्रिका का संपादन किया ? **(प्रदीप)**
5. बातचीत के माध्यम से बालकृष्ण भट्ट क्या बतलाना चाहते हैं ? **(बातचीत की शैली)**
6. बालकृष्ण भट्ट किस युग के निबंधकार थे ? **(भारतेंदु - युग)**
7. 'बातचीत' किस विधा की रचना है ? **(निबंध)**
8. रोबिंसन क्रूसो ने 16 वर्ष के उपरांत किसके मुख से एक बात सुनी ?**(फ्राइडे के)**
9. 'बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।यह किसका कथन है? **(बेन जानसन)**
10. किसके न होने से सृष्टि गूंगी प्रतीत होती है ? **(वाक्शक्ति)**

II. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

1. 'सच है, जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण - दोष प्रकट नहीं होता।'
2. 'स्कूल के लड़कों की बातचीत का उद्देश्य अपने उस्ताद की शिकायत या तारीफ या अपने सहपाठियों में किसी के गुनएगुन का कथोपकथन होता है।'
3. 'गरम दूध और ठंडे पानी के दो बर्तन पास - पास सटा के रखे जाएँ तो एक का असर दूसरे पर पहुँचता है ।
4. 'पचीस वर्ष के ऊपर वालों की बातचीत अवश्य ही कुछ न कुछ सार - गर्भित होगी।'

III. निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'बातचीत' निबंध का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
2. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है ? इसके द्वारा वह कैसे अपने लिए सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है ?सविस्तार लिखिए ।
3. निबंधकार द्वारा चर्चित बातचीत के विभिन्न प्रकारों पर प्रकाश डालिए ।

डॉ. कविता, सहायक प्राध्यापिका, म्याप्स कॉलेज, मंगलूर

2. भय **आचार्य** रामचंद्र शुक्ल

रामचंद्र शुक्ल जी का जन्म 4 अक्टूबर सन् 1884 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला आगोना गांव में हुआ था। पिता चंद्रबली शुक्ला माता निवासी देवी थी। प्रारंभिक शिक्षा हमीरपुर में हुई थी। बाद में पिताजी के साथ मिर्जापुर गये, वहाँ आगे की शिक्षण पूरी की थी । वे हिंदी साहित्य के सर्वोत्कृष्ट निबंधकार तथा हिंदी के वैज्ञानिक जनक भी कहलाते हैं। 2 फरवरी सनू 1941 में उनका देहांत हुआ था। उन्होंने हिंदी शब्द सागर, भ्रमरगीत सार, जायसी ग्रंथावली तुलसी साहित्य आदि ग्रंथों का संपादन किया है। उनके उत्सव, करूणा, क्रोध, श्रद्धा -भक्ति ,लज्जा

और ग्लानि, लोभ और प्रीति, धृणा आदि मनोविकार संबंधी निबंधों में मन और बुद्धि का सामंजस्य दिखाई देता है। हिंदी साहित्य के निबंधकारों में शुक्ल जी का अपना एक स्थान है।

"भय" एक प्रकार का विचारात्मक निबंध है। जिसमें भय को मनोविकार के रूप में दर्शाया गया है। शुक्ला जी ने इस निबंध मे सूक्ष्म विचारों को बहुत सुन्दर रूप से व्यक्तकिया है। उनके अनुसार भय का अर्थ कुछ इस प्रकार से है- "किसी आती हुई आपदा की भावना या दुख के कारण के साक्षात्कार से जो एक प्रकार का आवेग पूर्ण अथवा स्तंभ कारक मनोविकार होता है, उसी को भय कहते हैं।" शुक्ल जी ने भय और क्रोध के निकट संबंध के बारे में बताते हुए कहा हैं कि क्रोध दुख के कारण पर प्रभाव डालने के लिए आकुल करता है और भय उनकी पहुंच से बाहर होने के लिए । उन्होंने उदाहरण के साथ बताया है कि यदि कोई ज्योतिषी किसी गाँवर से कहे कि, कल तुम्हारे हाथ पैर टूट जाएगी तो उसे क्रोध ना आएगा, भय होगा । पर यदि कोई दूसरा आकर कहे कि कल अमुक अमुक तुम्हारे हाथ पैर तोड़ देंगे तो वह थ्योरी बदलकर कहेगा कि कौन है मेरे हाथ पैर तोड़ने वाले देख लूंगा ! क्रोध दुख के कारण के स्वरूप मात्र से होता है और भय के लिए 'कारण' का निर्दिष्ट होना जरूरी नहीं होता इतना भर मालूम हो होना चाहिए कि दुख या हानि पहुंचेगी।

भय दो रूपों में सामने आता है साध्य रूप और असाध्य रूप। साध्य रुप को प्रयत्न द्वारा दूर किया जा सकता है। असाध्य विषय वह है जिसका किसी प्रयत्न द्वारा निवारण असंभव है । विषय की साध्य या असाध्य होने की धारणा परिस्थिति की विशेषता के अनुसार होती है। भय जब स्वभावगत हो जाता है तब कायरता व भीरुता कहलाता है। पुरुषों में यदि भीरुता हो तो उसे एक भारी दोष माना जाएगा और वह निंदा का कारण भी बन जाएगा । स्त्री की भीरूता तो उनकी लज्जा के कारण से सामान्य रुप से मनोरंजन की वस्तु रही है।

पुरुषों की भीरुता की पूरी निंदा होती है । जिसमें अपनी शक्ति पर विश्वास की कमी होती है उसमें भय ज्यादातर पनपता रहता है। भय जीवन के और अनेक व्यापारों में भी दिखाई देता है । अर्थ हानि के भय से व्यापारी कभी-कभी किसी विशेष व्यवसाय में हाथ नहीं डालते। हारने की वजह से बहुत से पंडित शास्त्रार्थ से मुंह चुराते हैं। इन सब के पीछे मानहानि सहने की क्षमता तथा अपने विद्या बुद्धि बल पर अविश्वास निहित है।

एक ही प्रकार से भीरूता ऐसी दिखाई पडती है ,जिसकी प्रशंसा होती है वह है धर्म भीरुता । दुख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय ना रहने पर उसकी संभावना मात्र के अनुमान से जो आवेश शून्य भय होता है उसे आशंका कहते हैं उसमें आकुलता नहीं होती। संज्ञान प्राणियों के बीच जिसमें भय अधिक काल तक संचित रहते हैं, और ऐसे उन्नत समाज में जहाँ एक व्यक्ति को पहुँच और परिचय का विकास बहुत अधिक होता है।प्रायः भय का फल भय के संचार काल तक ही रहता है ।

प्राणियों की असभ्य दशा में ही भय से अधिक काम निकलता है,जबकि समाज ऐसा गहरा संगठन नहीं होता है कि बहुत से लोगों को एक दूसरे का पता और उसके विषय में जानकारी नहीं

रहती । जंगलों में रहने वाले जंगली मनुष्य ज्यादातर बीस पच्चीस से अधिक आदमियों को नहीं जानते। इसी से जंगली और असभ्य जातियों में भय अधिक होता है। जिससे वे भयभीत हो जाते हैं । उसी को वे श्रेष्ठ मानते हैं और उसी की स्तुति करते हैं। उनके देव देवता भय के प्रभाव से ही कल्पित होते हैं । किसी आपत्ति या दुख से बचे रहने के लिए अधिकतर वे उसकी पूजा करते हैं। अति भय और भयकारक का सम्मान असभ्य के लक्षण है। अशिक्षित होने के कारण अधिकतर भारतवासी भय के उपासक हो गए हैं। वे जितना सम्मान एक थानेदार को देते हैं उनका उतना किसी विद्वान को नहीं देते।

चलने- फिरने वाली बच्चों में जिनमें दुख परिहार का ज्ञान या बल नहीं होता, उनमें भय अधिक होता है वह किसी अपरिचित आदमी को देखते ही घर के भीतर जाते हैं । पशुओं में भी भय अधिक पाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति भीतरी आंखें खुलती ही अपने सामने का दुख कारण संसार को अपने ज्ञान बल से और कुछ बाहुबल से सुख में बनाता चलता है । अपने मातापिता या नित्य दिखाई पड़ने वाले कुछ थोड़े से लोगों के ही संबंध में हो यह धारणा रखता है कि मुझे सुख पहुंचाते हैं और कष्ट नही पहुंचाएँगे।अपरिचित का या अनजान व्यक्तियों एवं वस्तुओं के सामने वह बेधड़क होकर चला नहीं चलता ।

भय की वासना परिहार क्रमशः खुलती जाती है। व्यक्ति अपने ज्ञान बल, हृदय बल, शरीर बल बल्कि बुद्धि के साथ वह दुख की छाया मानो हटाता चलता है। भूतों का भय तो अब दूर हो गया है। अब मनुष्य के दुख के कारण मनुष्य ही है। सभ्यता से दुख दान की विधियां बहुत गूढ और जटिल हो गई है। सभ्यता की वर्तमान स्थिति में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से वैसा भय तो नहीं रहा । जैसे पहले रहा करता था पर एक जाति को दूसरी जाति से एक देश को दूसरे देश से भय की स्थाई कारण प्रतिष्ठित हो गए हैं। जिस प्रकार सुखी होने का प्रत्येक प्राणी को अधिकार है । उसी प्रकार मुक्तातंक होने का भी। कार्य क्षेत्र के चक्रव्यूह में पड़कर जिस प्रकार सुखी होने का प्रयत्न साध्य होता है। उसी प्रकार निर्भय रहने का भी। निर्भयता के संपादन के लिए दो बातें अपेक्षित होती है । पहले तो यह कि दूसरों को हमसे किसी प्रकार का भय या कष्ट ना हो। दूसरी यह कि दूसरे हमको कष्ट या भय पहुंचाने का साहस ना कर सके। इस संसार में किसी को ना डरने से डरने की संभावना दूर नहीं हो सकती। साधु से साधु प्रकृति वाले को क्रूर लोभियों और दुर्जन से क्लेश पहुंचता है ।इस तरह भय संचार होने से हम बच नहीं सकते।

विशेषताएँ - 1. इस मनोविकार निबंध को मनोविज्ञान की आधुनिक खोजो से जोड़कर लिखने का सफल प्रयास किया है ।

2. निबंध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक बोध से भी संपन्न है ।

3. पूरे निबंध में मौलिकता और ताजगी नजर आता है।

4. पूरे निबंध में हृदय और बुद्धि का सुन्दर सामंजस्य दिखाया है।

I. एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर लिखिए-

1. भय निबंध के लेखक कौन है? **आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी**

2. दुख हो या आपत्ति का पूर्ण निश्चय ना होने पर कौन सा मनोभाव होता है? **भय**

3. साहसी व्यक्ति कठिनाई में फंसे जाने पर कया करता है?**उससे बचने का उपाय करता है**

4. भय की अधिकता किसमें रहती है? **असभ्य तथा जंगली लोगों में**

5. ऐसी कौन सी भीरूता है जिसकी प्रशंसा होती है ? **धर्म भीरूता**

6 'भय' का विषय कितने रूपों में सामने आता है? **दो रूपों मे**

7. 'भय' जब स्वभावगत हो जाता है तब कायरता क्या कहलाती है? **भीरूता**

8. शुक्ला जी के मनोविकार समीक्षात्मक निबंध किसमें संकलित है?'**चिंतामणि भाग 1'**

9. 'भय' किस प्रकार के निबंधहै? **मनोविकार संबंधी**

10. 'भय' के साध्य विषय को किसके द्वारा दूर किया जा सकता है? **प्रयत्न द्वारा**

II.संदर्भ सहित लिखिए -

1. "सभ्यता से अंतर केवल इतना पड़ा है कि दुख दान की विधियां बहुत गूढ और जटिल हो गईहै।"

2. "अपरिचित से भय में जीवन का कोई गूढ़ रहस्य छिपा जान पड़ता है।"

3. "अब मनुष्यों के दुख का कारण मनुष्य ही है।'

4. "जंगली मनुष्य के परिचय का विस्तार बहुत बड़ा होता है।'

III निबंधात्मक प्रश्न

1. आचार्य शुक्ल द्वारा रचित 'भय' शीर्षक निबंध का सारांश लिखिए।

2. शुक्ला जी ने भय की उत्पत्ति तथा कारण को किस तरह से निबंध में स्पष्ट किया है समझाइए।

3. "असभ्य दशा में भय से अधिक काम भी निकलता है" और 'भय की वासना का परिहार क्रमशः होता चलता है' इसे निबंध के अनुसार समझाइए।

4. 'भय' एक मनोविकार संबंधी निबंध है, पठित निबंध के अनुसार समझाइए।

डॉ सुजना, सहायक प्राध्यापिका, सेंट रेमांड्स कालेज, वामांजूर मगंलूर

3.गौरा महादेवी वर्मा

"गौरा" रेखाचित्र को महादेवी वर्मा ने लिखा है । महादेवी जी छायावाद की रहस्यवादी कवयित्री मानी जाती है। उनके लेखन तथा कविताओं मे दुख की सजीव अंकन हुआ है । 'नीहार' "'राशिम 'नीरजा' "यामा" जैसी कृतियो का सृजन किया । उन्होंने "गौरा" रेखाचित्र में गाय का सुन्दर चित्रण किया है ।

इस रेखाचित्र में लेखिका ने गाय की महिमा तथा उसके स्वाभाव के बारे उन्होंने जो देखा है, तथा अनुभव किया है उसका सुन्दर चित्रण किया है । एक बार लेखिका की छोटी बहन श्यामा ने उन्हें गाय पालने के बारे में सलाह दी। लेखिका इससे पहले कई पशु -पक्षी पाल चुकी थी । लेकिन कभी भी प्रयोजनकारी गाय खरीदने में और पालने का मन नहीं किया । अबकी बार छोटी बहन श्यामा के कहने पर वे एक गाय की बछिया को घर में लेकर आती है । उस दिन परिचारिकाओं ने घी का दिया जलाकर उस हष्ट- पुष्ट गाय के माथे पर केसरी रंग का तिलक लगाकर , सफेद तथा लाल गुलाबों की माला पहनाकर उसकी आरती उतारी । गाय की पूजा के साथ उसे मीठा खिलाया गया । गाय के सौंदर्य को देखकर हरेक मोहित हो गया था । गाय के

रोम- रोम में अभ्रक (स्वर्ण) जैसी चमक थी । आंखों में एक विशेष रोनक थी । गाय देखने में बहुत सुन्दर थी। जिस दिन गाय घर आयी उस दिन गाय का नाम रखा गया- "गौरा' या "गौरंगिनी"। घर में सभी इसी नाम से गाय को बुलाया करते थे।

एक साल बीतने के साथ गाय ने एक बछड़े को जन्म देती हैं । उसके वत्स का नाम रखा गया लालमाणि । बछड़े का रंग गेरूआ था। गाय और बछड़े हिम राशि तथा अंगारे जैसा प्रतीत होते थे । गौरा अब दिन में बारह सेर दूध देने लगी थी है। बछडा, गौरा का दूध पीने पर भी बहुत कुछ दूध बचा रहता । गौरा का जब दूध दुहता तो घर के सभी अन्य पशुपक्षी उसके आस -पास पंक्तिबद्ध बैठकर दूध का इन्तजार करते थे। दूध दुहाने के बाद नौकर सभी के बर्तन में दूध पीने के लिए डाल देता था। जब गौरा को चारा या भोजन देने में देर होती तो गौरा लेखिका को रंभा- रंभा कर बुलाती ।

कुछ समय बिताने के बाद गौरा एकदम दुर्बल सी होने लगी । लेखिका ने गाय के डॉक्टरों को बुला कर उसका परीक्षण करवाया । बहुत दिनों के परीक्षण एंव निरिक्षण के बाद पता चलता है कि गाय को गुड में सुई डालकर खिलाई गयी है । पूछताछ करने के बाद पता चलता है कि ज्यादातर ग्वाले ईर्ष्या वश गायों गुड में सुई डालकर खिलाते । जिससे वह पहले जैसे फिर से अपना काम शुरू कर सके। डॉक्टरों ने सलाह दी कि गाय को नित्य सेब का रस पिलाना होगा । जिससे सुई छाती तक जाने की संभावना कम होगी। 'गौरा' को रोज इंजेक्शन तथा नली से सेब का रस पिलाया गया । गौरा नित्य शरीर के भीतर तथा बाहर की पीड़ा सहती रही । कुछ ही दिनों के बाद गौरा उठने तथा बैठने में असाहय महसूस करने लगी । लेखिका को मालूम हो गया की वह अब कुछ ही दिन उसके शेष है । एक दिन गौरा ब्रहम मुहूर्त में अपने प्राण त्याग देती है। गौरा की अस्थियों को गंगा में प्रवाहित किया जाता है । जब उसे ले जाया जाने लगा तो महादेवी की करूणा उमड़ पड़ी और वेदना से निकला वाक्य -आह! मेरा गोपालक देश!

विशेषताएँ

1. गाय के प्रति लेखिका के मन में जो अपार स्नेह और अपनातव था उसे मार्मिक रुप से चित्रित किया है । इसी कारण से वह उसकी मृत्य पर रो पड़ती है।
2. गांव मे रहने वाले ग्वालों के मनोविकारों पर यहाँ प्रकाश डाला गया है।
3. गायों का कार्यकलापों को रेखांकित किया गया है ।
4. पशु-पक्षियों के आतंरिक एंव बाहय गतिविधियों पर ध्यान दिया गया है ।
5. इंसान का स्वार्थी से भरे षड्यंत्र का प्रस्तुतीकरण किया गया गया है तथा मानवीय संवेदनाओं का सच्चा चित्रण किया है ।

एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर लिखिए-

1. गाय करुणा की कविता है उक्त कथन किसका है ? **(महात्मा गांधी)**
2. गौरा की मृत्यु कैसे हुई? **(सूई खिलाने से)**
3. गौरा के बछडे का क्या नाम था? **(लालमणि)**
4. गौरा को पालने का सुझाव महादेवी को किसने दिया? **(उनकी बहन श्यामा)**
5. गौरा महादेवी की किस पुस्तक से संग्रहित है? **(मेरा परिवार)**
6. गौरा रेखाचित्र के रचनाकार कौन है? **(महादेवी वर्मा)**

7. गाय को सुई किसने खिलाई थी? **(ग्वाला ने)**

8. सूई किस में मिलाकर खिलाई गई? **(गुड)**

9. गाय कितने सेर दूध देती थी? **(बारह सेर)**

10. डॉक्टरों ने गाय को क्या पिलाने की सलाह दी ? (**सेब का रस)**

सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

1. 'अब हमारे घर में दुग्ध महोत्सव प्रारंभ हुआ।'
2. 'अब तो उठ नहीं पाती थी, परंतु मेरे पास पहुंचते ही उसकी आंखों में प्रसन्नता की छाया सी तैरने लगती थी।
3. 'आह! मेरा गोपालक देश'
4. 'हम सबको आवाज से नहीं पैरों की आहट से पहचानने लगी।'
5. 'गौरव वास्तव में बहुत प्रियदर्शिनी थी।

III. **निबंधात्मक प्रश्न-**

1. 'गौरा' की अकाल मृत्यु के संघर्ष का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'गाय करूणा की कविता है। "गौरा" रेखाचित्र के आधार पर समझाइए ।
3. 'गौरा" रेखाचित्र का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
4. 'गौरा' रेखाचित्र, आधुनिक जीवन के अमानवीय षड्यंत्र का प्रतीक भी है। इसे पठित रेखा चित्र के आधार पर समझाइए ।

डॉ. सुजना, सहायक प्राध्यापिका, सेंट रेमांड्स कालेज वामांजूर

4.कुटज - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

लेखक परिचय: हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 को तथा मृत्यु 19 मई1979 को हुई थी । हिन्दी निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। वे हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और बंगला भाषाओं के विद्वान थे। भक्तिकालीन साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। सन १९५७ में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। द्विवेदी जी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था।1973 में 'आलोक पर्व' निबन्ध संग्रह के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

प्रकाशित कृतियाँ :

आलोचनात्मक : सूर साहित्य , हिन्दी साहित्य की भूमिका , कबीर , नाथ संप्रदाय आदि ।

उपन्यास : बाणभट्ट की आत्मकथा , चारु चंद्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा आदि ।

निबंध संग्रह : अशोक के फूल, विचार प्रवाह, कुटज, कल्पलता, आलोक - पर्व आदि ।

सम्पादित कृतियाँ : संक्षिप्त पृथवीराज रासो, संदेशरासक ।

सारांश : 'कुटज' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित एक ललित निबंध है, जिसमें उन्होंने पहाड़ों पर उगने वाले छोटे पौधे कुटज के गुण, सौन्दर्य और विशेषताओं के बहाने मानव के स्वाभाव और उसके कई पहलुओं पर सार्थक टिप्पणी की है। इस निबंध का केंद्र 'कुटज' नाम का वृक्ष है, जो शिवालिक पर्वत श्रृंखला पर मिलने वाला एक अल्प परिचित पौधा है, जो फूलों से

लदा रहता है और स्वयं में मस्त रहते हुए मुस्कुराता रहता है। इस निबंध को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के आत्माभिव्यक्ति के रूप में अधिक जाना जाता है । उनका मानना है कि मनुष्य साहित्य का लक्ष्य होता है और इस निबंध का लक्ष्य भी उन्होंने मनुष्य के लिए कुटज के माध्यम से कुछ संदेश देने की कोशिश की है । कुटज के माध्यम से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी अनेक महत्वपूर्ण बिम्बों की अभिव्यंजना करते हैं ।

कुटज निबंध में द्विवेदी जी ने कुटज के नाम, रूप उत्पत्ति आदि की शास्त्रीय अवधारणाओं के साथ उसे जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं और कुटज को एक नवीन व्यक्तित्व प्रदान करते हैं, तब कुटज पौधा न होकर व्यक्ति रूप में रूपांतरित होता प्रतीत होता है ।

प्रारंभ में द्विवेदीजी उस स्थान की विशेषता बताते हैं जहाँ पर कुटज उगता है, वह स्थान है शिवालिक श्रृंखला । फिर शिवालिक का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि शिवालिक या शिव के जटा जूट का निचला हिस्सा है । हिमालय की शिवालिक श्रृंखला की भूमि का वर्णन करते हुए वे इसके पृष्ठभूमि में जाते हैं -

जहाँ कुटज उगता है, उस भूमि पर हरियाली नहीं है, घास तक सूख गयी है । खाली-खाली चट्टानों के बीच थोड़ी-थोड़ी रेती है,यहीं कुटज उगता है । कुटज पेड़ का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं कि वे जो ठिगने से लेकिन शानदार गर्मी की भयंकर मार खा-खा कर और भूख-प्यास की निरंतर चोट सहकर भी जी रहे हैं, इन्हें क्या कहे। सिर्फ जी ही नहीं रहे हैं, हँस भी रहे हैं,उसके बाद फिर प्रश्न करते हैं - बेहया है क्या या मस्तमौला ? इस पर वे एक विशिष्ट व्यंग्य भी करते हैं जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़े काफी गहरी रहती हैं ।

यह पाषाण की छाती के बहुत नीचे से रस खींच लेते हैं। कुटज का स्वरुप भी काफी अद्भुत है, इतनी कठिनाई के बावजूद यह मुस्कुराते रहते हैं। इन वृक्षों को हम नहीं जानते हैं पर ये हमें अनादि काल से जानते हैं । इस पहचान के बाद आचार्य द्विवेदी जी कुटज के नाम और रूप पर चर्चा करते हुए कई निष्कर्ष निकालते हैं- वे पूछते हैं - बड़ा कौन है - रूप या नाम ? फिर ये सूत्र प्रस्तुत हैं कि - नाम इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है, रूप व्यक्ति सत्य है और नाम समाज सत्य। कुटज निबंध में इस प्रकार वे कई अन्य बातों की भी विवेचना करते चलते हैं -

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक भाषा शास्त्री भी है । भाषा शास्त्री होने के कारण वे 'कुटज' शब्द की उत्पत्ति का भी आंकलन करते हैं और इस क्रम में वे कहते हैं गिरीकूट पर उत्पन्न होने के कारण इसका नाम 'कुटज' पड़ा हो ।इसके अलावा वे कहते हैं कि 'कुटज' की उत्पत्ति 'कुट' से हुई है। और 'कुट' का एक अर्थ घड़ा होता है और दूसरा घर। लेकिन घड़ा और घर या गमले से इसकी उत्पत्ति का सामंजस्य नहीं बैठता । इसके अलावा वे कहते हैं संस्कृत में 'कुटहारिक', 'कुटकारिका', 'कुट्टनी' ये शब्द दासी के लिए प्रयुक्त होते हैं, लेकिन ये शब्द भी कुटज की उत्पत्ति को प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं । इसके अलावा संस्कृत में 'कुटच' और कुटज शब्द भी हैं, लेकिन ये भी कुटज के लिए सही अर्थ देने में सक्षम नहीं है ।

द्विवेदीजी 'कुटज' शब्द को आग्नेय भाषा परिवार का शब्द मानते हैं । जो आस्ट्रो - एशियाटिक परिवार का होगा, जिसे अब 'कोल भाषा' कहा जाता है । परन्तु वे कहते हैं कि यह आर्य भाषा परिवार का शब्द नहीं जान पड़ता, और संस्कृत में इस संस्कृतियों के समन्वय की प्रक्रिया का परिणाम मानते हैं ।

कुटज की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी अपराजय जीवन शक्ति को मानते हैं, और यह उसके नाम और रूप दोनों में ही विद्यमान है । आचार्य द्विवेदीजी कुटज की कठिन जीवनी शक्ति की प्रशंसा भी करते हैं जो तमाम विपदा और कठिनाईयों के बावजूद भी जी रहा है, और इतना ही नहीं मुस्कुरा भी रहा है । इस प्रकार कुटज के माध्यम से मनुष्य के अपराजय जीवनी शक्ति की व्याख्या भी करते हैं, इसके कारण ही आनंद और जीवन की प्रेरणा भी है तथा कुटज का यही संदेश भी है ।साथ ही वे कहते हैं कि जीवन जीना केवल जीवित रहना ही नहीं है, सारा संसार केवल स्वार्थ के लिए जीवित है। सभी के प्रति अपने स्वार्थ का निछावर ही जीवन का सत्य है ।

इसी आधार पर वे कुटज की बात करते हैं और कहते हैं कि कुटज क्या केवल जी रहा है, वह दूसरे के द्वार पर भीख माँगने नहीं जाता, नीति और धर्म का उपदेश नहीं देता फिरता, अपनी उन्नति के लिए अफसरों का जूता नहीं चाटता, अंगूठियों की लडी नहीं पहनता, दांत नहीं निपोरता, बगले नहीं झाँकता, जीता है और शान से जीता है, काहे वास्ते और किस उद्देश्य से ? कोई नहीं जानता मगर बड़ी बात है, स्वार्थ के दायरे से बाहर की बात है । आचार्य द्विवेदीजी इस प्रकार कहते हैं कि कुटज उल्लास के साथ घोषणा करता है - "हर चुनौती को स्वीकार करो और कुछ भी हो जाए हार मत मानो ।" कुटज अपने स्वार्थ व ढोंग के लिए कुछ नहीं करता, वह जीता है, वह निर्भय है और अपराजित है। यानी इस निबंध के माध्यम से आचार्य द्विवेदीजी व्यक्ति को स्वार्थ के दायरे से बाहर निकलने की बात करते हैं, अपने स्वार्थ को लोगों के हित के लिए, या जनता के हित के लिए, या समष्टि के हित के लिए उसे निछावर या समाप्त करने की बात करते हैं और कहते हैं कि हर चुनौती को स्वीकार करो और कुछ भी हो जाए हार मत मानो ।

कुटज निबंध के माध्यम से आचार्य द्विवेदी जी अपने विभिन्न विचारों को रखते हैं । वे कहते हैं सुख और दुःख मन के विकल्प हैं सुखी वह है जिसका मन वश में है और दुखी वह है जिसका मन पर वश नहीं है। कुटज छल - प्रपंच - धोखा सबसे मुक्त है, क्योंकि कुटज अपने मन पर सवारी करता है, मन को अपने ऊपर सवार होने नहीं देता ।

I. एक वाक्य अथवा एक शब्द में उत्तर लिखिए :

1. 'कुटज' निबंध के रचनाकार कौन है ? - **(आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी)**
2. संस्कृत में कुटज के किस नाम का उल्लेख मिलता है ? **(कुटच)**
3. कुटज कहाँ का सैलानी है ? - **(जंगल)**
4. कुटज किस पर सवारी करता है ? - **(अपने मन पर)**
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी किस काल के कवि हैं ? -**(आधुनिक काल के)**
6. किसे पृथ्वी का मानदंड कहा जाता है? - **(हिमालय को)**
7. लेखक को कहाँ उपजे पेड़ को कुटज कहने में विशेष आनंद मिलता है ? **(गिरीकूट)**
8. 'गाढे के साथी' किस फूल को कहा गया हैं? - **(कुटज के फूल को)**

9. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने किसे शोभा निकेतन कहा है? - **(पर्वत)**

10.आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'कुटज' किस प्रकार का निबंध है?-**(ललित-निबंध)**

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

1. 'कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़े काफी गहरी पैठी रहती है''
2. 'कुटज को देखकर रोमांच हो जाता है। कहाँ से मिलती है यह अकुतोभया वृत्ति अपराजित स्वभाव, अविचलित जीवन-दृष्टि !'
3. रूप व्यक्ति सत्य है, नाम समाज सत्य । नाम उस पद को कहते है जिस पर समाज की मुहर लगी होती है ।
4. 'कुटज क्या केवल जी रहा है? वह दूसरे के द्वार पर भीख माँगने नहीं जाता।'

निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'कुटज' निबंध का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
2. 'कुटज' निबंध के आधार पर सिद्ध कीजिए कि "दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं।'
3. 'कुटज' के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है ?
4. 'कुटज' निबंध के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए ।

डॉ. कविता, सहायक प्राध्यापिका, म्याप्स कॉलेज, मंगलूर

5.बाजार दर्शन- जैनेंद्र कुमार

हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकार जैनेंद्र कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश में 2 जनवरी 1905 को हुआ। इनका पूरा नाम आनंदीलाल जैनेन्द्र था। प्रेमचंद्र के परवर्ती उपन्यासकारों में जैनेन्द्र का विशिष्ट स्थान हैं। उनकी प्रथम उपन्यास 'परख' 1929 में प्रकाशित हुई। जैनेन्द्र कुमार को मनोविश्लेषणात्मक परम्परा के प्रवर्तक मना जाता है। इनकी कहानियाँ चरित्र प्रधान होती हैं। इनकी मृत्यु 24 दिसंबर 1988 में हुई।

लेखक अपने मित्र की कहानी बताता है कि एक बार वे बाजार में मामूली चीज लेने गए, परंतु वापस बंडलों के साथ लौटे। लेखक के पूछने पर उन्होंने पत्नी को दोषी बताया। लेखक के अनुसार, पुराने समय से पति इस विषय पर पत्नी की ओट लेते हैं। इसमें मनीबैग अर्थात पैसे की गरमी भी विशेष भूमिका अदा करता है। पैसा पावर है, परंतु उसे प्रदर्शित करने के लिए बैंक बैलेंस, मकान-कोठी आदि इकट्ठा किया जाता है। पैसे की पर्चेजिंग पावर के प्रयोग से पावर का रस मिलता है। लोग संयमी भी होते हैं। वे पैसे को जोड़ते रहते हैं तथा पैसे के जुड़ा होने पर स्वयं को गर्वीला महसूस करते हैं। मित्र ने बताया कि सारा पैसा खर्च हो गया। मित्र की अधिकतर खरीद पर्चेजिंग पावर के अनुपात से आई थी, न कि जरूरत की। लेखक कहता है कि फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। मित्र ने इसे शैतान का जाल बताया है। बाजार अपने रूपजाल में सबको उलझाता है। इसके आमंत्रण में आग्रह नहीं है। ऊँचे

बाजार का आमंत्रण मूक होता है। यह इच्छा जगाता है। हर आदमी को चीज की कमी महसूस होती है। चाह और अभाव मनुष्य को पागल कर देता है। असंतोष, तृष्णा व इर्ष्या से मनुष्य सदा के लिए बेकार हो जाता है।

लेखक का दूसरा मित्र दोपहर से पहले बाजार गया तथा शाम को खाली हाथ वापस आ गया। पूछने पर बताया कि बाजार में सब कुछ लेने योग्य था, परंतु कुछ भी न ले पाया। एक वस्तु लेने का मतलब था, दूसरी छोड़ देना।अगर अपनी चाह का पता नहीं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेती है। ऐसे में कोई परिणाम नहीं होता। बाजार में रूप का जादू है। यह तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मनखाली हो।यह मानव जेब के खाली होने पर भी असर करता है।खाली मन को बाजार की चीजें निमंत्रण देती हैं।सब चीजें खरीदने का मन करता है। जादू से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि बाजार जाते समय मन खाली न रखो। मन में लक्ष्य हो तो बाजार आनंद देगा। वह आपसे कृतार्थ होगा। बाजार की असली कृतार्थता हैआवश्यकता के समय काम आना। मन खाली रखने का मतलब मन बंद नहीं करना है। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। मनुष्य अपूर्ण है। मनुष्य इच्छाओं का विरोधनहीं कर सकता। यह लोभ को जीतना नहीं है, बल्कि लोभ की जीत है।

वास्तव में मनुष्य को अपनी अपूर्णता स्वीकार कर लेनी चाहिए। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अत: मन की भी सुननी चाहिए क्योंकि वह भी उद्देश्यपूर्ण है। मनमानेपन को छूट नहीं देनी चाहिए। लेखक के पड़ोस में भगत जी रहते थे। वे लंबे समय से चूरन बेच रहे थे। चूरन उनका सरनाम था। वे प्रतिदिन छह आने पैसे से अधिक नहीं कमाते थे। वे अपना चूरन थोक व्यापारी को नहीं देते थे और न ही पेशगी ऑर्डर लेते थे। छह आने पूरे होने पर वे बचा चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते थे। वे सदा स्वस्थ रहते थे। उन पर बाजार का जादू नहीं चल सकता था। वे निरक्षर थे। बड़ी-बड़ी बातें जानते नहीं थे। उनका मन अडिग रहता था। पैसा भीख माँगता है कि मुझे लो। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है, परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

लेखक का मानना है कि बाजार को सार्थकता मनुष्य देता है जो अपनी जरूरत को पहचानता है। जो केवल पर्चेजिंग पॉवर के बल पर बाजार जाते हैं, वे न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं और न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। ये कपट को बढ़ाते हैं जिससे सद्भाव घटता है। ग्राहक और बेचक एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं। ऐसे बाजारों में व्यापार नहीं, शोषण होता है। कपट सफल हो जाता है तथा बाजार

मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थशास्त्र सरासर औधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है।

I . एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. बाजार दर्शन के लेखक कौन हैं - **जैनेंद्र कुमारजी**
2. लेखक के मित्र ने खरीदारी का श्रेय किसे दिया - **अपनी पत्नी को**
3. "लेखक के अनुसार पैसा क्या है - **पावर**
4. बाजार का काम क्या है - **ग्राहकों को आकर्षित करना।**
5. बाजार के जादू का प्रभाव कब पड़ता है - **जब ग्राहक का मन खाली होता है**
6. हमें बाजार कब जाना चाहिए - **जब मन खाली न हो**
7. बाजार का आमंत्रण कैसा होता है - **मूक (मौन) और चाह जगाने वाला**
8. लेखक ने किसे "पावर" कहा है - **पैसे को**
9. "भरे मन से बाजार जाने पर क्या होगा - **बाजार के जादू का प्रभाव नही पड़ेगा**
10. बाजार की सार्थकता किसमें हैं - **लोगों की आवश्यकता पूरी करने में**

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या :

1. 'उनका आशय था कि यह पत्नी की महिमा है। उस महिमा का मैं कायल हूँ। आदि काल से इस विषय में पति से पत्नी कि हो प्रमुखता प्रमाणित है।'
2. 'बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है। पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है , वैसे इस जादू की भी मर्यादा है।'
3. 'पर उस जादू जकड से बचने का एक सीधा सा उपाय है। वह यह कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो। मन खाली हो, तब बाजार न जाओ।'
4. 'जहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है।'

III. निबंधात्मक प्रश्न-

1. 'बाजार दर्शन' इस रचना का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. लेखक के अनुसार बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता हैं?
3. बाजार दर्शन' निबन्ध में लेखक ने बाजार का सही उपयोग करने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखने पर बल दिया है?

प्रस्तुति : जयकाला, श्री देवी कॉलेज - मंगलूर

6.मौत की घाटी में - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ' अज्ञेय '

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले में हुआ था। उन्होंने कविता, कहानी, आलोचना, उपन्यास , यात्रा-वृतांत आदि

में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। उनकी कहानियों में व्यक्ति की व्यक्तित्व तथा उसके मानसिक पक्षों को केंद्रीय महत्व प्राप्त हुआ है। यात्रा वृतांतकार के रूप में अज्ञेय जी का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। उनकी यात्रा-वृतांत 'अरे यायावर रहेगा याद' में अज्ञेय जी ने भारतीय यात्राओं का विशेष चित्रण किया है। अज्ञेय जी को1979 में 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुवा है। उनका निधन 4 अप्रैल 1987 में हुआ।

मौत की घाटी में अज्ञेय जी का चर्चित यात्रा-व्रत है जिसमें उन्होंने मनाली के सौंदर्य का वर्णन किया है और साथ ही कहते है कि जिस कुलू- मनाली को देवताओं का आँचल कहा जाता था बरसों बाद उन्हें 'मौत की घाटी' जैसा एहसास होने लगा। लेखक मनाली के कोटेज के दीवार पर लिखा "छह स्मरणीय दिन और रातें" देखते है जो पिछले वर्ष के किसी यात्री दल ने इसे लिखा था। पहले उन्हें यह समझ नहीं आया लेकिन फिर जब वे समझ जाते हैं और विचार करते है कि लिखने वाले ने छह दिन ही क्यों लिखें , छह रातें ही क्यों लिखी, अगर मैं लिखता तो लिखता कि इस चिरस्मरणीय सौन्दर्य के बीच मैंने छह दिन बिताए। बाद में लेखक लिखना शुरू करते है कि शाम को जब लेखक लिखते- लिखते थक जाते है तो टहलने चले जाते है ,चलते-चलते मनाली गाँव लाँध कर मंदिर के पहाड़ की चोटी तक आ गए और चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है । तो वे जल्दी -जल्दी लौट आए। जैसे ही वे वापस आते है तो बहुत रात हो चुकी थी और लेखक ने पाया कि गाँव के लोग उन्हें स्थिर दृष्टि से देख रहे हैं और रात्रि के समय गावँ के लोग उनके घर पर पत्थरों की बौछार कर रहे हैं । पहले तो वे समझ नहीं पाते और अगले दिन जब श्रीमान बैनन से मालूम हुआ कि पिछले साल जो लोग इस घर में आकर ठहरे थे,उन्होंने गाँव की स्त्रियों से छेड़ -छाड़ की थी। इसलिए इस घर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर संदेह करने लगते हैं। अगले दिन बेनन साहब गाँव के मुखिया से लेखक का परिचय करवाते है और गाँव वालों से भी बातचीत करते है। जैसे उनका संदेह दूर हुआ गावँ का एक लड़का कुछ सब्जी और शहद दे गया तो लेखक जान गए कि गाँव वाले उनसे प्रसन्न हो गए हैं मगर वे कभी आगे गाँव की तरफ जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाए।

तीन दिन के बाद जब लेखक घर के बरामदे में बैठे थे , एक अजनबी, जो उस गाँव का नहीं लगता था । उसने बेशर्मी से पूछा कि यदि वे मन में वासना लेकर आए हैं तो उसकी पूर्ति हो सकती है । यह सुनकर लेखक आश्चर्य चकित हो जाते है । वे सोचने लगे कि आखिर इस प्रदेश में भावहीन होकर लोग कैसे बात करते हैं? क्या यह बात इतनी साधारण है! वह बोले जा रहा था कि किसी को वह खबर नहीं लगने देगा। लेखक उसे किसी तरह बाहर निकाला देते है और उन्हें लॉरेंस की कही बात याद आई कि "मनुष्य की बू मनुष्य को असह्य हो गई है" अर्थात पिछले वर्ष वहाँ रहे लोगों की करतूत की गंद उन्हें महसूस होने लगी थी और वे वहाँ से निकल आते है।

अज्ञेय जी मनाली का वह मकान छोड़कर नीचे नई बस्ती दाना में आ गये । बैनन साहब के बंगले का आधा हिस्सा अज्ञेय जी के दे दिया । वहां उनकी बेटी शकुंतला के बचपन की हँसी की गूंज में सारा दर्द वे भूलने लगे। उन दिनों काफी डाक उन्हें आती थी। एक दिन जब लेखक चिट्ठियों को फेंकने के लिए दाना और मनाली के बीच वाले नदी के पुल पर खड़े थे और एक-एक करके कागज के टुकड़ों को फेंक रहे थे उनकी नजर एक एंग्लो- इंडियन पर पड़ी जिसे उन्होंने दाना में दो- तीन बार देखा था । उसने व्यंग्य से "यहाँ किसी की ताक में खड़े हो क्या" कह दिया तो उनका मन आहत हुआ और वे लौटे आए ।

देवताओं के अंचल में रहते हुए भी उन्होंने देखा कि कहीं किसी तरफ घूमने का स्थान नहीं रह गया है। आज देवताओं का अंचल अपना विस्तार भूलकर मौत की घाटी हुआ जा रहा है। इसका दायित्व केवल मानवों पर है, उन मानवों पर जो अपनी सभ्यता के मद में चूर रहते हैं। हम समतल भूमि के रहने वालों ने भारत के पहाड़ी इलाकों में शायद कोई ऐसा स्थल नहीं छोड़ा जो दूषित नहीं हो गया है। जिसका सर्वोत्तम उदाहरण कुल्लू का आंचल है। कुल्लू के सौन्दर्यता की बात सुनी थी । वही सभ्य लोग उसे बिगड़ने वहाँ दौड़े होंगे । जिसका परिणाम आज वह स्थान भी दूषित हो चुका हैं।

अज्ञेय जी मनाली से रोहतांग जो तरह चौदह मील दूर पर है, दो टट्टू को लेकर साथियों के साथ आगे यात्रा पर निकल गए । बारह हज़ार फुट की ऊंचाई पर वे पहुंचते है वहाँ इतनी घातक हवा चल रही थी कि लेखक मौत के मुँह में जाते जाते बच गए थे। उन्हें लगने लगा कि मानव कितना मूर्ख है, स्थायित्व न होने पर भी कायम रहना चाहता है। जो नष्ट होते हुए भी नया सृजन करना चाहता है -जो नश्वर होकर भी ईश्वर है। इससे बढ़कर भी कोई सत्य मौत की इस घाटी में जाना जा सकता है , यह नहीं दीखता यही जीवन की सच्चाई है।

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. 'मौत की घाटी में' पाठ के लेखक कौन है? **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'**
2. 'मौत की घाटी में' किस प्रकार का निबंध है ? **यात्रा वृतांत**
3. लेखक ने कुलू और मनाली को क्या कहा हैं? **देवताओं का अंचल**
4. मनाली के कोटेज के दीवार पर क्या लिखा था ? **छह स्मरणीय दिन और रातें**
5. गाँव के एक लड़केने लेखक को क्या दिया? **कुछ सब्जी और शहद**
6. किसने लेखक को गांव के मुखिया से परिचय कराया? **बेनन साहब**
7. अज्ञेय जी मनाली का वह मकान छोड़कर कहाँ आ गये ? **बस्ती दाना में आ गये**
8. किसके कारण आज देवताओं का अंचल अपना विस्तार भूलकर मौत की घाटी हुआ जा रहा है? **मानव जो अपनी सभ्यता के मद में चूर रहता है।**
9. लेखक क्या फेंकने के लिए दाना और मनाली के बीच वाले नदी के पुल पर खड़े थे? **चिट्ठियों को**
10. अज्ञेय जी की किस कृति को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है? **कितनी नावों में कितनी बार**

II. सन्दर्भ सहित व्याख्या-

1. "देवताओं के अंचल में बैठ कर भी एक दिन देवत्य के बाद मैंने पाया की लिखना आगे चलता नहीं है। मैंने कलम रख दी और शून्य दृस्टि से मकान की दीवार की और देखने लगा। " pg. no. 53
2. "उन्होंने गावँ के मुखिया को बुला कर मेरा परिचय करा दिया , और मेरी ओर से आश्वासन भी दिया। उसके बाद में मुखिया के साथ जाकर गावँ के कुछ प्रमुख व्यक्तियों से मिला।" pg. no 56
3. "मैंने किसी तरह उसे निकला, और लौटकर अपने स्थान पर बैठ गया। लिखना संभव नहीं हुआ , मैंने एक लम्बी साँस लेकर कलम रख दी।" pg. no 57
4. "समतल भूमि के लोग श्रेष्ठता के घमंड से भर कर कहते हैं कि पहाड़ों में क्षयी और मैथुनज रोगों के हो ने का कारण पहाड़ी लोगों का गन्दा जीवन और नीति - भ्रष्ट आचार है।" pg. no 59
5. "एक जीवन में पकड़ पाने केलिए यह एक सत्य बहुत काफी है कि जब सब लालसाएँ झड़ जाती हैं ।" pg. no 64

III. निबंधात्मक प्रश्न -

1. 'मौत की घाटी में' निबन्ध का सारा अपने शब्दों में लिखिए।
2. लेखक के अनुसार "आज देवताओं का अंचल अपना विस्तार भूलकर मौत की घाटी हुआ जा रहा है।" स्पष्ट कीजिए ।

प्रस्तुति : जयकाला, श्री देवी कॉलेज - मंगलूर

7.मातृभूमि - वासुदेव शरण अग्रवाल

लेखक परिचय :-भारतीय संस्कृति और पुरातत्व के विद्वान वासुदेव शरण अग्रवाल का जन्म १९०४ ई में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के खेड़ा नामक ग्राम में हुआ था | काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद एम. ए. पी. एच. डी. तथा डी. लिट् की उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से प्राप्त की । इन्होने पाली, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं एवं उनके साहित्य का गहन अध्ययन किया । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारती महाविद्यालय में 'पुरातत्व एवं प्राचीन इतिहास' विभाग के अध्यक्ष रहे वासुदेव शरण अग्रवाल दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय के भी अध्यक्ष रहे | ऐसे महान हिंदी की विभूति का 1967 में स्वर्गवास हो गया ।

सारांश :- मातृभूमि निबंध के लेखक वासुदेव शरण अग्रवाल ने इस निबंध में भारतवर्ष का गुणगान किया है | इस निबंध रचना को पढ़ने से सम्पूर्ण भारत का दर्शन हो जाते है।

लेखक ने भारत का वर्णन करते हुए कहा है कि - भारत के उत्तर में कश्मीर प्रदेश सुशोभित है । उत्तरी सीमा पर पर्वत श्रंखला है जिसके दूसरी ओर वक्तु और कपीशा नदी है।

कश्मीर खंड की राजधानी श्रीनगर है यहाँ की जलवायु विलक्षण है । कश्मीर के मध्य सिंधु नदी बहती है वही सिंधु नदी के समीप तक्षशिला नगरी थी ।

पंजाब के एक कोने में सुल्तान नगर है जहाँ का मार्तण्ड मंदिर अपने समय का स्थापना कला का अद्भुत उदाहरण है, पंजाब के दक्षिण पूर्व में इंद्रप्रस्थ था | इस प्रदेश में महाराज हिस्तानं ने हस्तिनापुर बसाया था। यमुना नदी के तट पर खड़े होकर देखने से दाहिने हाथ की ओर विशाल राजस्थान है और बाईं ओर संयुक्त प्रांत जहाँ सरस्वती नदी समुद्र से मिलती थी ।

यमुना की बाईं ओर ब्रह्मर्षि देश है। गंगा के तट पर पांचालों की कान्यकुब्ज नामक राजधानी थी । माया, अयोध्या, काशी , कौशाम्बी , श्रावस्ती आदि प्रसिद्ध पूरियाँ यही पर है। शूरसेन राज्य की राजधानी मथुरा योगीराज भवन श्रीकृष्ण की जन्मभूमि है । उत्तर कौशल की राजधानी अयोध्या नगरी में श्री रामचंद्र ने जन्म लिया जहाँ आज भी सरयू नदी अयोध्या के पास से उसी प्रकार बहती हुई अतीत महिमा का संदेश दे रही है । यहाँ से कुछ दूर पर वाल्मीकि मुनि का तपोवन था , जहाँ शब्द ब्रह्म का साक्षात्कार करने वाले प्राज्ञ कवि की वाणी का आदि काव्य रामायण के रूप में अवतार हुआ । संत शिरोमणि तुलसीदास का जन्म भी यहीं हुआ था। इसी काशीपुरी में हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्माण हुआ ।

काशी से थोड़ी दूरी पर धर्म-चक्र प्रवर्तन महाविहार है, जहाँ सर्वप्रथम भगवान बुद्ध ने सती चतुष्टय का सब लोगों के हित और सुख के लिए उपदेश दिया था तथा आर्य अष्टांगिक मार्ग को प्रशस्त किया था । कौशल से थोड़ी दूर उत्तर में शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु थी। कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनीवन उद्यान है जहाँ मायादेवी के पुत्र सिद्धार्थ ने जन्म लिया था। आज भी रुम्मिनिदेई गाँव में अशोक का स्तम्भ उसी स्थान पर प्रतिष्ठित है । इसके पूर्व में बिहार प्रान्त है ।

मगध प्रदेश में 800 वर्षों तक भारत के गौरव की रक्षा करनेवाला प्रधान पाटलिपुत्र नगर है। इसमें देवानां प्रिय प्रियदर्शी महाराज अशोक ने राज्य किया । जिनके पुत्र और पुत्री ने स्वयं तप में दीक्षित होकर धर्मपथ को आलोकित किया , तथा एशिया भूखंड की एकता के स्वप्न को सबसे पहले जिन्होंने सत्यात्मक रूप दिया, उन महाराज अशोक को जन्म देने वाली भारत भूमि हम सब की जन्मभूमि है । बिहार में ही शोण नदी के तट पर स्थित प्रीतिकूट गाँव में महाकवि बाणभट्ट का जन्म हुआ था । जिनकी 'कादम्बरी' नामक 'अद्वितीय कथा' ने अकेले ही संस्कृत गद्य की प्रतिष्ठा रख ली है । हर्ष के मित्र इस ऐतिहासिक गद्यकार ने 'हर्षचरित्र' के द्वारा मध्यकालीन भारत की दशा का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है ।

बिहार के पूर्व में बंग देश है । यहाँ के समतट प्रदेश सदा से गंगा के अनुपम कृपा पात्र रहे है। यहाँ का साहित्य अपूर्व है । काव्य, कला, साहित्य, नाटक, विज्ञान सब में ही बंगीय प्रतिभा का प्रकाश हुआ है। मध्य भारत में मालव प्रदेश है। यहीं आवंती और विदिशा नामक राजधानियाँ है। इसी भाग में सांची और भरहुत के स्तूप हैं। जिनकी शिल्पकला के कारण मातृभूमि का गौरव प्रकट होता है ।

मध्यभारत के दक्षिण भाग में मध्य प्रदेश है। यहीं विंध्य और पटियाल पर्वतों के बीच रेवा नदी बहती है। यहाँ के पर्वतों और एक खण्डों में अभी तक आदिम सभ्यता बसती है। महाकांतार और दण्डकारण्य यही स्थित है जहाँ भगवान श्रीराम,लक्ष्मण और माता सीता ने भ्रमण किया था । इसके दक्षिण में विदर्भ देश है , जहाँ दमयंती और इंदुमती जैसे रमणी रत्न हुए है ।

पश्चिम में उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ महाराष्ट्र देश है । महाराष्ट्र के मध्यभाग में भीम नदी के दक्षिण तट पर पंढरपुर स्थित है । यहाँ ज्ञानेश्वर महाराज ने जन्म लेकर ज्ञानेश्वरी की रचना की । महाराष्ट्र संतों का देश है। एकनाथ, नामदेव आदि महत्मा इसी प्रान्त में उत्पन्न हुए । कविवर मोरोपंत और साधू तुकाराम ने अपने काव्यामृत से महाराष्ट्र वासियों को तृप्त कर दिया । समर्थ गुरु रामदास ने छत्रपति शिवाजी जैसा शिष्य पाकर राष्ट्रीय धर्म की योजना की , सारे मराठों को संघठित करके महाराष्ट्र धर्म को बढ़ाने का उपदेश दिया ।

दक्षिण का द्राविड़ देश भक्ति और ज्ञान का सागर है इस दक्षिण पथ के कई भाग है । गोदावरी और कृष्णा नदी के बीच आंध्र-देश है जहाँ श्री शैल द्राक्षाराम और कालेश्वर के शिवलिंग है । इसी कारण यह तिलंगाना भी कहलाता है | यहीं पर आंजनेय हनुमान का जन्म हुआ था । आंध्रा प्रदेश में मनुष्य का वर्गीकरण उधोगों के अनुसार हुआ था ।

कर्नाटक या तमिल प्रान्त पूर्वी समुद्र तट पर दूर तक फैला हुआ है यहाँ कावेरी, ताम्रपर्णी नदी है, यहाँ ही तृतीय संगम के समय में तिरुवल्लुवर महाकवि ने 'तिरुक्कुरल' ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में कोटि संख्यक मनुष्यों को शांति और नीति की शिक्षा दी है । पश्चिमी सागर के तीर प्रांत पर केरल और मैसूर हिरणवक्षा मातृभूमि के परम प्रिय अंग है । माध्व धर्म के केंद्र इन प्रांतो में पम्पा, रन्ना, लक्ष्मीश तथा नरसिंघाचार्य जैसे भक्त और कवि सम्राट हुए हैं, जिनकी रचनाओं से कन्नड़ भाषा अलंकृत है ।

निष्कर्ष :- इस प्रकार अपने देश भारत के गौरव गान करने वाले वासुदेव शरण अग्रवाल जी अंततः अभिमान से इस निष्कर्ष में पहुंचते है कि ऐसे असामान्य विद्वज्जनों को उत्पन्न करने वाली कला, साहित्य और विज्ञान में उन्नति की चरम सीमा को पहुँची हुई,पोर जनपदों को उत्कृष्ट कक्षा की स्वतंत्रता प्रदान करने वाली भारतभूमि के विषय में देवता भी गीत गाते है । सत्य ,यज्ञ , दीक्षा, तप और ब्रह्म उसे धारण करते है वह हमारे भूत की साक्षी और भविष्य की अधिष्ठात्री है, वह विषमता से रहित होकर नाना प्रकार की वीर्यवती औषधियों का भरण करती है । उसके गिरी पर्वत और अरण्य हमें सुख देते है | उससे जन्म लेकर सब उसीके विराट में विलीन हो जाते है | वही युवा का तेज और युवती का वर्चस है , उसके पथ अनेक है और इनमे सभी समान रूप से चलते हैं |

I. **एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए -**

1. मातृभूमि निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए । (वासुदेव शरण अग्रवाल)
2. भारत के उत्तर में कौन सा प्रदेश सुशोभित है ? (कश्मीर प्रदेश)
3. मानसरोवर और राक्षस ताल किस प्रदेश में हैं ? (हिमालय प्रदेश)
4. कश्मीर के बीच कौन सी नदी बहती है ? (सिन्धु नदी)
5. पंजाब के दक्षिण-पूर्व में कौन सा प्रदेश है ? (इन्द्रप्रस्थ)
6. राणा कुम्भा और राणा साँगा जैसे वीर किस राज्य के हैं । (राजस्थान)

7. लोकपावनी गंगा के बाँये तट पर कौनसा नगर बसी हुई है ? (काशी नगर)
8. मध्यभारत में कौन सा प्रदेश था ? (मालव प्रदेश)
9. पश्चिम में उत्तर से दक्षिण तक फैला प्रदेश कौन सा है ? (महाराष्ट्र)
10. कोशल से थोडी दूर उत्तर में शाक्यों की राजधानी का क्या नाम था? (कपिलवस्तु)

II. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

1. "जब तक पृथ्वी पर गंगा यमुना की वारिधाराएँ हैं,जब तक उन्नत गौरीशंकर की महिमा रहेगी ।"
2. "हिमालय के एक प्रदेश में ही मानसरोवर और राक्षस ताल हैं। मानस की आध्यात्म -महिमा को मातृभाषा के अनेक कवियों ने गाय है ।'
3. "कश्मीर के बीच में सिन्धु नद बहता है। सिन्धु के उस पार केकय और गान्धार देश हैं।"
4. "पंजाब के दक्षिण-पूर्व में इन्द्रप्रस्थ था इस प्रदेश में महाराज में हिस्तनं ने हस्तिनापुर बसाया था।"
5. "इसी पाटलिपुत्र में देवानां प्रिय प्रियदर्शी महाराज अशोक ने राज्य किया।"

III. प्रश्नों का उत्तरा लिखिए -

1. मातृभूमि निबन्ध के सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?
2. मातृभूमि निबन्ध का सार लिखते हुए उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए ?

Dr. R Nagesh, St.Agnes College, Mangalore

8.त्रासदी एक कामना की - नरेन्द्र कोहली

लेखक परिचय :- नरेन्द्र कोहली का जन्म 06 जनवरी 1940 को संयुक्त पंजाब के सियालकोट नगर , भारत में हुआ था ,जो अब पाकिस्तान में है । प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर में आरम्भ हुई और भारत विभाजन के पश्चात परिवार के साथ जमशेदपुर चले आए। बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर और डाक्टरेट की उपाधि ली । 1963 से उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया और वहीं से 1995 में पूर्णकालिन लेखन की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण किया ।

प्रस्तावना :-त्रासदी एक कामना की पाठ नरेंद्र कोहली द्वारा रचित व्यंग्य लेख हैं - इस पाठ में वे यह बताना चाहते हैं कि कुछ लोग अपनी मानोकमना को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं, कहीं भी रह सकते हैं । सार्वजनिक संपत्ति का भी गलत फायदा उठा सकते है।

ऐसे ही एक अध्यापक लेखक के साथ एक ही कालेज में काम कर रहे थे | उनकी एक ही कामना थी । अपने घर में टेलीफोन लगवाना क्योंकि उस जमाने में बिना सिफारिश के यह काम नहीं हो सकता था । इसलिए उन्होंने कालेज के कार्यक्रमों के लिए MP को बुलाकर अपनी यह मनोकामना पूरी कर लेना चाहते थे । उसी संदर्भ को लेखक नरेंद्र कोहली ने मजेदार ढंग से यह लेख प्रस्तुत किया है ।

सारांश :- 1. कालेज में **विज्ञान-परिषद** का उदघाटन के लिए उन्होंने (लेखक नरेन्द्र कोहली साथी अध्यापक) संसद सदस्य (MP) को बुलाया । संसद सदस्य साहब ने विज्ञान

परिषद का उद्घाटन किया ,लेकिन उनके भाषण से कालेज के लड़को को लगा यह विज्ञान परिषद का उद्घाटन न होकर , बिजली चालित उपकरणों को बनाने वाली किसी फर्म का विज्ञापन है ।बच्चों ने शोर मचाना आरम्भ कर दिया । MP साहब नाराज हो गए । लड़को को समझाने का प्रयास किया कि कोई महत्वपूर्ण बात कहेंगे । लेकिन लड़के चुप नहीं हुए । परिणाम स्वरूप MP साहब नाराज हो गए । इस घटना के बाद MP ने टेलिफोन लगवाने के लिए स्वकृति पत्र में हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया ,अध्यापक उदास हो गए । मनोकामना पूरा नहीं हो सकी ।

2. **तुलसी -जयन्ती** के अवसर पर एम्पी को बुलाने एक बार फिर उन्हें अवसर मिला ताकि वे अपने टेलिफोन लगवाने की को मनोकमना पूरा कर सके ।इस अवसर पर उन्हें दो शब्द बोलने का मौका दिया गया एम्पी साहब बोले " वे टेलीफोन की एप्लिकेशन लेकर आए है, आप लोग मेरा अभिनन्दन करना चाहते हैं क्योंकि आज मेरा हैप्पी बर्थडे है । पर लगता हैआप लोग तुलसीदास की जयन्ती मना रहे हैं । मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे देश में साहित्यिक पात्रों को भी इतना मान दिया जाता हैं । निरालाजी मेरे घनिष्ठ मित्र रहे हैं मुझे किसी ने बताया था कि निरालाजी ने तुलसीदास नामक एक पोथी लिखी है , जिसके हीरो तुलसीदास हैं । तो आप उनकी जयन्ती .....।"एम्पी साहब के इस भाषण से लड़के समझ गए थे एम्पी को तुलसीदास के बारे में कुछ पता नहीं है । लडकों ने फिर शोर मचाना शुरु कर दिया । एम्पी साहब आगे बोल नहीं सके, नाराज हो गए, परिणाम स्वरुप अध्यापक की मनोकामना फिर सफल नहीं हो सका ।

3. फोटोग्राफिक क्लब की वार्षिक प्रदर्शनी पर वे फिर एक एम्पी को लेकर आए-- । लेकिन इस बार भी उनका टेलीफोन लगवानें का सपना पूरा नही हो सका। अध्यापक ने लेखक नरेन्द्र कोहली को कहा --- "हर देश में , हर काल में , कभी गड़बड़ हुई , लडकों ने रेल की पटरियाँ उखाडी , टेलीफोन के तार काटे । पता नही इन लोगों को टेलीफोन से इतना वैर क्यों है ?.... मैं दो निष्कर्षो पर पहुँचा हूँ- एक यह कि टेलीफोन बड़ी मेच्योर चीज है क्योंकि इम्मेच्योर लड़के उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते और दूसरी बात यह कि टेलीफोन बडी अहिंसक और शान्तिप्रिय चीज है क्योंकि हिंसा और गड़बड़ के होते ही यह बेचारा कट जाता है ।"

4. अध्यापक ने एक बार फिर प्रिंसिपल को मनाकर **कालेज के वार्षिक खेलकूद** पर अध्यक्षता करने एम्पी साहब को बुलाया । लडकों ने फिर विरोध किया ---"इनका खेल से क्या सम्बन्ध है- देखने में फुटबाल जैसे दिखते हैं ।" परिणाम स्वरुप अध्यापक निराश हो गए ..अपनी इच्छा को त्यागते हुए ...उन्होंने कालेज में एम्पी को लाना छोड दिया । .

5. अब उनका अधिकांश ध्यान अपनी **वेश-भूषा** पर केद्रित होने लगा ... चूड़ीदार पाजामा और कुरता पहनना आरम्भ किया । जब लेखक नरेन्द्र कोहली ने पूछा कि कालेज में एम्पी साहब को

लाना छोड़ दिया । जवाब मिला ---अब आवश्यकता नहीं रही, अब वे एम्पी के फ्लैट् में शिफ्ट कर गया है , वही उन लोगों से भेंट हो जाती है।

धीरे -धीरे लोगों को पता लगा कि वे किसी एम्पी के **आउट हाउस** में शिफ्त कर गए है और उस फ्लैट के साथ लगी जमीन में आलू -पालक उगाते है और उन्हीं सब्जियों को एम्पी सहाब को देकर ,उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास कर रहे है और साथ ही वे एम्पी के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर एम्पी की अगली पीढ़ी को एमपी बनने से वंचित कर रहे थे।

(यहाँ लेखक ने व्यंग्य किया कि एम्पी अधिकतर अनपढ़ होते है और वही नेता बनता है । अगरपढ़-लिख लेगे तो नेतागिरी छोड़ कर और काम करने लगेगें)

6. अन्त: लेखक लिखते है --लोग प्रश्न पूछने लगे कि क्या यह व्यक्ति इतना कुछ एक टेलिफोन के लिए कर रहा है ? जवाब मिलता है टेलिफोन का विचार छोड दिया है । " ऊँची चाल है " जानकार बोला " ये एम्पी कोटे में से **स्कूटर** लेने के चक्कर में हैं । " इस प्रकार उस व्यक्ति की जो कामना थी कभी पूरी नहीं हो पाई। यही उनके जीवन की त्रासदी थी ।

निष्कर्ष- लेखक त्रासदी एक कामना की व्यंग्य लेख द्वारा उन लोगों पर चोट किया हैं जो अपने मानोकमना को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं , कहीं भी रह सकते हैं । सार्वजनिक संपत्ति का भी गलत फायदा उठा सकते है । साथ ही लेखक ने युवा पीढ़ी को भी समझाने प्रयास किया है-, किसी चीज का विरोध करना गलत नहीम होता , विरोध करने का तारिका ठीक होना चाहिए । गलत तरीके जैसे आग- लगाना , मारना-पीटना, टेलिफोन का तार काटना ...आदि गलत हैं ।

I. एक शब्द या एक वाक्य में उत्तरा लिखिए :-

1. त्रासदी एक कामना की निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए । **(नरेन्द्र कोहली)**
2. त्रासदी एक कामना की निबन्ध किस प्रकार का लेख है । **(व्यंग्य -लेख)**
3. अपने घर में कौन टेलीफोन लगवाना चाहता था? **(नरेन्द्र कोहली के साथी अध्यापक)**
4. नरेन्द्र कोहली के साथी अध्यापक एम्पी कोटे से क्या लेना चाहते थे ? **(टेलीफोन)**
5. नरेन्द्र कोहली के साथी अध्यापक घर में क्या लगवाना चाहता थे ? **(टेलीफोन)**
6. कालेज में विज्ञान-परिषद का उदघाटन किस ने किया था? (**संसद सदस्य, (MP)**
7. कालेज में तुलसी -जयन्ती का उदघाटन किस ने किया था? **(संसद सदस्य,(MP)**
8. कालेज में का उदघाटन किस ने किया था? **(संसद सदस्य,(MP)**
9. कालेज के वार्षिक खेलकूद पर अध्यक्षता करने किसे बुलाया गया?**(संसद सदस्य,(MP)**
10. एम्पी कोटे से टेलीफोन लगवाना की कामना पूरा न होने पर क्या लेने के चक्कर में थे? **(स्कूटर)**

II. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

1. "एम्पी साहब को बोलने दीजीए । वे आपको बड़ी अच्छी बातें बताएँगे।"
2 "मेरा तो इम्प्रेशन खराब हो गया न !"
3. "तुलसी जयन्ती जैसे साहित्यिक उत्सव में उस अनपढ़ एम्पी का क्या काम ?"

4. “निरालाजी मेरे घनिष्ठ मित्र रहे हैं । मुझे किसी ने बताया था कि निरालाजी ने तुलसीदास नामक एक पोथी लिखी है, जिसके हीरो तुलसीदास हैं तो आप उनकी जयन्ती …..।”

5 “इनका खेलों से क्या सम्बन्ध है ? ये फुटबाल जैसे दीखते है ।”

III. निबन्धात्मक प्रश्न :

1. त्रासदी एक कामना की निबन्ध के सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

२.त्रासदी एक कामना की निबन्ध का सार लिखते हुए उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए ?

3. त्रासदी एक कामना की में व्यक्त व्यंग्य पर प्रकाश डालिए ।

Dr. R Nagesh, St.Agnes College, Mangalore

I SEM B.SC

SL. NO.	CHAPTER	LECTURER NAME
1.	उसने कहा था और मा	प्रफुल्ला
2.	आकाश दीप और ताई	डॉ. रश्मी
3.	मित्र और तलाश	डॉ. शैलजा

1.उसने कहा था - चंद्रधर शर्मा गुलेरी

हिन्दी साहित्य क्षेत्र के विविध भाषा के ज्ञानी रचनाकार चंद्रधर शर्मा गुलेरी है । गुलेरीजी का जन्म 8 जुलाई 1883 में जयपुर (राजस्थान) में हुआ था । आप संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, लैटिन, और फ्रेंच आदि भाषाओं पर एकाधिकार रखते थे। 12 सितम्बर 1921 में बनारस में उनका स्वर्गवास हो गया।

उनकी प्रमुख कृतियाँ: - गुलेरी रचनावली, (दो खण्डों में), सुखमय जीवन, उसने कहा था , बुध्द का काँटा तीन कहानियाँ है ।

"उसने कहा था"- एक दिव्य प्रेम और एक युध्द की कहानी है । जिसकी शुरुआत अमृतसर के भीड भरे बाजार से शुरु होती है ।जहाँ 12 साल का लडका 8 साल की लडकी को टाँगे के नीचे आने से बचाता है। वह सिख लडका तथा सिख बालिका की अकस्मात मुलाकात एक दुकान पर होती है । दोनों स्वाभाविक रूप से एक दूसरे से परिचय पूछते हैं ।लडका इसी क्रम से बालिका से पूछता है कि " तेरी कुडमाई हो गई " लडकी इसका उत्तर "धत" से देकर शर्माती हुई भाग जाती है । इस तरह दोनों उस बाजार में अनायास ही किसी न दुकान पर मिलते रहते हैं । लडके का वही सवाल लडकी से बार बार होता है । लडकी वही उत्तर देती और चली जाती है । एक दिन लडकी उस प्रश्न का जवाब देती है कि "हाँ हो गई" । यह सुनकर लडका चौंक पडता है और पूछता है कि कब? लडकी कहती है कि " कल देखते नहीं यह रेशम से कढे हुए सालू" कहकर भाग जाती है । वह जवाब सुनकर लडके का मन खिन्न हो जाता है । उसकी मनस्थिति पर इस बात का बडा प्रभाव पडता है । निराश के मारे रास्ते पर जाते जाते अनेक प्रकार के कार्य करता है । वह सब्जीवाले के ठेले पर गिर जाता है । और किसी पर चिल्लाने लगता है । मिट्टी में लोटने लगता है । एक व्यक्ति को नाले में धकेलता है । किसी कुत्ते को पत्थर मारता है। किसी वौष्णवी स्त्री से ट्कराकर गालियाँ खाता है और घर लौट जाता है । फिर कई वर्षो तक वे दोनों एक दूसरे से नहीं मिल पाते ।उस बालक का नाम लहना सिंह तथा बालिका सुबेदारनी के रूप में आगे की कहानी में दिखाई देती है ।

25 वर्षों के बाद कहानी का दूसरा भाग शुरू होता है । लहनासिंह युवक बन गया और लहना सिंह जर्मनी के विरुध्द लडनेवाले सेना में भर्ति हो गया । अब वह 77 नं के राइफल का फौजी का जमादार है ।एक बार वह सात दिन की छुट्टी लेकर अपनी जमीन की किसी मुकदमे की पैरवी के लिए घर आया था । वहीं उसे अपने रेजिमेंट के अफसर की चिट्टी मिलती है कि फौज को युध्द पर जाना है । फौरन जले आओ । इसी के साथ सेना के सुबेदार हजारासिंह को भी च्चिट्टी मिलती है कि उसे

और उसके बेटा बोधासिंह दोनों लाम युध्द पर जाना है । सुबेदार हजारासिंह का गाँव यह यात्रा के रास्ते के बीच में होने से वह उनसे मिलने के लिए उनके घर जाता है। और हजारा सिंह भी उसे बहुत चाहता है । वहाँ से तीनों आगे जाना चाहते हैं । तब सुबेदारनी उससे अकेले में मिलकर तेरी कुडमाई हो गई वाक्य कहकर २५ साल की पहले की घटना की याद दिलाती है । और कहती है कि जिस तरह उस समय उसने एक बार घोडे की लातों से उसकी जान की रक्षा की थी उसी प्रकार अपने पति हजारा सिंह तथा पुत्र बोधासिंह को युध्द मैदान में प्राण रक्षा करने की विनती करती है । वह रोती हुई उसके सामने अपना आँचल पसारकर उन दोनों की जान की भीख माँगती है । यह बात लहना सिंह की दिल छू जाती है ।वह सुबेदारनी वह लडकी थी जिससे उसने बार बार पूछा था कि क्या तेरी कुडमाई हो गई? एक बार उसकी सुप्त प्रेम स्मृति जाग जाती है ।

आदर्श प्रेमी होने के नाते युध्द के मैदान में अपनी जान को खतरे में डालकर लहना सिंह सुबेदारनी का बेटा बीमार बोधा सिंह की प्राण रक्षा करता है। फिर वह नकली पलटन(जर्मन सैनिक) साहब के धोखे में पडकर मौत के खतरे में गिरकर हजारासिंह की मदद करके उन्हें खतरे से बचा लेता है । सुबेदार सहित सभी की रक्षा करते वह बूरी तरह से मृत्यु घातक स्तिथी पहुँच जाता है ।उस गंभीर चोट को साधारण चोट कहकर कमर पर पट्टी बाधता है। परंतु चिकित्सा के लिए वैद्य के पास नहीं जाता है । इसी अवस्था में जर्मन सैनिकों का मुकाबला करता रहा ।शत्रु पक्ष की पराजय के बाद उसने सुबेदारनी के पति और उसके पुत्र को गाडी में सकुशल बिठा दिया। वे चलते हुए कहा कि" सुनिए तो सुबेदारनी को चिट्टी लिखो तो मेरी मत्था टेकना लिख देना और जब घर जाओगे तब कह देना कि "मुझसे जो उसने कहा था उसे मैं ने पूरा कर दिया"। सुबेदार पूछता ही रह गया कि उसने क्या कहा था ? लेकिन लहनासिंह ने वह सच नहीं बताया । उत्तर मिले बिना गाडी चल दी ।अब लहना सिंह को उस पीडा में ही सुख आराम की अनुभूति होती है ।बाद में उसने वजीरा से पानी माँगा और कमरबंद खोलने के लिए कहा । इसी स्थिति में वह मौत के करीब पहुँच जाता है। मृत्यु के समय उसके सामने जीवन की सारी घटनाएँ चलचित्र के समान घूम गई। मौत के समय " उसने कहा था" कहकर संतोष से अंतिम सांस लेता है । इस रूप में यह भावपूर्ण कहानी समाप्त होती है ,कहानी का यह तथ्य बडा ही प्रेम संवेदना पूर्ण है ।

विशेषताएँ:- उसने कहा था - शीर्षक कहानी का मुख्य पात्र लहना सिंह है । संपूर्ण कहानी के तल पर उसके चरित्र का प्रकाश छाया हुआ है । वह एक आदर्श प्रेमी , भावुक युवक, कर्तव्य निष्ट योध्दा तथा विवेकशील व्यक्ति के रूप में अपने नागरिक स्वरूप का परिचय देता है। इसके अतिरिक्त लहना सिंह एक स्वामिभक्त और दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में अपना चारित्रिक

परिचय देता है । उसने कहा था कहानी का स्थान संसार की श्रेष्ट कहानियों में हैं। भाषा , विधान, कथानक, और अभिव्यक्ति चारों अंगों से कहानी पूर्णत: संपन्न है।

I एक शब्द या एक वाक्यमें उत्तर लिखिए:-

१) तेरी कुडमाई हो गई - किसने पूछा था ? बालक

२) पलटन का सुबेदार का नाम क्या था ? हजारासिंह

३) "गनीम" कहीं दिखता नहीं - गनीम का अर्थ क्या है ? दुश्मन

४) लहना सिंह किस में जमादार था ?- ७७ नं राईफल में

५) उसने कहा था कहानी का नायक कौन है ? - लहना सिंह

६) लडाई के समय कौन बी़मार था ? - बोधा सिंह

७) गुलेरीजी का जन्म कहाँ हुआ ? - जयपुर में

९) पलटन का विदूषक कौन था? - वजीरा सिंह

१०) हजारासिंह के बेटे का नाम क्या था ? - बोधा सिंह

११) उसने कहा था - कहानी का लेखक कौन है ? चंद्रधर शर्मा गुलेरी

१२) नकली पलट्न कौन था ? - जर्मन सैनिक

II ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

१) राम राम, यह भी कोई लडाई है? दिन रात खंदकों में बैठे बैठे हाड्डियाँ अकड गई ।

२) जैसे मैं जानता ही न होऊँ , रात भर तुम अपने दोनों कंबल उसे उढाते हो और आप सिगडी के सहारे गुजर करते हो ।

३) मेरा डर मत करो, मैं तो बुलेल कि खड्ड के किनारे मरूंगा

४) आठ नहीं दस लाख होंगे, एक एक अकालिया सिक्ख सवा लाख के बराबर होता है,चले जाओ ।

III निबन्धात्मक प्रश्न :-

१) "उसने कहा था" - कहानी का सार लिखकर उसकी विशेषता का परिचय दीजिए।

२) "उसने कहा था" - कहानी का सार लिखकर कहानी का उद्देश्य और संदेश को स्प्ष्ट कीजिए।

३)"उसने कहा था" - कहानी के अधार पर लहना सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए ।

४ "उसने कहा था"- शीर्षक कहानी के अधार पर कहानी के मुख्य पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए ।

<u>प्रफुल्ला.बी, विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, भंडारकार्स महाविद्यालय, कुन्दापुर.</u>

2. माँ - प्रेमचन्द

प्रेमचंद का जन्म 3 जुलाई 1880 में बनारस लमही गाँव में हुआ था। आपका असली नाम धनपतराय था । प्रेमचंद उनका साहित्यक नाम था। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचंद ने उपन्यास, नाटक, कहानी समीक्षा, लेख,संस्मरण, संपादकीय आदि अनेक विधाओं में साहित्य

सृष्टी की । इन्होंने करीब सवा दो सौ कहानियाँ लिखी, जिन्हें 'मानसरोवर' (कुल आठ भाग) में संग्रहित किया गया है।प्रेमाश्रम, सेवासदन,निर्मला, गोदान, कर्म भूमि, रंगभूमि इनके बहुचर्चित उपन्यास हैं ।कथाकर के तौर पर उनकी ख्याति से वे अपने जीवन काल में ही 'उपन्यास साम्राट' तथा "कलम का सिपाही ' उपाधी से सम्मानित हुए थे। 8 अक्टोबर 1936 को उनका देहावसान हो गया ।

कहानी "माँ" स्री के दो रूप - पत्नी और माँ की मानसिक परिस्थिति का विश्लेषण की कथन की है ।कहानी हमें एक मजबूत महिला चरित्र को प्रस्तुत करती है। वह एक पत्नी और एक मां दोनों के रूप में अपनी भूमिका कुशलता से निभाती है । कहानी की नायिका देखभाल करने वाली, प्यार करने वाली, दिल से मजबूत, और शक्तिशाली व्यक्तित्व की है ।वह अपने पति और बेटे के लिए अपना पूरा जीवन बलिदान कर देती है। अपनी जीवन को कटिनाईयों के तूफानों से गुजारते हुए भी वह पीछे हटे बिना जीवन में स्थिर आ रही थी ।

कहानी का मुख्य चरित्र 'करुणा" अपने पति आदित्य को बेसब्री से इंतजार करती है । आदित्य ब्रिटिश सरकार के खिलाफ भारत के लोगों के लिए काम करता था। इसीलिए उसे 3 साल के पहले ब्रिटिश सरकार के गिरफ्तारी से जेल में रहना पडा था। आज वह मुक्त होकर घर लौटने वाला है ।करुणा अपने पति की सेवा खूबी से करना चाहती है। इसलिए अपना घर को साफ करके मुश्किल से इकट्ठे की गई दस -पाँच रुपयों से घर को सजाकर , पति के चाह के चीजों को खरीदकर आदित्या का स्वागत करना चाहती है। करुणा अपने छोटे बेटे को गले लगा कर सोचती है कि इन सब जंजटों के बीच वह अपना जीवन का एकमा प्रकाश है, पति जेल जाने के तीन महीने में प्रकाश का जन्म हुआ था । वह सोचती है कि अपने जीवन में वह न होता तो अंधेर जीवन में प्रकाश न होता था । क्योंकि इन 3 वर्षो से उसने बहुत कुछ जेला था, लेकिन अपने बेटे को देखकर उन्हें बर्दाश्त कर ली थी। वह सोचती है कि पति आदित्य आ रहा है, बेटे को देखकर अति प्रसन्न हो जाएगा और कहेगा कि करुणा ने उसे दुनिया की हर दौलत दी है।

लेकिन जब आदित्य आया,तब ऐसा कुछ भी नहीं हुआ ।क्योंकि आदित्य बहुत कमजोर होकर, कंकाल बनकर किसी एक लकडी के सहारे मुश्किल से कदम खाँसता हुआ आ रहा था। वह हड्डियों का ढाँचा बन गया था। करुणा को उसे देखकर बहुत आश्चर्य हुआ और वह अपनी आंखों पर ही विश्वास न कर पाई। उसका सारा उत्साह आँसूओं के प्रवाह में विलीन हो गया।

आदित्य ने अपने बेटे को देखा और सोचा कि एक अच्छा जिम्मेदार पिता होने का भाग्य मुझे नहीं है, मैं एक दोषी पिता हूं और सोचा कि यह लड़का यह बेजिम्मेदार पिताजी

के प्रति निंदा करेगा। करुणा उसे डाक्टर के पास ले जाना चाहती है । परन्तु आदित्या मना करता है ।

करुणा के साथ जीवन भाग्य अनुचित था। वह लगातार बिगड़ता गया अर्थात कुछ ही दिनों में वह तपेदिक से मर जाता है ।

मरने के पहले आदित्य अपने जीवन के बारे में करुणा से पूछता है कि " तुम्हारे विचार में मेरा जीवन कैसा था? बधाई के योग्य ? करुणा ने उत्तर दिया कि वह एक महान जीवन जिया था उसने यह भी कहा कि यदि मुझे किसी को आशीर्वाद देने के लिए कहा जाता है उसका जीवन तुम्हारा जैसा हो। उसके पति ने देश की सेवा की है , उस पर अभिमान है और उसका दिल सुनहरा है

करुणा विधवा होने पर अपना सारा दर्द दुख को दबाकर अपने बेटे के पिता- माता दोनों बनने के लिए खुद तैयार हो गई। यह काम करते हुए वह सदा ही व्यस्त रह गई। गाय को पालने का अनुभव उसे होने पर उसी को अपनी जीविका का साधन बनाया । गाय के दूध बेचने का काम उसने शुरू की, दिन रात काम करके एक-एक पैसा इकट्ठा करने लगी ।

उसके बेटे का नाम प्रकाश रखा गया था। इकलौता बेटा , घर का आधार बनेगा, पिताजी का नाम रखेगा आदि विश्वास के द्वारा वह हर दिन काम करके मदद करती थी। क्योंकि बेटा ही उसके लिए सब कुछ था और इसी से वह अपने दुख को बूलती थी । बेटे को जो भी चाहिए उन्हें मांगने के पहले दिया करती थी । उसके पुत्र स्नेह में माता की ममता के साथ पिता की कठोरता भी मिली हुई है ।

उसे याद आया कि पति आदित्य ने उसे यह जिम्मेदारी छोड़ कर गया है उसकी देखभाल करना अपना कर्तव्य है। वह चाहती थी कि बेटा देश की सेवा करने के लिए तैयार होना चाहिए ।

लेकिन प्रकाश अपने पिताजी से विरुद्ध स्वभाववाला था । वह उनकी बातों का अनुसरण ना करना चाहता था। लेकिन पिताजी के बारे में बहुत सोचता था राष्ट्र की सेवा में पैसे कमाना असाध्य है ।वहां पर जान व जीवन को जोखिम में रखना पड़ता है । वह सोचता है कि देश सेवा के बजाय खुद की पढ़ाई उसे एक बेहतर जीवन दे सकती है।

वह पढ़ने में बहुत बुद्धिमान था और स्कूल में छात्रवृत्ति प्राप्त करता था। इधर अपनी मां से भी पैसे प्राप्त करता था ।परंतु ये दोनों उसे संतुष्ट न कर सके। वह सरल जीवन निभाने के अलावा फैशनेबल दुनिया से बहुत प्रभावित था । हमेशा उसी के पीछे पड़ता था।

यहां तक कि वह किसी भी चीज की कुर्बानी करने से नफरत करता था,गरीबों से घृणा करता था। करुणा चाहती थी कि उसका बेटा उसके पिता जैसा हो जो देश की सेवा करे। उसे हमेशा अपने भाग्य से धोखा मिली थी इस बार उसके साथ कुछ अलग नहीं हुआ।

जब सिंध में बाढ़ आई तो प्रकाश के स्कूल से वहां के लोगों की मदद के लिए एक टीम बनाई। प्रकाश ने बहाना बनाया कि वह बीमार था और परीक्षा के लिए पढ़ने के लिए रुक गया ।करुणा को प्रकाश के निर्णय से दुखी हुई। बाद में एक और घटना घटी। जब ओडिशा में अकाल पड़ा कांग्रेस ने वहां के लोगों की मदद के लिए कुछ योजना बनाई। करुणा ने प्रकाश से ओडिशा जाने के लिए कहकर पत्र लिख भेजा । लेकिन वह विद्यालय द्वारा आयोजित इतिहास के किसी शोध कार्य के लिए श्रीलंका गया । यहाँ फिर एक बार करुणा को निराश किया।

प्रकाश ने यह कह कर उन्हें दिलासा देने की कोशिश की कि वह राष्ट्र की सेवा करने के लिए एक महान विद्वान बनने की कोशिश कर रहा हैं। यह भी कहा कि विद्वानों का हमेशा सम्मान किया जाता है इसलिए भी वे लोगों की सेवा करना चाहतते हैं। और उसे आसानी से करना चाहता है। करुणा को इस बात पर थोड़ा सा उम्मीद थी लेकिन फिर निराश हुई ।

विद्यालय खुलते ही प्रकाश के नाम एक रजिस्ट्री का पत्र मिला ।उसमें प्रकाश इंग्लैंड जाकर अध्ययन करने के लिए सरकार ने वजीफे की मंजूरे की सूचना दी थी । उसके बाद वह मैजिस्ट्रेट बन सकता है । उसने अपनी मां को समझाया कि देश के लिए काम करने वाले व्यक्ति को उतना आत्म सम्मान नहीं मिल सकता जितना कि मैजिस्ट्रेट को मिल सकता है। एक मैजिस्ट्रेट किसी और की तुलना में अपने देश की बेहतर तरीके से सेवा कर सकता है ।उसने उससे कहा कि एक मजिस्ट्रेट कमाने के लिए शक्तिशाली पद है वह इस मौके को कभी नहीं गवाँ सकता है ।

प्रकाश खुद को सही समझाने के लिए बहुत सारे स्पष्टीकरण देने की कोशिश की।लेकिन करुणा अब भी इस सोच में फंसी हुई थी कि उसके पति को एक मजिस्ट्रेट ने गिरफ्तार कर लिया था ।उसने कहा कि मैजिस्ट्रेट वह है जो राष्ट्र की सेवा करने वाले निरीह लोगों को दंडित करता है ।करुणा ने उससे कहा कि सरकार कभी भी उनके कर्मचारियों को यह तय करने का अधिकार नहीं देती कि क्या करना है , वहाँ कर्मचारी सरकार के निर्देशों के अनुसार काम करता है । अगर वह एक मैजिस्ट्रेट इस नीति के विरुध्द काम करता है तो वह मेजिस्टेट न रहेगा ।

उसने याद दिलाया कि इसी सरकार ने उनके पिता की जान ले ली है । इसके बजाय उसे एक साधारण जीवन करते हुए जरूरतमंद लोगों की सेवा करने का अनुरोध करती

है ।वह उसे समझाती है कि एक लड़की सोचती है कि उसके पिता का घर उसका अपना घर है ।लेकिन एक बार जब उसकी शादी हो जाती है तो वह उसी घर को अपना घर नहीं सोच सकती वह अपने पति के परिवार के सदस्य बन जाती है ।अगर वह एक मजिस्ट्रेट बन जाता है तो वह कभी भी राष्ट्र की सेवा नहीं कर सकता है और वह वही होगा जिसने अपने पिता को गिरफ्तार किया था। इस काम से कभी स्वतंत्र नहीं हो सकता।

प्रकाश कुछ जवाब दिए बिना रिजिस्टार को प्रस्ताव का इन्कारी पत्र लिख भेजा। लेकिन वह इसे मामले से परेशान और उदास बन गया। उसका चेहरा नीरस बना हुआ था और अंदर ही चिंगारी रही थी।प्रकाश खुद को घर में बंद बना रहा, न बाहर जाता ,न बोलता, न कौर खाता। करुणा प्रकाश की स्थिति को समझ सकती थी और उसे कुछ करने की भी कोशिश की लेकिन कुछ ना हो पाया ।

एक दिन करुणा ने उससे पूछा कि "तुम्हारी जाने की इच्छा है जाओ ।अपने जीवन के बीस वर्ष तुम्हारी हित कामना पर अर्पित कर दिए।अब तुम्हारी महत्वाकाक्षा की हत्या न कर सकती । तुम्हारी यात्रा सफल हो यही मेरी अभिलाषा है " वह सिर्फ उसे राष्ट्र की सेवा करते हुए देखना चाहती थी, आदित्य चाहते थे कि उनका बेटा देश की सेवा करें और उसने भी ऐसा ही किया। वह सिर्फ अपने पति के सपने को पूरा करना चाहती थी।

उसने उसे मैजिस्ट्रेट को एक पत्र लिखने और अपने चाहत का पालन करने के लिए कहा।उसकी इच्छा के बिना उसका अनुसरण करने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रकाश ने पत्र लिखने से इनकार कर दिया। करुणा घर से निकली और रजिस्ट्रार की चिट्ठी लेकर देर से वापस आ्यी।

करुणा लौटने में देर होने पर प्रकाश चिंतित था और इसके लिए खुद को दोषी भी महसूस कर रहा था। लेकिन पत्र देखते ही वह सब कुछ भूल गया और जाने की तैयारी करने लगा। करुणा ने अपने बेटे के लिए सारी व्यवस्था कर ली थी । वह अंदर ही अंदर टूट चुकी थी। लेकिन वह जानती थी कि वह किसी को किसी भी चीज के लिए मजबूर नहीं कर सकती और प्रकाश ने तो पहले ही सब कुछ तय कर लिया था , वह प्रकाश को दुख नहीं दे सकती थी।

प्रकाश की इंग्लैंड जाने के बाद करुणा के जीवन में एक नया मोड़ आया ।उसे हर उस चीज से छुटकारा पाने की कोशिश की ।जिस ने उसे अपने छोटे परिवार के बारे में याद दिलाया ।उसकी छोटे से परिवार को बड़ा बना दिया।उन्होंने गांव के बच्चों की मदद की उसने अपने आसपास के सभी जानवरों को भोजन दिया , वह अपने आसपास के हर प्राणी की माँ बनी।

एक दिन उसे प्रकाश का एक पत्र मिला उसने पत्र फेंक दिया । बाद में उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिया। लेकिन उसके दिल में अभी भी अपने बच्चे के लिए अपार प्यार था।वह उसके लिए सब कुछ था वह पत्र पढ़ना चाहती थी उसने उन टुकड़ों को अपने दिल के टुकड़ों की तरह इकट्ठा करके पत्र को फिर से बनाने की पूरी कोशिश करने लगी। जैसे कोई वियिगी ह्रदय के टूटे हुए प्रेम को जोड रहा हो। 3 दिनों तक उसने उस चिट्टी को फिर से बनाने की कोशिश की। लेकिन नहीं बना पायी । उसकी थकी हुई आंखें कुछ देर सोई और एक स्वप्न देखा। स्वप्न में उसने एक व्यवस्थित जगह देखी जहां एक आदमी कुर्सी पर बैठा था ,वह आदमी प्रकाश था , वह एक आदमी को खैद करके लाया है, जो आदित्य था उसकी आंखें पीड़ा में खुल जाती है

करुणा का पूरा जीवन एक त्रासदी था वह दिव्य मजबूत महिला थी । जो हर चीज से लड़ती थी वह अपने बेटे से इतना प्यार करती थी कि उसने कभी भी उसकी इच्छा की परवाह नहीं की और उसे वह करने दिया जो वह चाहता था ।उसने पत्र के उन सभी टुकड़ों को समेटकर जलाकर राख कर दिया ।इस राख ने उसका बचपन, विधवा जीवन, उसकी मातृत्व की लड़ाई सब को उसमें समा लिया। उस रात अपने पति के चित्र को अपने ह्रदय में रखते हुए उसकी आत्मा ने शरीर छोड़ दिया।

कहानी की विशेषताएं :-

इस कहानी में करुणा को एक बिम्मेदार पत्नी और माँ के रूप में चित्रित किया गया है । जीवन के अंत तक वह अपने कर्तव्य को निभाती है । लेखक आदित्य के मुँह से करुणा का प्रशंसा इस प्रकार कराते हैं। - " इस बच्चे की ओर मुझे कोई शंका नहीं है , उसे इससे कुशल हाथों में नहीं छोड सकता ,मुझे विश्वास है कि जीवन का यह ऊंचा और पवित्र आदर्श तुम्हारे सामने रहेगा । अब मैं मरने को तैयार हूँ । "

करुणा का पत्नी से बढकर माँ का रूप उज्ज्वल बन पडा है । बेटे प्रति वह कितना प्रेम रखनेवाली है । नारी नदी के समान पवित्र तथा सदृढ है, एक पत्नी और मां होने के नाते एक महिला सबसे अधिक देखभाल करने वाली मजबूत और शक्तिशाली है ।वह सबसे प्यारी थी और कठिन संदर्भ में परिस्थिति को जेलना वह जानती थी। इसका अच्छा सा तथा आदर्श उदाहरण इस कहानी का मुख्य पात्र करुणा है । माता पित्ता के त्याग बलिदान ममता आदि पर कोई मूल्य रखे बिना स्वार्थि बननेवाले तथा धन दौलत, उच्छ पद की आकांक्षा रखने वाले, और पारिवारिक बन्धुत्व, जिम्मेदारी आदि को भूलकर माँ - बाप को दूर करनेवाले युवाओं को सचेतन करने की कहानी है ।

एक शब्द अथवा एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

१) करुणा के पति का नाम क्या है ? - आदित्य

२) आदित्य कहाँ से मुक्त होकर आ रहा था ? - जेल

३) आदित्य जे्ल में कितने साल रहा था?- तीन साल

४) आदित्य के बेटे का नाम क्या था ? प्रकाश

५) आदित्य जेल जाने के कितने समय के बाद प्रकाश का जन्म हुआ?- तीन महीने के बाद

६) करुणा प्रकाश को क्या बनाना चाहती थी ? - देश सेवक

७) ऐतिहासिक शोध करने के लिए प्रकाश कहाँ गया - सिलोन या श्रीलंका

९) कहाँ बाढ आयी ? सिंध में

१०) सरकारी वजीफा किसे मिला ? प्रकाश

११) प्रकाश को कहाँ जाकर पढने के लिए सरकारी वजीफा मिला ? इंगलैंड

१२) करुणा कहानी का लेखक कौन है ? - प्रेमचंद

ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :-

१) यह न पूछो करुणा बडी करुण कथा है । बस यही गनीमत समझो जीता लौट आया ।

२) सेवा भाव रखने वाला एक मैजिस्ट्रेट काँग्रेस के एक हजार सभापतियों से ज्यादा उपकार कर सकता है ।

३) तुमने अगर शुध्द मन से यह इरादा किया होता तो यों न रहते ?

४) मुझे खेद है कि मै ने तुम्हें रोका। अगर मैं जानती कि तुम्हे इतना आघात पहुँचेगा तो कभी न रोकती ।

५) मैं ने आज बुढिया के साथ बडी नटकटी की , मुझे क्षमा करो फिर कभी ऐसी शरारत न करूँगा ।

निबन्धात्मक प्रश्न :-

१) " माँ " कहानी का सार लिखकर उसकी विशेषताओं को लिखिए ।

२) " माँ " कहानी का सारांश सहित कहानी में प्रकाशित संदेश का वर्णन कीजिए ।

३) " माँ " कहानी के आधार पर करुणा का चरित्र चित्रण कीजिए ।

४) " माँ " कहानी के आधार पर प्रकाश का चरित्र चित्रण कीजिए ।

५) " माँ " कहानी में करुणा एक नारी तथा पत्नी के रूप में चित्रित है- वर्णन कीजिए।

<u>प्रफुल्ला.बी, विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, भंडारकार्स महाविद्यालय, कुन्दापुर.</u>

3. आकाश दीप - जयशंकर प्रसाद

सारांश : आकाश दीप कहानि का शीर्षक संक्षिप्त, सरल और कौतूहलवर्धक है । 'आकाशदीप' शब्द में ही कहानी का कथानक समाया हुआ है । इसका सीधा सम्बन्ध कहानि की मूल

चेतना से है । कहानि की सभी मूल घटनाओं का केन्द्र चम्पा द्वारा 'आकाशदीप' ही हैं । कथा के अनेक वैशिष्ट्यों को अपने में समाविष्ट करने के कारण शीर्षक उपयुक्त एवं समीचीन है ।

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'आकाशदीप' शीर्षक कहानि का कथानक चम्पा और बुधगुप्त के जीवन और कार्य के इतिवृत्त पर आधारित है । चप्मा मणिभद्र के दिवंगत प्रहरि की क्षत्रीय कन्या है । बुधगुप्त ताम्रलिप्ति का क्षत्रिय कुमार है । दोनों ही जलपोत पर बन्दी के रूप में रहते हैं । कहानिकार ने इस कहानि के कथानक को क्रमबद्धता देने के लिए छ उपभागों में विभाजित किया है ।

समुद्र में अपने गन्तव्य पर जा रहे पोत पर दो बन्दी दस नाविक जौर कुछ प्रहरी है । आधी-तूफान आने की सम्भावना है । एक बन्दी, दूसरे से पूछता है कि मुक्त होना चाहते हो । दूसरा पूछता है कि शस्त्र मिल जाएगा । एक बन्दी अपने को स्वतन्त्र कर दूसरे के बन्धन खोलता है और हर्ष से दूसरे को गले लगा लेता है । पता दलता है कि वह स्त्री है । वह आश्चर्य होता है । पूछने पर वह अपना नाम चप्मा बताती है और एक नाविक के शरीर से टकराकर वह उसके कृपाण निकाल लेती है । उसी समय भयंकर आधी आती है ।

एक बन्दी पोत से जिडी नाव को अलग करता है । दोनों बन्दी, पोत के कुछ नाविक और उनका नायक नाव पर आ जाते हैं और पोत अपने अध्यक्ष मणिभद्र के साथ ही समुद्र में डूब जाता है । प्रात: होने पर नायक देखता है कि बन्दी मुक्त हो चुके हैं । बन्दी का नाम बुधगुप्त है, जो कि एक जलदस्यु है । नायक बुधगुप्त को बन्दी बनाना चाहती है । दोनों में वर्चस्व के लिए युद्ध होता है, जिसमें बुधगुप्त विजयी होता है । नाकय स्वयं को बुधगुप्त का अनुचर स्वीकार करता है । चप्मा बुधगुप्त को स्नेहिल दृष्टि से देखती हैं । चलती हुई नौका भाली द्वीप से दूर एक नवीन द्वीप पर पहुचती है । बुधगुप्त उस द्वीप का नाम चम्पा द्वीप रखता है । द्वीप के मार्ग में ही दोनों चम्पा और बुधगुप्त एक्दूसरे को अपना परिचय देते हैं । बुधगुप्त के मन में चम्पा के प्रति कोमलता उत्पन्न होती है । वह स्वयं में भी परिवर्तन अनुभव करता है ।

धीरे-धीरे दोनों के पाच वर्ष उसी द्वीप पर व्यतीत हो जाते हैं । बुधगुप्त का समीम के बाली, सुमात्रा जाना द्वीपों पर वाणिज्य का अधिकार हो जाता है । चम्पा उसे महानाविक कहती है । एक शाम चम्पा द्वीप के किसी उच्च स्थान पर ब्नैठकर आकाशदीप जला रही होती है कि बुधगुप्त आता है और आकाशदीप के लिए उसकी विचित्र ह्सी उडा देता है । इस पर चम्पा नाराज़ होती है और उसे अपनी माता द्वारा पिता के लिए जलायें जाने वाले आकाशदीप का इतिहास बताती है तथा दस्यवृत्ति छोड देने के बाद भी ईश्वर की ह्सी उडाने के लिए व्यंग्य-बाणों से प्रताडित करती है ।

एक दिन चम्पा और जया (जया चम्पा की एक सेविका का नाम था) एक छोटी नौका में समुद्र में चलते है । सूर्यास्त हो जाता है । पास ही एक बडी नौका पर स्थित बुधगुप्त चम्पा को उस पर चढा लेता है और उसके पास बैठ छलछला आयी । आखों से प्रेमपूर्ण

निवेदन करता है । चम्पा रो पडती है और स्वीकार करती है कि वह भी उससे प्यार करती है । बुधगुप्त इस प्रेमपूर्ण क्षण की स्मृतिस्वरूप समुद्र में एक प्रकाश गृह का र्मिाण कराने के लिए कहता है । चम्पा द्वीप के दूसरे भाग में एक पर्वत-श्रंखला थी । सम्पूर्ण द्वीप को किसी देवी की भाति सजाया गया था । पर्वत के ऊचे शिखर पर एक द्वीप-स्तम्भ बनवाया गया था । उसी के समारोह में चम्पा वहीं समारोह-स्थल पर पालकी से जा रही थी । बुधगुप्त से अत्यधिक प्रेम करते हुए भी वह मानती थी कि वही उसके पिता का हत्यारा है । बुधगुप्त उसके सम्मुख स्वीकार करता है कि वह उसके पिता का हत्यारा नहीं और उससे विवाह के लिए निवेदन करता है । वह कहता है कि इस द्वीप पर इन्द्र और शची की तरह पूजीत वे दोनों आज भी अविवाहित है । वह उसे उस द्वीप को छोडकर स्वदेश भारत चलने के लिए कहता है । चम्पा उसे मना कर देती है और कहती है कि वह यही रहेगी । बुधगुप्त कहता है कि वह यहा रहकर अपने हृदय-पर अधिकार नहीं रख सकता । उसकी सासों में निकलती थी । चम्पा उससे इसी द्वीप में रहकर आकाशदीप की तरह स्वयं जलने के लिए कहती है ।

एक दिन प्रात: बुधगुप्त अपनी नौकाओं को लेकर द्वीप छोडकर चला जाता है । चम्पा की आखों से आसु बहने लगते हैं । चम्पा उसी द्वीप स्तंभ में जीवनपर्यन्त दीपक जलाती रही । द्वीप के निवासी उसकी देवी सदृश पूजा करते थे ।

निष्कर्ष : प्रसाद जी का साहित्य आदर्शवादी है । प्रस्तुत कहानी में भावना की अपेक्षा कर्तव्यनिष्ठा का आदर्श प्रस्तुत किया गया है । चम्पा एक आदर्श प्रेमिका है और इन सबसे ऊपर है उसका उत्सर्ग भाग । वह अपने कर्तव्य का पालन करती हुई अपने व्यक्तित्वा प्रेम और जीवन को समर्पित कर देती है । उसकी चरित्र एक आदर्श उदात नारी का चरित्र है । कहानिकार का उद्देश्य उसके चरित्र के माध्यम से समाज में प्रेम का आदर्श स्वरूप उपस्थित करना है । जिसमें कहानीकार को पूर्ण सफलता मिली है । इस प्रकार 'आकाशदीप' कहानी की कथावस्तु जीवन्त तथा मार्मिक है । वह अपने प्रेम का बलिदान करती है तथा प्रेम के गौरव की रक्षा के लिए स्वयं का आत्मोत्सव भी करती है । यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी; कहानी-कला की कसौटी पर खरी उतरती है ।

<u>प्रस्तुति : डा. रश्मी बी.वी, मंगलूर वि.वि. कालेज, मंगलूर</u>

4.ताई

लेखक परिचय: विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' का जन्म सन् 1899 ई. में अम्बाला (पंजाब) में हुआ। ये प्रेमचन्द की परम्परा के कहानीकार हैं। ये उर्दू लेखन से हिन्दी में आये। इनकी प्रथम कहानी संग्रह 'रक्षाबन्धन' सन् 1913 में प्रकाशित हुई। 'कल्प मन्दिर', 'चित्रशाला', 'प्रेम-प्रतिज्ञा', 'मणिमाला' और 'कल्लोल' नामक संग्रहों में कौशिक जी की दो सौ से अधिक कहानियाँ संग्रहीत हैं। उन्होंने हास्य-व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ भी लिखीं जो 'चाँद' में दुबे जी की चिट्ठी' के रूप में प्रकाशित हुई थीं।

कौशिक जी की कहानियों में पारिवारिक जीवन की समस्याओं और उनके समाधान का सफल प्रयास हुआ है। उनकी कहानियों में पात्र हमारे यथार्थ जीवन के जीते-जागते लोग हैं जो सामाजिक चेतना से अनुप्राणित तथा प्रेरणादायी हैं। इनकी भाषा सरल और स्पष्ट है तथा शैली में सरसता, सहजता और रोचकता विद्यमान है। इनकी कहानियाँ अपनी मूल संवेदना को पूर्ण मार्मिकता के साथ प्रकट करती हैं। इनका निधन सन् 1945 में हुआ।

कहानि का सारांश : 'ताई' कहानि एक संयुक्त परिवार कि कहानि है। कहानि के प्रमुख पुरुष पात्र बाबू रामजीदास कपड़े की आढ़त का काम करते हैं। रामेश्वरी इनकी पत्नी है जो कहानी की नायिका 'ताई' के रूप में जानीजाति हैं।ताई के देवर कृष्णदास को पुत्र मनोहर, ये तीनों सक्रिय और महत्त्वपूर्ण पात्र हैं। इनके अतिरिक्त चुन्नी, ताई की देवरानी और देवर कृष्णदास का केवल नामोल्लेख किया गया है। इस प्रकार पात्रों की भीड़ न होकर उचित संख्या है। बालक मनोहर का चरित्र बाल-मन के अनुकूल सरल, कोमल और बाल-सुलभ चेष्टाओं से परिपूर्ण दर्शाया गया है।

रामेश्वरी निस्संतान होने के कारण दु:खी रहती है तथा अपने देवर के बच्चों के प्रति ईष्र्या और द्वेष का भाव रखती है। बालक मनोहर अपने ताऊजी से रेलगाड़ी वाला खिलौना लाने को कहता है। बाबू साहब पूछते हैं कि रेलगाड़ी का क्या करोगे तब मनोहर उसमें बैठकर बहुत दूर जाने की बात कहता है। बालक अपने ताऊ का लाड़ला है , वे भी उसे खूब प्यार करते हैं परन्तु रामेश्वरी उससे ईर्ष्या-द्वेष रखती है।

बाबू रामजीदास और रामेश्वरी में सन्तान की बात पर तर्क-वितर्क होती तोबाबू रामजीदास पत्नी को समझाते हैं कि भाई के बच्चों से प्यार करना चाहिए। इन्हें भी अपनी ही सन्तान समझना चाहिए। यह सुनकर रामेश्वरी और अधिक चिढ़ जाती है। वह कहती है कि पराये धन से घर नहीं भरता। तुमने तो किसी पण्डित का कहना भी नहीं माना, न कोई व्रत, न पूजा-पाठ करते हो कि अपनी खुद की सन्तान हो जाये। रामजीदास इन अंधविश्वासों को व्यर्थ बताते हैं।

रामेश्वरी द्वारा बाबू साहब से मार्मिक प्रश्न करना-अनेक तर्क रहता है वितर्क के पश्चात् रामेश्वरी ने रामजीदास से पूछा कि क्या तुम्हारे जी में कभी सन्तान की इच्छा नहीं होती। बाबू साहब इस दिल को छू लेने वाले प्रश्न पर कुछ देर चुप रहने के बाद बोले ऐसा कौन मनुष्य होगा जो अपनी सन्तान का मुख नहीं देखना चाहेगा। परन्तु जब भाग्य में अपनी सन्तान नहीं है, तो भाई की सन्तान के प्रति अपनत्व रखकर सन्तोष कर लेना चाहिए।

रामेश्वरी के हृदय में मातृत्व का अन्तर्निहित भाक्यद्यपि रामेश्वरी माँ नहीं बनी थी, परन्तु माँ की ममता, प्यार आदि मातृत्व के गुण उसके हृदय में विद्यमान थे। एक दिन जब दोनों बच्चे खेलते हुए उसकी गोद में आ गये तो उसने उसी तरह हृदय से लगा लिया मानो वे उसकी अपनी सन्तान हों। उसने उनको खूब प्यार किया जैसे वर्षों की प्यास बुझाई हो।

एक दिन रामेश्वरी छत पर खड़ी थी। तभी पतंग लूटने के प्रयास में बालक मनोहर नीचे जा गिरा। इस घटना से रामेश्वरी का हृदय बिलकुल परिवर्तित हो गया। उन बच्चों के प्रति उसके मन में घृणा, ईर्ष्या और द्वेष के स्थान पर ममता और प्यार

का अजस्र स्रोत फूट पड़ा। वह मनोहर को अपनी सन्तान के समान ही प्रेम और दुलार करने लगी। मनोहर की बहन चुन्नी को भी वह खूब प्यार करने लगी। उसकी सारी ईष्र्या ममत्व में बदल गयी।

निष्कर्ष :- कहानी की नायिका ताई-रामेश्वरी नि:संतान स्त्री का पात्र है, जो नारी सुलभ ईष्र्या, द्वेष, घृणा, अन्धविश्वास, रूढ़ियों आदि से आक्रांत होते हुए भी ममता, प्रेम, करुणा आदि भावों से युक्त है, यद्यपि ये श्रेष्ठ भाव उसके हृदय में छिपे हुए हैं। कहानी के प्रमुख पुरुष पांत्र बाबू रामजीदास सरल, स्नेही, विवेकशील और संतोषी स्वभाव के हैं। इन सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण कथानक के अनुरूप किया गया है। ये अपने समाज में हर कहीं दिखाई देने से विश्वसनीय पात्र लगते हैं। इस प्रकार कौशिक जी ने 'ताई' कहानी में पात्रों का संयोजन सुन्दर और उचित रूप से किया है।

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:-

1) पति को बच्चों में मग्न होते देखकर किसकी भावे तन गई? ---रामेश्वरी
2) रामेश्वरी के मन में कौन सा अभाव हमेशा खटकता था? --- संतान का।
3) ताऊ जी से रेलगाड़ी किसने मांगा? ---बालक मनोहर ने।
4) बाबू साहब के रुदल का कोमल भाव क्या था? ---संतान का मुख देखना
5) ताई कहानी में ताई कौन है? ---राजेश्वरी
6) पिक्स किसके कारण रामेश्वरी को कटु वचन सुनने पड़ते थे ?---देवर के बच्चों के कारण ।

II. संदर्भ सहित वाक्य स्पष्ट कीजिए:

1) बालक मनोहर को "शरीर में चोट नहीं लगी मन में लगी" ।
2) शास्त्र में लिखा है 'जिसके पुत्र नहीं होता उसकी मुक्ति नहीं होती।
3) रामेश्वरी उस समय सारा देश भूल गई ।

III. निबंधात्मक प्रश्न :-

1) बाबू राम जी दास और रामेश्वरी के स्वभाव में क्या मौलिक अंतर था संक्षेप में समझाइए ।
2) 'ताई' में कौशिक जी ने बाल मनोविज्ञान को सुंदर अभिव्यक्ति दी है इस कथन को समझाइए ।

Dr.Rashmi B.V, University College, Hampanakatta, Mangalore

7. मित्र (शिवानी)

प्रस्तुत कहानी "मित्र" में लेखिका शिवानी जी ने एक मित्र के आगमन के बारे में और उनके स्वागत के लिए जो तैयारी हो रही थी उसका वर्णन किया है। घर के सभी लोग सफ़ाई में लगे हुए थे।बड़ी बेटी रम्भा और मंझली लड़की सरोज अपनेछोटे भाई परम हंस को काम न करने के लिए डाँटते हुएउसकी धज्जियाँ उड़ा रही थी ।माँ राधा भी अपने पति के पुराने मित्र की आगमन की तैयारी में डूबी हुई थीउसी वक्त पति का मित्र राघव मुस्कुराते हुए द्वार आ गए।राधा को देखते ही वह नमस्कार करता है।राधा अपने पति कामेश्वर से उस

मित्र के बारे में काफ़ी तारीफ़ सुनी रखी थी।कामेश्वर ने कहा था कि उसका मित्रलाखो में एक है,काफ़ी अमीर होने के बावजूद होटल में न रूखकर मेरे साथ ठहरने की बात की है।

कामेश्वर ने काफ़ी दिनों से भत्ते का बिल छिपाकर रखा था।अस्सी रूपये का बिल था।उसके मन में विचार था पैंट बनवा लेगा।हर पैंट की सीट बुरी तरह से जर्जरित हो गई थी।जब कभी भी पैंट बनवाने कीसोचता तो कोई न कोई मुसीबत आ जाती थी।इस बार लड़कियों ने पर्दों की फ़रमाइश की थी।मित्र आते ही चाय पियेंगे इसलिए टी-सेट भी खरीदा गया था।आते ही मित्र ने परमहंस को गोद में उठा लिया।बच्चे एक न एक तरीके से मित्र की तुलना करने लगे।राधा ग्यारह बजे तक काम करके थक गयी थी।उसे तो इतनी देर तक काम करने का अभ्यास भी नहीं था।मन में सोच रही थी कि दो दिन की बात है तीसरे दिन चला जायेगा।

राघव को दूसरे दिन मीटिंग में जल्दी जाना था।उसके जाते ही बच्चे राघव के सूटकेस,चश्मा और जूतों के बारे में चर्चा करने लगे।सन्ध्या को जब राघव अपने काम से लौटे तो फ़िर से महफ़िल जमी।रात को राघव को देर से खाने का अभ्यास था।बेचारी राधा कई बार खाना लगाने उठी,वह पूरी तरह से थकी हुई थी।

तीसरे दिन राघव जानेवाला था पर कामेश्वर उसे रोख देता है।राधा बहुत ही चिंतित थी,क्योंकि दो दिनों में तीस रूपये तो घी,मिठाई और फ़लों में ही खर्च हो गये थे।तीसरे दिन राघव अपना सामान बाँधने लगे तो राधा लंबा सफ़र होने के नाते चार पूडियां बाँधकर देना चाहती थी।तभी कामेश्वर आकर राधा से पूछने लगे कि-" क्या तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं? तुम हमेशा कुछ रूपये रखे रहती हो,अभी राघव को ध्यान आया कि उसके पास रूपये कम पड़ गये हैं,जाते ही भेज देगा,कुछ हो तो जल्दी निकाल दो,देर मत करो" । राधा नाराज़ हो जाती है और कुछ रूखे स्वर में कहती है-" हद करते हैं आप,सवा तीन रूपये बचाकर रखा है,कहिए तो निकाल दूँ । कामेश्वर को पता था कि राधा के पास और भी पैसे हैं,किसी भी तरह से उसे मनाकर अपने दोस्त को एक सौ पच्चीस रूपये देता है साथ ही अपने मित्र को सुबह की मेल से विदा करता है ।

मित्र के जाते ही घर का वातावरण पहले जैसे हो जाता है।जब कभी भी पति अपने मित्र के बारे में बोलते तो राधा अपने दिये हुए पैसे के बारे में पूछ बैठती थी।चार महीने तक राघव का पत्र नहीं आया।एक दिन अपने पति से पूछने लगी कि" क्योंजी,कैसे हैं आपके मित्र।रूपये तो दूर,एक चिट्ठी भी नहीं डाली।" पाच महीने बीत गये।एक दिन कामेश्वर के नाम का लिफ़ाफ़ा आ गया।उसने तरह-तरह के फ़ल भेजे थे,तो राधा झल्लाने लगी कि यहा हम गेहूँ के लिएतरस रहे हैं,भेज दिये हैं फ़ल।इससे तो अच्छा मनीआर्डर भेज दिया होता। राधा तो उन फ़लों को पडोस में बाँटने का प्रस्ताव रखा तो बच्चे मना करने लगे।कई दिनों तक अनार और अंगूर को नाश्ते की जगह पर खाये थे।

राघव को एक बार फ़िर मित्र के पास आने का मौका मिला तो,कामेश्वर के परिवार के बारे में वह यह सोचने लगा कि कितनाअच्छा परिवार है। उन लोगोंके लिए इस बार राघव ड्रेसलेकर जाना चाहता था।इसलिए उसे एक पंजाबी कपड़ेवाले की दूकान पर जाना पड़ा,वहाँ एक बोर्ड पर लिखा वाक्य उसके मन को कुरदने लगा कि"उधार मित्रता की कैं है"।वह तो मित्र से एक सौ पच्चीस रूपये उधार लिया था।एक दिन राधव अपने मित्र कामेश्वर के घर पहुँचा तो घर में झगडा चल रहा था।कामेश्वर जोस्-जोर से चिल्ला रहा था कि, तनख्वाह महीने में एक बार मिलती है दो बार नहीं।उस वक्त पत्नी,कामेश्वर के मित्र के बारे में यह कहने लगी कि-आपकी जो मित्र है वह फ़ल भेजकर उधार को खत्म कर दिया'। दोनों के बीच होनेवाले झगड़े को देखकर मित्र चिंतित हो गया।वह वहाँ से जाना चाहता था।उसके मन में विचार आया कि पैसे तार से भेजेंगे।अभी देना ठीक नहीं है।

इस प्रकार शिवनी ने मित्र के आगमन से चिंतित परिवार का चित्रण किया है।

I.एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

१. कामेश्वर की बड़ी लड़की का नाम क्य है? -- रंभा
२. कामेश्वर की मंझली लड़की नाम क्य है? ---सरोज
३. सरोज के छोटे भाई का नाम लिखिए। परम हंस
४. परम हंस की आयु कितनी है? दस वर्ष
५. कामेश्वर ने बहुत दिनों से क्या छुपाकर रखा था? भत्ते का बिल
६. मित्र कहानी के लेखक कौन है? शिवानी
७. परिवार के सभी लोग किसका इंतजआर कर रहे थे? मित्र
८. कामेश्व्र के मित्र का नाम क्या है? राघव

II.निबंधात्मक प्रश्न

१.मित्र कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

२.मित्र कहानी का सार अपने शब्दों में लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

डॉ.शैलजा हेच.जी,सह -प्राध्यापिका,संत आग्नेसकालेज (स्वायत्त),मंगलूर

8.तलाश (कमलेश्वर)

हिन्दी लेखक कमलेश्वर (६ जनवरी १९३२-२७ जनवरी २००७)बीसवीं शती के सबसे सशक्त लेखकों में से एक है।कहानी ,उपन्यास,पत्रकारिता,स्तंभ लेखन,फ़िल्म पटकथा जैसी अनेक विधाओं में उन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया ।प्रस्तुत कहानी ' तलाश' में लेखक कमलेश्वर जी ने माँ-बेटी की मनोवैज्ञानिक का चित्रण किया है।

बेटी सुमी धीरे से जब माँ के कमरे का दरवाज़ा खोलती है तो देखा की जमीन पर रजिस्ट्रर बिखरे हुए थे,पेंसिले,कार्बन का डिब्बा सब वहीं पडे. हु थे।माँ पलंग पर बेखबर सो रही थी।उसे देखकर सुमी को ऎसा लग रहा था कि मा बहुत थकी हुई है,क्योंकि काफ़ी के एक प्याले में जली हुई तीलियाँ ,राख और सिगरेट के बदरंग टुकुडे पडे हुए थे।वह चुपचाप उनके कमरे से निकलती है और चाय तैयार करके उनके जागने का इंतजार करती है।चाय पिते हुए मा कहती है कि-"शायद मुझे दो रोज के लिए बाहर जाना पड़े....ग्रांट बाकी पडी है।साल खत्म होने से पहले संइटिफ़िक इन्स्ट्रमेंटस खरीदने है" ।सुमी चाय का दूसरा प्याला उनके सामने रखते हुए धीरे कहती है कि-'आप हो आइएगा,मैं अकेली रह लूगी '।दोनों अपने काम पर जाने के लिए तैयार होने लगे।सुमी ने देखा कि हमेशा स्लीवलेस ब्लाउज पहनेवाली उसकी माँ आज बाँहवाला ब्लाउज निकालकर पहना है।सुमी को ऎसा लग रहा था कि माँ कुछ उससे छिपा रही है।तैयार होकर माँ जब कालेज के लिए निकलती है तो ,सुमी को पुरानी कुछ बातें याद आती है।उसकी एक मित्र ने उन्हें सुमी की बड़ी बहन मान लिया था।सुमी को ऎसा लग रहा था मानो उनके तन से ऎसी अछूती गंध फ़ूटती है जो सबको अपनी तरफ़ खींचती है।

माँ के जाते ही सुमी उनके कमरे में जाकर सब सामान करीने से लगाना शुरू कर दिया।एक पल के लिए उसे ऎसा लगा कि ममी की चीज़ें छूने का उसे कोई अधिकार नहीं है।कमरे में खड़े-खड़े फ़्रेम में वह तस्वीर देखती रही,जिसमें वह पापा और मम्मी के साथ बैठी हुई थी।वहीं पर पड़ी हुई एक बक्सा खोलकर देखती है उसे पापा की एक डायरी मिलती है,जिसमें उन्होंने हर महत्वपूर्ण घटना को नोट करके रखा था।उसमें रिश्तेदारों के कुछ पते,कुछ हिसाब और जन्मतिथियाँ लिखी हुई थी।जब मम्मी की जन्म तिथि देखा तो एकाएक देखती रह गयी।मम्मी उन्नीस बरस बडी थी सुमी से।वह बीस की थी तो मम्मी उन्तालीस की।पिता की मृत्यु के बाद माँ का जन्म् दिन मनाया ही नहीं था।पापा को गुज़रे आठ बरस निकल हए थे,पर सुमी को लगता था कि अभी-अभी वे उठकर चले गए हो।

शाम को जब ममी घर वापस आयी तो सुमि ने चाय बना लिया था।मम्मी को जब उदास देखा तो बडों की तरह कहने लगी कि-' मम्मी,तुम कहीं घूम आया करो,तुमने तो अपने को एकदम बाँध लिया है.... इतना काम करती हो....।

अगले दिन से सुमी धीरे-धीरे से माँ की हर एक जिम्मेदारी को लेने लगी।वह पूरी तरह से माँ को खुश देखना चाहतीथी ।एक दिन जब वह काम से लौटी तो देखा कि मम्मी के कमरे में रजिस्ट्र और कापिया फ़ैली थी,सिगरेट के टुकुडे और तीलियाँ थी।सुमीकी आवाज सुनते ही वह चौंक जाती है।सुमी को समझ में नहीं आता कि उसकी माँ इतनी उदास क्यों

है?।काम करने के बहाने से वह अपने कमरे में चली आती है।उसे बहुत थका देखकर खुदमाँ घर का काम करती है।अपने कमरे में जाकर मम्मी ने पुराने कागजों और सामान को उलटना-पुलट्ना शुरू कर दिया था।बाद में अपनी बेटी से कुछ कागज लेकर आने के लिए कहती है,फ़िर दोनों मिलकर वहा से कुछ चीजो ं को अलमारी रख देते हैं।

उसी दिन माँ कालेज के लिए कुछ सामान खरीदने के लिए जानेवाली थी।सुमी जिद करके अपनी साडियाँ और पर्स उनके सूटकेस में रख देती है।टैक्सी का हार्न सुनते ही मा एकाएक घबरा -सी गई।उतावलेपन में वह अपना सूटकेस खुद ही उठाकर सीढिया उतरने लगीं।टैक्सी में बैठ्ते ही उन्होंने धीरे से हाथ हिलाया।तब सुमी ने देखा कि टैक्सी की उधरवाली खिडकी से सिगरेट का एक सुलगता हुआ टुकुडा सड्क पर गिरता हैसुमि उसी को ताँकती रहती है।

एक दिन सुमी दिल मजबूत करकेमाँसे कहती है कि" मम्मी,यहाँसे मुझे आफ़िस बहुत दूर पडता है..अगर दो-तीन महीने में तुम्हें कालेज का काटेज मिल जायेगा,तो मेरा आफ़िस और भी दूर हो जाएगा....मैं वर्किंग वुमेन्स होस्ट्ल में रह लूगी " ।माँ यह सुनकर गंभीर हो जाती है।उसे पता था कि सुमी ने यह फ़ैसला क्यों लिया है।उसे रोख नहीं पाती है।एक दिन सुमी पापा के डायरी खोलकर फ़िर से पढना शुरू करती हैएक जगह पर उसकी नज़र टिक जाती है।तीन दिन बाद माँ का जन्म दिन है, वह चालीस की हो जायेगी।पापा ने बडे प्यार से मम्मी के बारे में लिखा था।जीवन भर सुख देने की शपथ खाई थी।ग्यारह बरस पहले उन्होंने वह सब कुछ लिखा था।सुमी को बड़ी शांति मिली थी।पापा की तरफ़ से उसने उनकी इच्छा को पूरा किया था।

सुमी,मम्मी के जन्म दिन में नरगिस के फ़ूलों का गुच्छा लेकर पहुँच जाती है।जब माँ ने दरवाजा खोला तो सुमी के हाथों में नरगिस के फ़ूलों को देखकर कहती है कि-"'तेरे पापा भी यही फ़ूल लाते थे....' ।बेटी को चाय बनाकर देती है और उससे पूछ्ती है कि वहाँ तुझे कोई दिक्कत तो नहीं?अपनी बेटी को कुछ बनाकर खिलाना चाहती थी।बात करते हुए कहती है कि, जब से तुम गई हो तारीख भी नहीं बदली,दिन का ख्याल ही नहीं रहता है।सुमी बहुत कुछ बातें करना चाहती थी पर चुप रहती है।

प्रस्तुत कहानी "तलाश" में कमलेश्वर जी ने एक ऎसी बेटी का वर्णन किया है जो अपनी पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए ,माँ को सारी खुशियाँ देने के लिए साथ ही अपनी मर्जी की जीवन बिताने के लिए दिल को पत्थर बनाकर अलग रहने का निर्णय लेती है ।

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

१. तलाश कहानी के लेखक कौन है? कमलेश्वर

२. कालीन पर क्या बिखरे हुए थे? रजिस्ट्ररर

३. सुमी की मम्मी की आयु कितनी है? उन्तालीस

४. सुमी की मम्मी क्या खरीदने के लिए बाहर जा रही थी? साईंटिफ़िक इंस्ट्रुमेंटस

५. सुमी अपनी मम्मी के लिए कौन सा फ़ूल लाई थी? नरगिस के फ़ूल

II. निबंधात्मक प्रश्न

१. तलाश कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

२. तलाश कहानी का सार अपने शब्दों में लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

३. तलाश कहानी के आधार पर स्त्री सशक्तिकरण पर आपका विचार विस्तार से लिखिए।

डा.शैलजा हेच.जी,सह - प्राध्यापिका,संत आग्नेस कालेज (स्वायत्त),मंगलूरु-२

I SEM B.B.A

SL. NO.	CHAPTER	LECTURER NAME
1.	मंत्र और प्रेम-तरु	श्राव्या
2.	अपना-पराया और कर्मफल	डॉ.देवकी प्रसन्ना
3.	माता-विमाता और पितृशोक	डॉ.शालिनी
4.	मज़दूर खाता और मा मुझे भी स्कूल जाना	डॉ.सुमा टी.आर

1.मंत्र – प्रेमचंद

प्रस्तुत कहानी मंत्र प्रेमचंद द्वारा रचित है।इसमें उन्होंने एक पढ़ेलिखे वैद्य और अनपढ़ भगत के जीवन की तुलना की।किस तरह हालात दोनों को एक ही स्थान पर लाकर खड़ा करता है और किस तरह दोनों का व्यवहार एक दूसरे से बहुत अलग होता है।

शाम का समय था।डॉक्टर चड्ढा गोल्फ खेलने के लिए तैयार हो रहे थे कि इतने में एक बूढ़ा लाठी लिए डोली के साथ पहुँचता है।वह डॉक्टर से बहुत विनती करता है कि डोली में उसका बेटा है जो कि बीमार है।उसे एक बार देख लें।पर डॉक्टर चड्ढा को उनका गोल्फ खेलने जाना जरूरी लगा।वह सीधा मोटर में बैठ चले जाते है।यहां बूढ़ा आदमी कुछ देर रुका और वापस चलता है। उसी रात को उसका सात साल का बेटा मर जाता है।उसके सातों बेटों में वही अकेला जिंदा बचा था।अब वह भी चला गया।

कई साल बीत गए।डॉक्टर चड्ढा ने खूब धन- दौलत कमाया।उनका हर काम का समय नियत था।वह अपना बहुत ख्याल रखते थे जिस वजह से 50 साल में भी चुस्त थे।उनका एक बेटा और एक बेटी थी।बेटी की शादी हो चुकी थी और बेटा कॉलेज में पढ़ रहा होता है।वह ही माँ बाप के जीवन का आधार था।वह बहुत अच्छा और गुणी था।

उसका बीसवां जन्मदिन था।उनका घर खूब सजा था।बहुत से मेहमान आए थे।उनसबका ध्यान खुद कैलाशनाथ रख रहा था।जब वह इधर – उधर भाग -दौड़ कर रहा था तो मृणालिनी,उसकी सहपाठी और प्रेमिका कैलाश के पालतू साँपों को देखने का आग्रह करती है। कैलाश को साँपों में बहुत दिलचस्पी थी।उसके पास बहुत से साँप थेसाथ ही जड़ीबूठियां भी थी।पहले तो साँप दिखाने से कैलाश मना कर देता है पर जब उसके दोस्त उसे चिढ़ाते है और मृणालिनी का उतरा मुंह देखता है तो वह साँपों के पास सबको ले जाता है।

वह जब साँपों को हाथों में,गले में आदि पहन रहा था तो मृणालिनी बहुत डर जाती है।उसे रोकती भी है पर वह तो सुनता ही नहीं।बातों – बातों में उसका दोस्त कहता है कि साँपों के दांत कटे होने पर उन्हें कहीं भी कोई भी पकड़ सकता है।कैलाश कहता है कि उसके किसी भी साँप का दांत नहीं कटा।बात उसके इज्ज़त की आई।इसलिए वह अपने पास के सबसे जहरीले साँप को उठाता है ।पर सब उसे रोकते है।पर वह कहता है कि जब तक साँप अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है,वह किसी को नुकसान नहीं पहुंचाता।वह साँप के दांतों को दिखाने के लिए उसका गर्दन पकड़ता है।न जाने उस पर कौन सा भूत सवार था।वह गर्दन ज़ोर से दबाता है।साँप उसके इस नए व्यवहार से डर गया और मौका मिलते ही उसे ढस देता है।कैलाश सीधा अपने कमरे की तरफ़भागता है,जड़ीलगाने के लिए।उसके मां – बाप,प्रेमिका,सब आकर मददकरते है।कैलाश लेट जाता है। समय के साथ उसकी हालत बिगड़ती जाती है।

वहीं गांव की दूसरी ओर एक बूढ़ा और बूढ़ी घर पर अंगीठी के सामने बैठे होते है।इतने में एक आदमी आकार उसे बताता है कि डॉक्टर के बेटे की यह हालत है।वह बूढ़े भगत से कहता है कि वह जाए,मंत्र पढ़ें और लड़के को बचा लें।पर भगत मना कर देता है।उसे अपने बेटे का समय याद आता है।वह भी अपने बेटे की जान बचाने के लिए डॉक्टर के पास गया था,बहुत प्रार्थना की,पर उसे तो खेलना ज़रूरी लगा।भगत पहली बार 80 सालों में किसी को साँप के काटने की खबर सुनकर घर पर बैठा हो।वरना वह सबसे पहले वहाँ पहुंचकर सहायता करता।वह मना तो करता है,पर देर रात को उठकर डॉक्टर के घर जाता है। रास्ते में वह खुद को तसल्ली देता है कि वह डॉक्टर को रोता,पुत्रशोक मनाता देखने जा रहा है।

लेकिन वहां पहुंचते ही वह सबसे पहले लड़के को देखने जाता है।डॉक्टर उसे कहता है कि सब ने देखा।अब देर हो चुकी है।भगत ने लड़के को देखा और कहा कि भगवान चाहे तो वह फिर ठीक हो सकता है।वह कहारों से पानी मंगवाता है।घर आए मेहमान भी कुंए से पानी भरते है।न जाने कितने घड़े पानी कैलाश के सिर पर डाला गया।भगत उसे एक जड़ी सूंघा देता।कुछ समय बाद कैलाश को होश आता है।सब खुश हो जाते है।डॉक्टर चड्ढा भगत की तारीफ़ करते थकते नहीं।इतने में उन्हें ख्याल आता है कि उन्होंने भगत को कुछ दिया नहीं।उसे हर जगह ढूंढते है,पर वह जा चुका होता है।डॉक्टर को फिर याद आता है कि यह वही बूढ़ा है जो अपने बेटे को ले आया था लेकिन उसने उसे देखने से इंकार कर दिया था।पर अब वह अपने किए पर पछताते हैं।वह भगत को कहीं से भी ढूंढने का और उससे माफी मांगने का निर्णय लेते है।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए –

1. डॉक्टर को शाम को कहां जाना होता है?गोल्फ खेलने
2. डॉक्टर के कितने बच्चे है? 2
3. डॉक्टर के बेटे की क्या उम्र है? 20
4. डॉक्टर के बेटे का नाम क्या है?कैलाशनाथ
5. कैलाश को किस जानवर में रुचि थी?साँप
6. कैलाश को कौन बचाता है?भगत
7. कैलाश को भगत कैसे बचाता है?मंत्र से
8. कैलाश की प्रेमिका कौन थी?मृणालिनी
9. डॉक्टर की उम्र क्या थी? 50 वर्ष
10. डॉक्टर भगत से क्यों मिलना चाहते है?माफ़ी मांगने

II. संदर्भ सहित व्याख्या

1. हुजूरएक.....दीनबंधु!पृ.27 2. अच्छा किया ..... हमारा क्या बिगड़ा!पृ.34
3. अभी कुछ .....पानी तो भरें!पृ.38 4.आज उस दिन.....सामने रहेगा!पृ. 39

निबंधात्मक प्रश्न

1. मंत्र कहानी का सार और विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. डॉक्टर और भगत के व्यवहार में अंतर को स्पष्ट कीजिए।

2.प्रेम तरु – सुदर्शन

प्रस्तुत कहानी प्रेम तरु सुदर्शन द्वारा लिखित है।यह मानव संवेदना को छू जानेवाली कहानी है।पति – पत्नी का एक पेड़ को अपना बच्चा मानना,उसे मनुष्यों का सा प्रेम देना,बिना किसी स्वार्थ के लोगों की सहायता करना,वादे पर बने रहना आदि इस कहानी के केंद्र बिंदुएं है।

गुरदासपुर जिले के कड़याला नामक गांव में डेढ़ सौ साल बीतने के बावजूद देवी सुलक्खी का नाम उतना ही आदर से लिया जाता है,जितना की पहले।गांव में हर कार्य को करने से पहले देवी सुलक्खी के समाधि पर दीया जलाया जाता है।चाहेनई बहू का घर में आना,दिवाली आदि।अपने घर से पहले समाधि को रोशन किया जाता।समाधि पर बेर चढ़ाए बिना कोई उसे खाता नहीं था।

देवी सुलक्खी न कोई रानी थी न कोई दैवीय शक्ति।वह एक गरीब,सीधी – सादी,अनपढ़ परन्तु सतवंती ब्राह्मण महिला थी, जो एक मूर्ख और हटी जाट के क्रोध का शिकार हो गई।उसने अपने पति से जो वादा किया था,उस पर वह अटल रही।अपने कर्मों से ही उसने लोगों के दिलों में अपने लिए श्रद्धा जगाई।चाहे व्यक्ति किसी भी धर्म या जाति का क्यों न हो,देवी सुलक्खी पर श्रद्धा रखता।

देवी सुलक्खी अपने गांव के गरीब ब्राह्मण जयचंद की पत्नी थी।उस ज़माने में व्यक्ति अपने जाति के अनुसार ही काम करता था।ब्राह्मण जो थे पूजा पाठ कर दान में आए चीज़ों पर गुज़ारा कर लेते।जयचंद और सुलक्खी का कोई बच्चा न था।बस दोनों के जीवन में यही सबसे बड़ा दुख था।

एक दिन जयचंद ने अपने आंगन के कोने में नवजात बच्चे की तरह बेरी के पौधे को देखा।उस पौधे ने उसका मन मोह लिया और वह उसे अपने बेटे की तरह सोचने लगा।जब सुलक्खी ने उस पौधे को देखा तो उसका भी यही हाल था।जयचंद बेरी को अपना बेटा और सुलक्खी बेटी समझती थी।उनका सारा समय अब बेरी का ख्याल रखने में ही जाता।उसे पानी देना,चारपाई को खड़ा कर उसपर चादर बिछाकर छाया करना आदि उनका रोज़ का कार्य था।आने – जानेवाले लोग,उनके पौधे को बच्चा मानने पर हंसते थे।पर पति– पत्नीदोनों इसकी परवाह नथी।

समय के साथवह प्रेम – तरु बड़ा हो गया।अब बेरी के फलने का समय पास आया।पति – पत्नी दोनों पेड़ के पास बैठे रहते,अगर दूर भी रहते तो उसी की बातें करते।सुलक्खी कहती है कि वह पीले बेर उसकी बेटी के गहने है और जयचंद उसे अपने बेटे की पहली कमाई कहता है पर बाद में उसे कनक से भी अमूल्य बताता है।

आखिर समय आ गया।बेरी के दो सौ बेरी उतरे।बहुत सुंदर लाल – लाल,मोटे – मोटे थे,जिसे देखनेवाला देखते ही रह जाता।दोपहर को सुलक्खी ऐसे तैयार होती है मानो किसी शादी में जा रही हो।वह ऐसे तैयार होकर गांव के यजमानों के घर बेर बांटने जा रही थी।जयचंद ने अपने और पत्नी के बाद में खाने के लिए दस बेरनिकाल रखा था।दोनोंके मन मेंयह भाव था किबेरी मीठे हों।

थोड़ी देर बाद जयचंद के घर एक यजमान आकर कहता है कीबेरी बहुत स्वादिष्टथे।वह बेरी की तारी फ़करते गया।इसे सुनकर जयचंद बहुत खुश होगया और उसे अपने लिए रखे बेरी मेंसे दो देदेता है।फिर थोड़ी देर के बाद एक और यजमान आता है,उसे भी जयचंद दो बेरी देता है।अब केवल छहबच गए थे।कुछ समय बाद एक और यजमान आया,जयचंद उसे भी दो बेरी देता है।केवल चार बच जाते है।फिर दो और लोग आए,पंडितजी ने बाकी के चार बेरभी दे दिए।पहले तो वह चिंतित थे की सुलक्खी नाराज़ होगी किउ नके लिए एक भी बेरनहींबचाया।पर सुलक्खीतो खुश हुई किलोगोंको बेरइतने पसंद आए।उसने कहा किअच्छा किया,बेरउनका है वह कभी भी खा सकते है।

पर जयचंद के भाग्य मेंबेरखाना नहींलिखा था।उसे बुखार चढ़ाऔर देखते ही देखते वह स्वर्ग सिधार गया।सुलक्खीका अब इस संसार में उस बेरऔर अपने भाई लछमनके सिवा कोई न था।वह गांव में कोई भी बीमार पड़ता,उसकी सेवा में लग जाती,सबकी मदद करती,बेरी का खूब ख्याल रखती।यही उसका जीवन था।जब भी बेर उतरते तो पूरे गांव में बांट देती पर आप एक भी न खाती।कहती थी कि उसके पति ने नहीं खाया तो वह भी नहीं खाएगी।

आगे के दिनों में बहुत से यजमान सुलक्खी से बेरी मोल लेने को आए।पर वह किसी को न देती। लोग उससे कहते कि वह बेर को न बांटे,उसे बेचे। पर वह बिल्कुल नहीं मानती थी।
कई वर्ष बीत गए।ज्येष्ठ का महीना था।सुलक्खी ने सारे बेर बांट दिए थे।इतने में उनके गांव का गुस्सैल यजमान हाड़ीराम आता हैं और अपने हिस्से के बेरी मांगता है।हाड़ीराम और उसका परिवार गांव से बाहर गए थे।सुलक्खी दो बार उनके यहाँ बेर ले गई थी।पर दरवाज़ा बंद देख वापस आई थी।बाद में वह भूल गई थी।हाड़ीरामके पूछने पर भी वह यही कहती है।हाड़ीरामको बहुत गुस्सा आता है।सुलक्खीउसे समझाती हैकि अगली बार दुगना दे देगी।पर वह माना ही नहीं।वह बेरी के बारे में बुरा बोलता है तो सुलक्खी को भी क्रोध आ जाता है।बात बढ़ जाती है।हाड़ीराम दांत पीसता हुआ चला जाता है।

कुछ दिन बाद सुलक्खी बीमार बच्चे का ध्यान रखने जाती है।एक लड़का वहां दौड़कर आकर कहता है कि हाड़ी ने बेरी के पेड़ को काट डाला।सबने उसे रोका पर वह माना ही नहीं।इतना सुनते ही सुलक्खी की हालत ऐसे हुई जैसे किसी ने गोली मार दी।वह अपने घर की ओर भागती है।सारे गांववाले इकट्ठा हो उसी को देख रहे थे।सुलक्खी खूब रोई,चिल्लाई की

वह अपनी बच्ची को बचा नहीं पाई।उसने अपने पति को वादा किया था कि वह मरते दम तक बेरी को बचाएगी।पर यहां हाड़ी ने जड़ें तक उखाड़ दी थीं।

सुलक्खी ने डालियों को चिता के समान रखा,आग लगाई और घी भी डाला।सहसा वह चिता में कूद जाती है।लोग उसे रोक न पाए।पर उसके मुंह से कोई चीख न निकली।वह शान्त बैठी रही,जलती रही।

लोग ज़ोर – ज़ोर से रोने लगे।लछमन और गांव के जाट हाड़ीराम को ढूंढने निकले,उसे भी मारकर जलाने को जाते है।पर हाड़ीराम जंगलों में छिपता – छिपाता रहा।कब,कैसे मरा,कोई नहीं जानता।

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. पाठ में प्रेम तरु किस पेड़ को कहा गया है?बेर
2. पाठ का लेखक कौन है?सुदर्शन
3. सभी अच्छे काम से पहले दीया कहां जलाया जाता है?देवी सुलक्खी के समाधि पर
4. सुलक्खी का पति कौन था?जयचंद
5. सुलक्खी बेरी को अपना क्या समझती थी?बेटी
6. सुलक्खी सुनहरे बेरी को क्या समझती थी?बेटी के गहने
7. बेरी के पेड़ को कौन काटता है?हाड़ीराम
8. सुलक्खी कैसे मरती हैं?आग में कूदकर
9. सुलक्खी ने अपने पति से क्या वादा किया था?मरते दम तक बेरी की रक्षा करेगी
10. लछमन किसे मारना चाहता है?हाड़ीराम

II. संदर्भ सहित व्याख्या

1. गरमी के दिन ..... दो मिनट में।पृ. 44
2. लोग बेटों के ..... न रह जाए।पृ. 46
3. नहीं भैया।यह ..... मिलेगा।पृ. 51
4. मेरे बेर जब ..... कौन थी?पृ. 53

III. निबंधात्मक प्रश्न

1. प्रेम तरु में पति – पत्नी की ममता का विवरण दें।
2. देवी सुलक्खी का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. प्रेम तरु कहानी का सार लिखिए।

श्राव्या एन, मिलाग्रिस कॉलेज मंगलूरू

3.अपना-पराया - श्री जैनेंद्र कुमा

लेखक परिचय :'अपना – पराया' कहानी के लेखक श्री जैनेंद्र कुमार जीहै । आपका जन्म कौडियागंज, अलीगढ़ में 2 जनवरी 1905 ई में एक मध्यवर्गीय परिवारमें हुआ । आपके बचपन का नाम आनन्दीलाल था । आपके जन्म के दो वर्ष बाद पिता की मृत्यु हो गयी । माता

और मामा ने ही आपका पालन-पोषण किया । हस्तिनापुर के एक गुरूकुल में आपकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा हुई । आपकी उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई ।गाँधीजी के प्रभाव से असहयोग आंदोलन में भाग लेकर जेल भी गये ।आपकी पहली कहानी 'विशल भारत' में प्रकाशित हुई। आपका पहला उपन्यास 'परख' है । सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, फाँसी, वातायन, एक रात, पाजेब, प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।
सारांश - जैनेंद्र कुमार जी ने इस कहानी में पाँच बाद युद्ध – क्षेत्र से घर लौटते एक सिपाही की मनःस्थिति का वर्णन किया है।

एक सिपाही पाँच साल के बाद युद्ध – क्षेत्र से घर लौटते वक्त एक सरायमें ठहरकर अपने घर-परिवार की कल्पनाएँ करता है । सिपाही सपने में घर की स्थिति को देखने लगता है । उसकी पत्नी पाँच साल से विधवा की तरह रही, प्रेम-संभाषण के लिए अवकाश नहीं निकाल पाती । बेचारी कितनी कष्ट उठाती थी। किस प्रकारमेरे पीछे दिन काटे?बे–पैसे, बे–आदमी, साढे चार साल का बेटा करनसिंह कैसा है? इस प्रकार सपना देख रहा था । अचानक सिपाही की नींद टूट गयी । देखता है कि घरकी मंजिल अभी काफी दूर है । उसने बात करने के लिए भटियारे को बुलाया और कहा – "युद्धक्षेत्र में हम जितने दुश्मनों को मारते है उतना ही नाम सम्मान औरप्रतिष्ठा देते हैं" ।

सिपाही बातें करता रहता है और भटियारा सुनता रहता है । रात होते ही सिपाही खा–पीकर सोने लगा । अचानक एक बच्चे के जोर से रोने की आवाज सुनाई पडी ।माँ ने बहुत बार बच्चे को समझाया । फिर भी बच्चा रोता ही रहा । सिपाही को सोना मुश्किल हो रहा था । उसने भटियारे को बुलाकर आदेश दिया– बच्चा और उसकी माँ दोनों को यहाँ से कहीं दूर भेज दो । भटियारे की बात सुनकर बच्चे की माँ ने उससे एक रात ठहरने के लिए अवसर माँगती है । बच्चे की माँ की बात सुनकर भटियारे का मन में परिवर्तन आ गया ।लेकिन सिपाही की खफगी का उसे डर था । माँ बच्चे को कभी पुचकारती है तो कभी डँटती है । लेकिन बच्चा चुप नहीं होता है । उसका रोना और प्रबल होने लगता है ।

भटियारा आकर सिपाही से एक रात सावधान रहने के लिए विनती करता है । अंत में सिपाही ने सोचा कि यह काम भटियारे से न होगा । इसलिएखुद सिपाही ही उस स्त्री कीकोठरी के पास जाकर कहा – "देखो, तुमको इसी वक्त बच्चे को लेकर चले जानाहोगा" । बच्चा रोता ही रहा । स्त्री चुपचाप उठी, बच्चे को उठाकर सिपाही के पैरोंमें डालकर कहती है– "मैं चली जाती हूँ ।बच्चे को तुम ठोकर मारकर जहाँ चाहे फेंक दो ।" और वह चलने लगी । तब सिपाही कहता है–"ठहरो – ठहरो! कहाँ जाती हो?" स्त्री ने उत्तरदिया – "मुझे जहाँ मौत मिले वहाँ जाती हूँ ।'

अब सिपाही के मन में अचानक परिवर्तन आ जाता है और कहता है - "तो भी तुम कहाँ से आ रही होऔरकिधर जाती हो?" उस बक्तस्त्री ने कहा- "पाँच बरस से इस बच्चेका बाप नहीं लौटा । वह लडाई पर गया है । कौन जाने मर गया हो! कौन जाने,शायद लौटते हुए मुझे रास्ते में ही मिल जाय । मैं उसी के पास इस बदनसीब बच्चेको ले जा रही हूँ ।'

सिपाही की आँखो में आँसू आ गये ।तब सिपाही को पता चला कि वह बच्चा अपनाही है और वह स्त्री अपनी पत्नी है । वह अपनी पत्नी से यह भी न कह सका कि तुमने मुझे पहचाना नहीं? बच्चे को पैरो पर से उठाया, चूमा-पुचकारा और प्यार से मनाने लगा ।

विशेषताएँ - प्रस्तुत कहानी में एक सैनिक की मनःस्थिति का विश्लेषण किया गयाहै । इस कहानी में जैनेंद्र जी ने एक सिपाई की परिवार के प्रति आकांक्षाओं को प्रस्तुत किया है । काफी समय के बाद परिवार से मिलने की आशा, उमंगों वाले सिपाही की मनोदशा का सजीव चित्रण किया गया है । है । कुछ साल पहले पत्नी और बच्चे को छोडकर गये पति को खोजती पत्नी और बच्चे कीमार्मिक चित्रण है । जो दिल की सतह को छूने वाली है,इसमें मानवीय संवेदना उभरती है । देश के लिए अपने परिवार को छोडकर सुदूर सीमा पररहनेवाले कई सिपाही हैं । उस वक्त पत्नी अकेली ही पूरा परिवार, बच्चे आदि की जिम्मेदारी लेनी पड़ती है । इसलिए देश सेवा करनेवाला सिर्फ सिपाही ही नहीं है, बल्कि उसका पूरा परिवार देश सेवा करते रहते हैं । यहाँ त्याग सिर्फ सिपाही का नहीं है, उसकी पत्नी और बच्चे का त्याग भी महत्वपूर्ण है ।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) 'अपना-पराया' कहानी के कहानीकार कौन हैं?- जैनेन्द्र कुमार

२) सिपाही ने अपना घोड़ा किसके हाथ में थमाया?- सरायवाले के हाथ में

३) सिपाही ने अपनी पत्नी और बच्चे को कितने सालों से नहीं देखा था?- ५ साल

४) सिपाही को नींद क्यों नहीं आ रही थी? बच्चे के रोने की आवाज़ से

५) किसके कहने पर सरायवाला स्त्री को समझाने जाता है?- सिपाही

६) बच्चे को ले जाके जूते से ढेर कर देने की बात कौन कहता है?- स्त्री/माँ

७) सिपाही के बेटे का नाम क्या है?- करनसिंह

८) कितने रूपये सिपाही की कमर में बंधा है?- दो हज़ार

९) बच्चा किस कारण से रो रहा था?- भूख और तबीयत खराब होने के कारण

१०) स्त्री बच्चे को कहाँ ले जा रही थी?- बाप से मिलाने

संदर्भ सहित स्पष्टीकरण कीजिए :

१) "तुमसे इतना नहीं होता और तुम अपने को मर्द समझते हो? चलो हटो" ।

२) "मर अभागे, तू मुझे और क्या-क्या दिखाएगा?"

३) "देखो, तुम भी यहाँ रहते हो । तुम्हें डर न झंझट । अपना काम है अपना घर । घर से कोसों दूर तो भटक्ते नहीं फिरते' ।

४) "बच्चों की ऐसी हालात में उसे और कहाँ ले जाऊँ? जाड़ों के दिन है, आधी रात हो रही है । कुछ घंटे ठहरो मालिक; तड़का होते ही मैं चली जाऊँगी' ।

५) "मैं चली जाती हूँ । इस बच्चे को तुम ठोकर मारकर जहाँ चाहे फेंक दो ।

निबंधात्मक प्रश्न :

१) 'अपना-पराया' कहानी का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

२) 'अपना-पराया' कहानी में जैनेन्द्र कुमार ने एक सिपाही की मनोभावनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण कैसे प्रस्तुत किया है?

३) 'अपना-पराया' कहानी के प्रमुख पात्रों की समीक्षा कीजिए ।

डॉ.देवकी प्रसन्ना.जी.एस., आल्वास कॉलेज, मूडुबिदिरे

4.कर्मफल -यशपाल

जीवन परिचय:- यशपाल हिंदी के प्रमुख कहानीकारों में से एक हैं। इनका जन्म 3 दिसंबर सन 1903 को पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ था। सन 1921 में फिरोजपुर जिले से मैट्रिक परीक्षा में प्रथम आकर उन्होंने अपनी कुशाग्र प्रतिभा का परिचय दिया। प्रथम आने पर इन्हें सरकार की ओर से छात्रवृत्ति भी मिली, परंतु इन्होंने इस छात्रवृत्ति को ठुकरा दिया और पंजाब के राष्ट्रीय नेता लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लाहौर के नेशनल कॉलेज में दाखिला ले लिया। यहां से प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु के संपर्क में आए।

कालेज के विद्यार्थी जीवन में ही ये क्रांतिकारी बन गए। 23 फरवरी 1932 को अंग्रेजों से लड़ते हुए यह गिरफ्तार हो गए। इन्हें 14 वर्ष की जेल की सजा हो गई। जेल में ही इन्होंने विश्व की अनेक भाषाओं जैसे फ्रेंच, इटालियन, बांग्ला आदि का अध्ययन किया। जेल में ही इन्होंने अपनी प्रारंभिक कहानियां लिखी। उनका झुकाव मार्क्सवादी चिंतन की ओर अधिक हुआ। सन 1936 में जेल में ही इनका विवाह प्रकाशवती कपूर से हुआ। इनकी तरह वे भी क्रांतिकारी दल की सदस्या थी। उन्होंने हिंदी साहित्य की सेवा साहित्यकार तथा प्रकाशक दोनों रूपों में की। 26 दिसंबर 1976 को इनकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख रचनाएं :- यशपाल ने अनेक रचनाओं की रचना की, उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं...**कहानी-संग्रह** पिंजरे की उड़ान, वो दुनिया, तर्क का तूफान, ज्ञानदान, अभिशप्त, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, उत्तराधिकारी, चित्र का शीर्षक, तुमने क्यों कहा था कि मैं सुंदर हूं उत्तमी की मां, ओ भैरवी, सच बोलने की भूल, खच्चर और आदमी, लैंप शेड।**उपन्यास:** दादा कामरेड, देशद्रोही, दिव्या, पार्टी कामरेड, मनुष्य के रूप, अमिता, झूठासच, बारहघंटे, अप्सरा

का श्राप, क्यों फंसे, तेरी मेरी उसकी बात। **व्यंग्य:-** चक्कर क्लब। **संस्मरण** :- सिंहावलोकन। **विचारात्मक निबंध** :- मार्क्सवाद, न्याय का संघर्ष, गांधीवाद की शव परीक्षा, बात बात में बात, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, राम राज्य की कथा, लोहे की दीवार के दोनों ओर।

भाषा शैली **: -** भाषा के बारे में यशपाल जी का बड़ा ही उदार दृष्टिकोण रहा है। उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों से कभी परहेज नहीं किया। जहां एक ओर संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है, वहीं दूसरी ओर उर्दू एवं सामान्य बोलचाल की शब्दों का प्रयोग है। स्थान, काल, चरित्र की प्रकृति के अनुसार गठित हुई है उन्हें न तो संस्कृत के शब्दों से अधिक प्रेम था और न ही अंग्रेजी उर्दू शब्दों से परहेज। वे भाषा को अभिव्यक्ति का साधन मानते थे। अतः भाषा का सरल, सहज, स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने वर्णनात्मक शैली के साथ-साथ संवाद-शैली का भी सफल प्रयोग किया है।

यशपाल के साहित्य की प्रमुख विशेषताएं - यशपाल के लेखन की प्रमुख विधा उपन्यास है, लेकिन अपने लेखन की शुरूआत उन्होने कहानियों से ही की। उनकी कहानियाँ अपने समय की राजनीति से उस रूप में आक्रांत नहीं हैं, जैसे उनके उपन्यास। नई कहानी के दौर में स्त्री की देह और मन के कृत्रिम विभाजन के विरुद्ध एक संपूर्ण स्त्री की जिस छवि पर जोर दिया गया, उसकी वास्तविक शुरूआत यशपाल से ही होती है। आज की कहानी के सोच की जो दिशा है, उसमें यशपाल की कितनी ही कहानियों का योगदन है। वर्तमान और आगत कथा-परिदृश्य की संभावनाओं की दृष्टि से उनकी सार्थकता असंदिग्ध है।

जिस प्रकार की दुनिया बनाने के लिए यशपाल सक्रिय राजनीति से साहित्य की ओर आए थे, उसका नक्शा उनके आगे शुरू से बहुत स्पष्ट था। उन्होंने किसी युटोपिया कीजगह व्यवस्था की वास्तविक उपलब्धियों को ही अपना आधार बनाया था। यशपाल की वैचारिक यात्रा में यह सूत्र शुरू से अंत तक सक्रिय दिखाई देता है कि जनता का व्यापक सहयोग और सक्रिय भागीदारी ही किसी राष्ट्र के निर्माण और विकास के मुख्य कारक हैं। यशपाल हर जगह जनता के व्यापक हितों के समर्थक और संरक्षक लेखक हैं। ।

'कर्मफल' कहानी का सारांश - कई लोगों की यही धारणा है कि, इस जीवन में हम जिन कष्टों को झेल रहें हैं, यह सब पूर्व जन्म का कर्मफल है। किन्तु कहानीकार यशपाल जी इसे विभिन्न दृष्टि से देखते हुए जीवन के कष्ट और समस्याओं के लिए पूर्वजन्म का कर्मफल नहीं बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक असमानता मानते हैं। अतः प्रस्तुत कहानी 'कर्मफल' में कहानीकार यशपाल जी ने इसी सामाजिक व्यवस्था से अभिशप्त जीवन का चित्रण किया है।

रात का समय था, जोर की हवा के साथ मूसलधार वर्षा हो रही थी। बिन्दी का बच्चा चार दिन से भूखा है। लोग अपने अपने घर में थें। किन्तु जो लोग आश्रयहीन थे उनके लिए कोई पेड, अमीर लोगों के मकान का बरामदा ही आश्रय स्थान था। ऐसे ही एक सेठजी के हवेली के नीचे निराश्रित लोग बारीश से बचने के लिए आश्रय ले रहें थे। ऐसे में पहले आए हुए लोग बाद में आए हुए लोगों के साथ झगडा कर रहें थे, चीख-चिल्ला रहें थे, माँ-बहनों को लेकर गाली गलौच कर रहें थे। वहीं ऊपर के कमरे में सेठजी की बेठी सो रही थी, जो अभी-अभी बिमारी से मुक्त हो रही थी। अतः सेठानी अपनी बेठी को सुलाने की प्रयास कर रही थी। इस हंगामे को सुनकर सेठजी व्दारका घीमर को उनको वहाँ से भगाने को कहा। व्दारका अपनी लाठी टोककर उन लोगों को भगा दिया। सभी वहाँ से भागकर इधर-उधर जाकर आश्रय लिया। लेकिन 'बिन्दी' बेसहारा औरत (भिकारिन) भाग नहीं पाई, अपने बच्चे को पेट से चिपकाए, वहीं एक नीम के पेड के तने से सट्कर बैठ गई। बच्चा अपने निर्बल दाँत से छाती को काटकर पेट भर लेने की कोशीश कर रहा था।

इसी बीच सहसा ऐसा जान पडा, मानों उसकी गोद सूनी हो गई। उसके हृदय से एक मर्म-भेदी चीख निकल पडी। वह सिर और छाती पीट-पीटकर रोने लगी। उसी नीम के नजदीक हवेली के ऊपर सेठानी अपनी कमरें में बेटी को सुला रही थी और उसकी बिमारी से परेशान थी। अतः असमय इस तरह बिन्दी के हृदय की मर्मभेदी रुदन से कोठी में रजाइयों में सोयी सेठानी की बेटी की नींद टूट जाती है और उसने अपनी माँ से पूछा 'कोई रोता है क्या माँ...?' लेकिन सेठानी अपनी बेठी को सुलाने का प्रयास करते हुए 'उन्हें और उनकी बेटी को यों दुःख देनेवाले के विरूध्द प्रार्थना करती है कि, 'मेरी बेटी का दुःख दूर करो भगवान... जिसने बेटी की नींद बिगाड दी, उसका सत्यानाश हो!

इस प्रकार कहानी में एक ओर दीन-दलितों की असहाय स्थिति का चित्रण किया गया है तो, दूसरी ओर कर्मफल जैसी परंपरागत धारणा पर प्रहार किया है। कहानीकार यह बताना चाहते है कि, दीन-दलितों की असहायता कर्मफल न होकर मौजूदा समाज की विकृत अवस्था का विषैला फल मात्र है। बिन्दी का पुत्र वियोग से रोना और उससे कोठी में रजाई में लेटी सेठ कन्या की नींद हराम होने का प्रसंग अत्यंत हृदयस्पर्शी और असमान सामाजिक व्यवस्था का जीता-जागता चित्र है।

कहानीकार भारत के छीजते हुए ऐसी समाज व्यवस्था पर अपना आक्रोश प्रकट किया है, जहाँ एक व्यक्ति के सिर पर ताज है और दूसरा आदमी होकर भी जानवर से बदत्तर जिन्दगी जीने के लिए मजबूर है। अर्थात जो अमीर है वह अधिकाधिक संपन्न होता जा रहा है और जो गरीब है वह और अधिक गरीब। आर्थिक विषमता, गरीबी और उससे उत्पन्न

दयनीय स्थिति का चित्रण करने के साथ-साथ यशपाल ने मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग की व्यवस्था का भी चित्रण किया है।

- **एक शब्द, वाक्य या वाक्यांश में उत्तर लिखिए**

१. जिन लोगों के मकान नहीं है, उनके लिए क्या आश्रय है ?
(ईश्वर का आकाश या म्यूनिसीपैलिटी के लगाये पेड ही आश्रय है)

२. सेठजी अँगीठी के सामने बैठे क्या देख रहे थे? (जरूरी कागज)

३. सेठानी किसके कारण परेशान रही थी? (बिटिया के कारण)

४. 'कर्मफल' कहानी के लेखक कौन है? (यशपाल)

५. सेठानी के सोने का कमरा कहाँ था? (नीम के नजदीक ऊपर दुमंजिल पर जो खिडकी थी वहाँ)

- **प्रबंधात्मक उत्तर लिखिए**

१. "कर्मफल" कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

२. "कर्मफल" नामक कहानी में 'अभिशप्त जीवन का चित्रण हुआ है' पठित कहानी के आधार पर सिध्द कीजिए।

३. पठित कहानी के आधार पर असमान सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

- **संदर्भ के साथ स्पष्टीकरण कीजिए**

१. "उसके हृदय से एक मर्मभेदी चीख निकल पडी। वह सिर और छाती पीट-पीटकर रोने लगी।"

२. "यह कोई बडी पापिन होगी माँ, जो ऐसा रो रही है।"

३. "यह सब क्या घपला हो रहा है?"

४. "अरे कोई है तो देखो, यह नीचे कौन स्यापा डालकर अपने को रो रहा है।"

डां. परशुराम गणपति मालगे, विभागाध्यक्ष्य एवं सहायक प्राध्यापक,बेसेंट महिला महाविद्यालय - मंगलूरू

5.माता विमाता : भीष्म साहनी

लेखक परिचय : नाम : भीष्म साहनी, **जन्म** : 8 अगस्त 1915, रावलपिंडी, पाकिस्तान **रचनाएँ:** तमस, बसंती, झरोखे, **पुरस्कार** : भीष्म साहनी को उनकी "तमस" नामक कृति पर '**साहित्य अकादमी पुरस्कार**' (1975) से सम्मानित किया गया था। उन्हें 'शिरोमणि लेखक सम्मान' (पंजाब सरकार) (1975), 'लोटस पुरस्कार' (अफ्रो-एशियन राइटर्स असोसिएशन की ओर से 1970), 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' (1983) और 'पद्म भूषण' (1998) से सम्मानित किया गया था। **मृत्यु** : 11 जुलाई 2003, दिल्ली

कहानी का मुख्यांश :

भीष्म साहनी जी ने इस कहानी में एक ऐसे माँ के तरफ इशारा किया है जो जन्म देने पर भी माँ नही कहलाई। केवल जन्म देने वाली ही माँ नही होती हैं जो पालती है वह भी माँ ही है। इसे इस कहानी में बताने की कोशिश कोशीस किया गया हैं |

सारांश : रेल्वे स्टेशन पर दो औरतें एक बच्चे के लिए छीना-झपटी करने लग जाती है | वह पर बहुत सारे लोग जमा हो गए थे। जोऔरत बच्चे के साथ रेल पर चढ़ी थी उससे दुसरी औरत बच्चे को उससे छीन लेती हैं। प्लैटफॉर्म के हवालदार वहआकर उस मामले को सुलझाने में लग जाते है। हवलदार बच्चा छीनने वाली औरत से पूछता हैं कि क्यों शोर मचा रही हो? तब वह औरत बताती है, कि मेरे बच्चे को छीनकर ले जा रही, तब बंजारन औरत जो रेल पर चढ़ी थी कहती है कि यह बच्चा उसका है | तब हवलदारादोनों औरतें एक बच्चे के लिए लड़ते हुए, देखकर उन दोनों के बारे में जानकारी हासील करता है। जो बंजारन अभी फीरोजपुर जाना चाहती थी क्यों की उसके सारे परिवारवाले वहाँ जा चुके थे। जो स्त्री प्लेटफॉर्म मे खड़ी बच्चे के लिए रों रही थी वह काठियावाड की रहने वाली है। उस औरत के आगे पीछे कोई नहीं था। वह औरत घरभार बनाकर जीवन चलाने वाली नहीं थी। हमेशा ही पुरुषों के आगे-पीछे घूमा करती थी इस वजह से वह गर्भवती हो जाती है। बच्चे को जन्म देने के बाद उसे फेंकने के लिए जाती है तोबंजारन उस बच्चे को अपनाती हैं | इसी तरह सात महीने बीत गए जब बंजारन औरत अपने लोगों के साथ रहने के लिए बच्चे को लेकर जाती है तो बच्चे कि असली माँ अपनी बात से मुकर जाती है। हवलदार सारी कहानी सुनने के बाद बंजारन औरत से कहते हैं कि अगर माँ बच्चा देना नहीं चाहती है तो तुम उसे नहीं लेजा सकती इस कारण से बंजारन औरत बच्चे को असली माँ के हाथों में देकर रेल पर बैठ जाती है । वह बहुत दुखित हो जाती है। रेल की सीटी बजने के कारण सारे लोग अपनेअपने जगह बैठ जाते है हवलदार भी बच्चे को असली माँ को देखर उसे वहाँ से जाने के लिए कहते है तभी बच्चा जाग जाता है | माँ का गोद न पहचानने के कारण रोता है | बच्चे की माँ उसे शान्त कराने के लिए उसके मुँह में मूंगफली के दाने डाल देती है| इसे देखकर बंजारनऔरत गुस्सा होकर उसे कोसते हुए रेल से उतर जाती है और बच्चे को अपने गोद में लेकर अपने आँचल से ढके दूध पिलाने लग जाती है तो बच्चे की माँ धीरे- धीरे से लाड़ले के बाल को सहलाती है |

उपसंहार : इस कहानी में भीष्म साहनी जी यह व्यक्त करना चाहते है की जन्म देने वाली ही माँ नहीं होती, जो पालन-पोषण करने वाली भी माँ ही होती है और माँ का प्यार हमेशा ही अंधा होता है।

एक अंक के प्रश्न

1) माता - विमाता कहानी के लेखक कौन हैं ? भीष्म साहनी
2) बच्चें की असली माँ कहाँ की रहनेवाली थी ? काठियावाड़ की
3) बंजारन बच्चें को लेखर कहाँ जानेवाली थी ? फिरोजपुर
4) कौन औरतों के झगड़ें निपटाने के लिए आता है ? हवलदार

5) कौन बच्चे को पालने का जिम्मा लेता है ? बंजारन

6) बच्चे की माँ ने उसके रोने पर क्या खिलाया ?मूँगफली के दाने

सप्रसंग व्याख्या :

1) "इसका बच्चा क्यों लिये जा रही है"? हवलदार ने कड़ककर कहा |

2) दूध पिलाया है तो इससे बच्चा तेरा हो गया ? बच्चे को जबरदस्ती लिये जा रही है |

3) "रिश्ते की क्यों होगी जी,यह काठियावाड़ की है, हम बनजारे हैं" |

4) "बच्चा वापस दे दो | अगर माँ बच्चा नहीं देना चाहती तो तू उसे नहीं ले जा सकती|

निबंधात्मक प्रश्न :

1) भीष्म साहनी द्वारा लिखित माता-विमाता कहानी का सारांश लिखिए |

2) माता- विमाता कहानी के माध्यम से माँ की ममता का वर्णन कीजिए |

3) दोनों माताओं में माँ का वात्सल्य किसमें दिखाई देती हैं क्यों ?

****

6.पितृशोक - मेहरुन्निसा परवेज

मेहरुन्निसा परवेज (जन्म- 10 दिसंबर 1944, बालाघाट, मध्य प्रदेश) भारत की समकालीन महिला साहित्यकार और कथाकार हैं। वर्ष 1969 में उनका पहला उपन्यास 'आँखों की दहलीज' प्रकाशित हुआ था। आँखों की दहलीज, कोरजा, अकेला पलाश, समरांगण और पासंग उनके प्रमुख उपन्यास तथा आदम और हव्वा, टहनियों पर धूप, गलत पुरुष, फाल्गुनी, अंतिम पढ़ाई, सोने का बेसर, अयोध्या से वापसी, एक और सैलाब, कोई नहीं, कानी बाट, ढहता कुतुबमीनार, रिश्ते, अम्मा और समर उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं। उन्हें 'साहित्य भूषण सम्मान', 'महाराजा वीरसिंह जूदेव पुरस्कार और 'सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।सन् 2016 में "डॉ राही मासूम रज़ा साहित्य सम्मान" से अलंकृत किया गया।

कहानी का मुख्य अंश: मेहरुन्निसा परवेज जी इस कहानी में मृत्युशय्या पर लेटे पिता को देख कर बेटे के मन में उनके प्रति उत्पन्न हो रहें विचारों को व्यक्त कर रहीं हैं |

सारांश : पिता की तबीयत बिगड़ने की कबर बेटे को मिलने पर भी उसका मन उनसें मिलने को नहीं चाह रहा था | क्यों की उनके द्वारा दिए गए दर्द को चाह कर भी वह बुला नहीं पा रहा था | जब वह दिल्ली से अपने घर आता है तो उसकी पत्नी उसे नहाकर तय्यार होकर बाहर जाने के लिए कहती है | क्यों की कोई जान पहचान वाला मिलने के लिए आसक्त है इसलिए | उसी प्रकार कुछ लोग उससें मिलने के लिए आ जाते हैं,उनमें उसके बचपन के दोस्त थे, तो कुछ उसके प्राइमारी के शिक्षक | वे आकर अपनी मन की शोक को व्यक्त करते हैं | उनमें से एक कहता है की वह उनकीं मृत्युकी सुचना समाचार पत्र में दे देता, मगर अब उनकी हालत में सुधार की सूचना देकर तसल्ली पा लेना चाहते थे | उनके चले जाने के बाद माँ कहती है की दो महिनों में तेरे पिता जनरल वार्ड में पड़े रहें,बाहर से दवा लाने

के लिए भी पैसे नहीं थे | मैंने एक – एक से सहायता माँगी मगर किसी ने भी मदत नहीं की अब आये हैं अपना दुःख व्यक्त करने के लिए कहती है | माँ को देखकर बेटे को अपने बचपन के दिन याद आगये | किस प्रकार उसकी माँ तंगी में घर चलाया करती थी | क्यों की उसका पिता नौकरी के नाम पर गबन करके निकला था | दुनिया भर की गन्दी औरतों की गलियों में नापने वाला इन्सान था | शराब पीकर कहीं पड़ा रहता थो उसकी माँ उसे उठाकर ले आते समय रस्ते में गालियाँ बकती हुईलाती और धक्का देकर कमरे में बन्द कर देती थी | हर रोज मुहल्ले केएक एक घर से कोई न कोई चीज उदार के आया जाया करते थे | उसकी दो बहनों का विवाह उम्र बीतने के बाद किसी दमे के रोगी के सात हुआथा | आज तक उनकी खोज कबर उसने नहीं ली थी | वह भी इस नरक में नहीं रहना चाहता था | समय की प्रतीक्षा कर वह भी चला गया था | जीवन में बहुत संघर्ष के बाद आज एक मुकाम पर पहुँच गया था | अपने अतीत को बुलाने की कोशिश करने पर भी उसे वह बुला नहीं पाया था | देर रात में उसकी पिता की मृत्यु की कबर जब माँ सुनाती है तो अपने पत्नी समेत देखने के लिए कमरे में जाता है और धीरे से उसे हिलाया तो कोई आहट नहीं हुईउसे यकीन हुआकी सच में इनकी मृत्युहुईहै | सुबह मुहल्ले भर में यह कबर फ़ैल जाती है | बहुतसारे लोग अंतिम यात्रा पर आये थे | जब अंतिम यात्रा में काँधा देने का समय आया थो आगो आकर पहले वह काँधा दे देता है मगर कुछ ही क्षण में कोई और आकर काँधा ले लेता है |

अंतिम यात्रा में आए हुए औरतों में से कोई उसे दिखा कर कहती है की, अपनी पिता की तबीयत बिगड़ने की कबर मिलने पर वह दिल्ली से देखने के लिए आया था मगर तक़दीर का खेल देखो | ऐसे शराबी बाप का कितना होनहार बेटा निकला | बेटे का मन जिस बोझ के कारण झुक गया था आज पिता के मृत्यु के पश्चात हल्का हुआ | इतना खर्चा कर के यह आने का उद्देश सफल हुआ कह कर वह अपने मन में सोचता हैं |

उपसंहार : इस कहानी में एक पिता अपने दायित्वों को बुलाकर अपने परिवारवालों को दुःख ही देता जाता हैं, उसके मृत्यु शय्या पर लेटने पर भी बेटे को उसके ऊपर कोई दया उत्पन्न नहीं होती | क्यों की जिस समय बच्चों को पिता की आवश्यकता थी उस समय उसनें उनका देख बाल ठीक से नहीं किया था | इन सारे विचारों को इस कहानी ने माध्यम से व्यक्त किया गया हैं |

एक अंक के प्रश्न :

1) पितृशोक कहानी के लेखक कौन हैं ? - मेहरुन्निसा परवेज

2) लोहे की कुर्सी को पिताजी जी ने कब खरीदा था ? - रजवाड़े की चाबुक सवारी की नौकरी से पैसा बचाकर

3) उम्र बीतने पर बहनों का विवाह किस के साथ किया गया ?- दमे के रोगी के साथ

4) पिता के अंतिम यात्रा में कितने रुपयों का खर्च था ? लगभग सौ, दो सौ रुपयों का खर्च था

5) पिता के मृत्यु के पश्चात बेटे के मन में क्या सोच रहा था ?

यहाँ आना, इतना खर्चा करना, सफल हुआ कहकर |

सप्रसंग व्याख्या :

1)बाप की मरने की सूचना देकर ही उसने छुट्टी की दरखास्त दी थी |

2)तुम यह क्यों नहीं सोचते, तुम्हारे वहाँ न जाने से लोग कितने किस्म की बातें करेंगे ?

3) यह ही है उसका बाप ? दुनिया भर की गन्दी औरतों की गलियाँ नापने वाला |

निबंधात्मक प्रश्न

1) पितृशोक कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए|
2) पिता अपने दायित्व को बुलाने पर परिवार की परिस्थिति क्या हो सकती है कहकर लेखिका ने किस प्रकार समझाया है ?

****

7.मज़दूर खाता - जयप्रकाश कर्दम

'मज़दूर खाता' यह कहानी जयप्रकाश कर्दम जी द्वारा लिखित है । जयप्रकाश कर्दम भी एक दलित साहित्यकार है । दलित समस्याओं के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक समस्याओं पर भी अपनी लेखनी चलायी और उन्हें अपार सफलता भी मिली । कविता, कहानी, उपन्यास और निबन्ध व शोध-पुस्तकों की रचना व संपादन भी उन्होंने किया है। इनका जन्म 5 जुलाई 1958 को उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद के इंदरगढी में हुआ था । उन्होंने दर्शनशास्त्र, हिन्दी व इतिहास में एम.ए किया और पी.एच डी भी । अनेक संस्थाओं द्वारा इनको सम्मानित भी किया है ।

'मज़दूर खाता' कहानी की शुरुआत रामलाल से शुरु होती है । रामलाल एक फैक्ट्री में काम करने वाला मज़दूर है । वह बहुत ईमानदार है । गरीबी के कारण अपनी पत्नी व बच्चे को छोड शहर में एक फैक्ट्री में काम कर रहा था ताकि परिवार की हालत कुछ सुधरे । पत्नी ने फोन कर बताया था कि उनका बेटा बहुत बीमार है । उसे टायफाइड हुआ है गाव के डाक्टरों को दिखाया है पर कुछ असर नहीं हुआ । वहा के डाक्टरों ने भी कहा है कि अपने बेटे को लेकर शहर जाओं और वहा के डाक्टरों को दिखाओं । पैसे भी खत्म हो गए है, शहर जाने के लिए किराये के पैसे भी नहीं है । बहुत डर भी लग रहा है । रामलाल ने पत्नी को हिम्मत देते हुए कहा तुझे डरने की आवश्यकता नहीं है, हिम्मत से काम लो और शहर जाने की तैयारी कर लो । पैसे का इंतज़ाम हो जाएगा । मैं आना तो चाहता हू पर गैरहाज़िर में पैसे भी कटेंगे । इसलिए मैं पैसे भेजूगा और तुम बेटे को शहर ले जाकर इलाज करवा दो । पत्नी चाहती थी कि ऐसे समय पति साथ रहेगा तो अच्छा है । पर आर्थिक परिस्थिति को देख स्वंय बेटे को लेकर शहर जाने के लिए तैयार हो जाती है ।

रामलाल को उस रात नींद ही नहीं आती, बार-बार बीमार बेटे का चेहरा सामने आता है । वह भी चाहता है कि गाव जाए, बीमार बेटे की देखभाल करे पर अपनी परिस्थिति को देख इरादा बदल लेता है । उसे और एक चिन्ता सता रही है कि कल पत्नी को पैसे भेजने है । पैसे का इन्तज़ाम कैसे होगा ? यहा सभी मज़दूरों की हालत एक जैसी है । तनख्वाह (पगार) मिलते ही अपने परिवार को भेज देते थे । उसने कई लोगों से पैसे माग कर देखे पर

निराश ही हाथ आयी । निराशा के बीच एक अशा की किरण उसे नज़ार आयी । वह डेढ-दो साल से सौ रुपये की आर डी बैंक खाते में जमा कर रहा था, सोचा खाता बंद कर उस पैसे को अपने बच्चे के ईलाज के लिए भेजूगा । सुबह वह खा-पीकर फैक्ट्री चला गया । आठ बजे उस फैक्ट्री में काम शुरु होता था । काम में रामलाल का मन नहीं लग रहा था । बैंक दस बजे शुरु होता है, इसलिए वह दस बजे का इन्तज़ार कर रहे थे । दस बजे रामलाल ने फैक्ट्री मालिक से अपनी सारी कहानी बताकर बैंक जाने की अनुमती मागी । फैक्ट्री मालिक दयावान था उसने रामलाल को जल्दी बैंक जाने व मनियार्डर के लिए कहा और रामलाल साइकिल से बैंक की ओर चल पडा ।

रामलाल जब फार्म भरकर कैशकाउंटर के बाबू को दिया तो उसने साफ कह दिया आप शनिवार को आए । मज़दूर खाता का लेने-देन केवल शनिवार को ही होता है । वह बैंक मैनेजर के पास भी प्रार्थना किया, वहा भी निराश ही मिली । रामलाल निराश होकर फैक्ट्री चला गया । उसे देख फैक्ट्री मालिक ने पूछा इतने जल्दी कैसे आए । जब उन्हें हकीकत पता चलती है तो गुस्से में आ जाते है और बैंक बाबू से पूछते हैं कि आपने रामलाल को शनिवार को क्यों आने के लिए कहा । तब बैंक बाबू कहता है कि वह नियम बताया गया है कि मज़दूर लोग केवल शनिवार के दिन ही बैंक आए और अपने पैसे जमा या ले सकते हैं । जब फैक्ट्री मालिक ने बैंक मैनेजर से शैकायत की तो उन्होंने भी बताया यह नियम ऊपर से आया है, मज़दूर लोग बहुत गन्धे रहते हैं, उनके कपडों से बदबू आती है जिससे अन्य बैंक ग्राहको को असुविधा होती है । यह सुन फैक्ट्री मालिक को गुस्सा आता है और वह कहता है कि यह बात मैं रिज़र्व बैंक तथा मीडिया के सामने रखूगा । अंत में वह स्वयं अपने खाते से पैसे निकालकर रामलाल की मदद करता है ।

विशेषता : बैंको की सच्चाई को दिखाया गया है । कुछ बैंक अपने सुविधा के लिए मज़दूर खाता तो खुलवा देते हैं पर उनसे अमानवीय व्यवहार करते हैं । राष्ट्रीय बैंको में ऐसा कोई नियम नहीं है कि मज़दूर गन्दे होते है, कपडे बद्बूदार होते है इसलिए उनको केवल शनिवार ही बैंक आना है । ऐसे ही बैंको पर व्यंग्य देखने को मिलता है साथ ही मज़दूर खाते की सच्चाई पता चलती है ।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर दी जिए : -

१. 'मज़दूर खाता' कहानी के कहानीकार कौन है ? - जयप्रकाश कर्दम
२. रामलाल के बेटे को क्या हुआ था ? - टायफाइड
३. रामलाल को बैंक जाने की क्या इमरजेंसी थी ? - पैसों के लिए
४. किसका बेटा सख्त बीमार था ? - रामलाल
५. रामलाल किसे अपना हाल सुना रहा था की उसकी आवाज़ भर्रा गई ? - फैक्ट्री मालिक

६. रामलाल पैसे किस तरह भिजवाने वाला था ? - मनि आर्डर

७. बैंक बाबू ने रामलाल को कब आने के लिए कहा था ? - शनिवार

८. फैक्ट्री मालिक ने बैंक बाबू की शिकायत किससे की ? - बैंक शाखा प्रबंधक से

९. रामलाल की मदद कौन करता है ? - फैक्ट्री मालिक

१०. रामलाल बेटे के इलाज के लिए कहा से पैसे का इन्तज़ाम करता है ? - बैंक में जमा किए आर डी से

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :-

१. "तुम फिक्र मत करो । मैं कल ही तुमको पैसे भिजवा दूगा ।"

२. "बैंक से पैसे निकालकर घर भिजवाते हैं साहब । बहुत ज़रूरी है ।"

३. कहा है गुम्हारा बेटा ?क्या बिमारी है उसे ?सरकारी अस्पताल में क्यों नहीं दिखाते ?"

४. मैंने कहा न, शनिवार को आना । चल, हट यहा से । काउंटर खाली कर, दूसरे कस्टमर्स को आने दो ।

५. "बताया था साहब ! खूब विनती की थी उनसे, लेकिन कुछ नहीं सुना और दुत्कारकर भगा दिया ।"

६. यह भेद भाव तो गलत है । देश के सब नागरिक समान है । सबको समानता का अधिकार ।

निबंधात्मक प्रश्न

१. इस कहानी की कथावस्तु लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

२. रामलाल का चारित्रिक चित्रण कीजिए ।

३. 'मज़दूर खाता' कहानी के व्यक्त व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए ।

<u>प्रस्तुति : डा. सुमा टी.आर, हिन्दी विभागाध्यक्ष, वि श्व विद्यालय कालेज, मंगलूर</u>

8.मा मुझे भी स्कूल जाना है - डा. सुरेश मूले

डा. सुरेश मूले कर्नाटक के उमरते हिन्दी साहित्यकार है । मूलत सुरेश मूले जी कर्नाटक के बीदर जिले के आम्बेसांगवी ग्राम के है । उनका सारा बचपन तथा पढाई उसी गाव में बिती । बचपन से पडाई में अभिरुचि थी । घर की आर्थिक परिस्थिति इतनी अच्छी नहीं थी वे पढाई की सोच सकते । पिता का सांया भी तीन साल की उम्र में उट गया । वही हिम्मत के साथ उन्होंने अपनी पढाई की व्यवस्था कर अपने जीवन को सफल बनाया । इनपर डा. बाबा साहेब अम्बेडकर के विचारों का गहरा प्रभाव रहा है । इनका पूरा साहित्य अम्बेडकर के साहित्य पर आधारित है । सन 2015-2016 का मानव संसाधन वित्त मंत्रालय द्वारा 'हिन्दीतर लेखक सम्मान' उनकी कृति 'जीवन-संग्रह' को मिला है । डा. सुरेश मूले जी धारवाड के विध्यारण्य कालेज के प्रध्यापक है यानि प्रध्यापक के साथ-साथ साहित्य की सेवा भी कर रहे हैं ।

'मा मुझे भी स्कूल जाना है' यह कहानी दलित जीवन पर आधारित है । आप भी दलितों के जीवन में विशेषकर कोई सुधार देखने को नहीं मिलता है । गरीबी तो उन्हें विरासत में मिली है । गरीबी के कारण वे शिक्षा से भी वंचित हो गए है । लेकिन आज के माता-पिता यही चाहते हैं कि कुनके बच्चे पढ लिखकर अच्छी ज़िन्दगी बिताए । इसलिए वे दिन-रात मेहनत कर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में जुट गए है । डा. बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा दलितों का उद्धार शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है । यह कहानी में इसी बात का उदाहरण है ।

कहानी की शुरुआत विक्टोरिया हाईस्कूल के वार्षिक उत्सव से शुरु होती है । पूरा स्कूल सज-धज कर खडा है, विद्यार्थी रंग बिरंगे पोशाक में नज़र आ रहे हैं । पूरा वातावरण उल्लास से भरा था । कार्यक्रम की शुरुआत शाम के चार बचे शुरु हुआ। मंच पर कार्याध्यक्ष, हेडमास्टर और पुलिस अधिकारी लक्ष्मी विराजमान थे । पुलिस अधिकारी लक्ष्मी इसी स्कूल की छात्रा थी और आज प्रमुख अतिथि बनकर अपना अनुभव बता रही थी । अपने भाषण में लक्ष्मी ने कहा कि अगर गुरुजनों का आशीर्वाद छात्रों पर बना रहे तो वह गरीब से अमीर और रंक से राजा बन सकता है । इसी स्कूल का एक छात्र पढलिखकर अमेरिका विश्वविद्यालय में गणित का प्रवक्ता था । इसी स्कूल ने उसे इतना सफल व्यक्ति बनाया था । मरने से पहले अपने पत्र में दो करोड रुपये अपने इस संस्था को देकर गए । छात्रों में योग्यताए तो होती है उनका सच्चे (यह उनका अपने स्कूल के प्रति प्यार व सम्मान था) गुरु मिलने चाहिए तभी उनका जीवन सफल होता है । मैं भी इसी स्कूल की छात्रा हू, मुझे अपने गुरुजनों और इस स्कूल पर गर्व और मैं चाहती हू आप भी अच्छे से पढलिखकर, प्रतियोगिता में भाग लेकर अपना और अपने देश का नाक ऊचा करे ।

लक्ष्मी का भाषण समाप्त होते ही गुरु जी अतीत में भविश्य में लौट आए । इस दिन विक्टोरिया स्कूल के गेट पर 25 साल की एक गरीब लाचार दलित महिला आखों में एक उम्मीद लिए खडी थी । जिसका नाम मंजव्वा था, जो लोगों के घर में काम कर अपने परिवार का पालन पोषण कर रही थी । घर में पिक्कड पति और इकलौती बेटी के साथ रहती थी । पति काम तो करता पर पुरा पैसा शराब में उडा देता, इतना ही नहीं इसके कमाई के पैसे भी छिन कर ले जाता । जब मंजव्वा विरोध करती तो उसे खूब पिटता । घर में हमेशा कलह बना रहता । ऐसे वातावरण में उसकी बेटी की परवरिश हो रही थी । मंजव्वा 25 वर्ष की थी लेकिन परिस्थिति ने उसे समय से पहले बूढा बना । आज वह स्कूल के हेडमास्टर से इसलिए मिलने आई है ताकि उसकी बच्ची भी ऐसे ही स्कूल में पढे । वह स्कूल के अन्य बच्चों को देखकर यह कल्पना करती है उसकी बच्ची भी इसी स्कूल में पढ

रही है । तभी उसकी बेटी आकर उसका हाथ पकडती है तो वह कल्पना से बाहर आती है । इतने में एक व्यक्ति गेट से अन्दर जा रहा होता है तो मंजव्वा उसे रोक कर पूछती है "मुझे हेडमास्टर जी से मिलना है।" वह व्यक्ति कहता है हेडमास्टर अभी आएंगे आप उनके कमरे के बाहर इन्तज़ार करिए । चपरासी भी उसे कहता है थोडी देर बाद आएंगे आप मिल लेना ।

हेडमास्टर वैसे तो अनुशासन प्रिय थे पर मंजव्वा को देख कर उनका दिल थोडा पिघल गया । उसे अन्दर आने के लिए कहा । जब मंजव्वा ने बताया कि वह अपनी बेटी का दाखिल इसी स्कूल में करना चाहती है । हेडमास्टर उसे समझाते है यह फीज़ बहुत महंगा है । चार हज़ार फीस देने की औकत नहीं है पर वह हेडमास्टर के सामने गिडगिडाकर कहती है मेरे पास चार सौ है अगर आप कुछ दया करंगे तो मेरी बेटी का जीवन सफल हो जाएगा । आपके आशीर्वाद से मेरी बेटी का जीवन सफल होगा । हेडमास्टर नेक इन्सान थे मंजव्वा की हर हाल में मदद करना चाहते थे । अंत में बिना डोनेशन के केवल सरकारी शुल्क (फीस) ग्यारह सौ दाखिल के लिए तैयार हो गए । पर इतना पैसा भी उसके पास नहीं अंत में उसने साहूकार से 700 को कर्ज़ लेकर दाखिल करना चाहा तो लुसके पति ने वह 700 रुपय भी शराब और दोस्तों में उडा लिया । उस दिन दोनों में खूब झगडा और मारपीट हुई । बाद में मंजव्वा द्वारा साहूकार के पैर पकडकर 700 रुपय कर्ज़ ले आयी और अपनी बेटी का दाखिल करवा दिया ।

कुछ सालों बाद हेडमास्टर अपने स्कूल में पुलिस वर्दी में महिला को देखकर घबरा गए । जन पुलिस वर्दी में महिला और कोई नहीं उनकी छात्रा तथा मंजव्वा की बेटी लक्ष्मी थी । वह कहती है - सर आप नहीं होते तो मैं इतनी सफल नहीं होती । हेडमास्टर को बडी खुशी होती है इस बच्ची का जीवन सफल हो गया । आज स्कूल के वार्षिक उत्सव में अन्य अतिथि बनकर स्कूल और परिवार का नाम रोशन कर दिया था ।

इस कहानी का उद्देश्य इतना ही है कि गरीब, दलित व निसहाय परिवार के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल जाती है तो उनका जीवन सुधर जाता है ।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. कहानीकार सुरेश मूले कहा के रहनेवाले है ? - जिला बीदर के आम्बेसांगवी गाव के
२. उनके कौन से कहानी संग्रह को मानव संसाधन वित्त मंत्रालय द्वारा सम्मानित किया गया ? - 'जीवन एक चुनौती' कहानी संग्रह
३. 'मा मुझे भी स्कूल जाना है' कहानी के कहानीकार का नाम बताइए । - डा. सुरेश मूले
४. स्कूल के वार्षिक उत्सव के मुख्य अतिथि कौन थे ? - पुलिस अधिकारी लक्ष्मी

५. मंजव्वा किसे स्कूल में दाखिल दिलाना चाहती थी ? - अपनी बेटी लक्ष्मी को

६. मंजव्वा अपनी बेटी लक्ष्मी का दाखिला किस स्कूल ल्में करना दाहती थी ? - शहर के नामी विक्टोरिया हाईस्कूल में

७. विक्टोरिया हाईस्कूल के हेडमास्टर का नाम क्या था ? - गोपाल नंबोदरी

८. मंजव्वा ने अपनी बेटी का दाखिला कैसे करवाया । - कर्ज़ लेकर

९. लक्ष्मी शिक्षित होक्र कौन-सी नौकरी करने लगी ? - पुलिस

१०. शिक्षा का महत्व किस कहानी में समझाया गया है ? - 'मा मुझे भी स्कूल जाना है'

संदर्भ सहित व्याख्या :

१. तभी तो वे आगे चलकर योग्य स्थानों की अपेक्षा करके, उन्हें हासिल करने योग्य बन जाते हैं?

२. ऐसा लग रहा था कि वह एक वृद्धा है।इसे जवानी में ही वृद्धत्व को अपनाना पडा था?

३. मेरी बेटी भी _ _ _ मेरी गुडिया भी इतने सुन्दर कपडे पहनेगी । फिर तो मेरी रानी बिटिया बहुत सुन्दर लगेगी ।

४. दो अक्षर पढेगी तो कहीं छाव में काम करके पेट पालेगी तुम्हारा नाम ज़िन्दगी भर लेते रहेंगे साहब । इस अभागन पर दया करो ।"

५. हे महानुभाव ! आपके कारण ही तो मैं इतनी बडी बनी हू ।

६. 'बेटी, तुमने मेरी गुरु दक्षिणा दे दी, मेरे ऋण से तो मुक्त हो गयी हो ।'

निबंधात्मक प्रश्न :

१. 'मा मुझे भी स्कूल जाना है' कहानी का सारांश लिखकर, उसके उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए ।

२. पठित कहानी में कहानीकार ने शिक्षा के महत्व को किसतरह उल्लेख किया है ? समझाइए ।

३. लक्ष्मी का जीवन शिक्षा के द्वारा किसतरह सफल हुआ ? पठित कहानी के आधार पर रेखांकित कीजिए ।

<u>प्रस्तुति : डा. सुमा टी रोडन्वर, विश्वविद्यालय कालेज, मंगलूरु.</u>

I SEM B.C.A

SL. NO.	CHAPTER	LECTURER NAME
1.	आत्म निर्भरता और नई संस्कृति की ओर	डॉ. वैशाली
2.	मित्रता और मैं धोबी हू	डॉ.नागरत्ना शेट्टी
3.	जब मैं फेल हुआज और पानी है अनमोल	हर्षा
4.	ताज और वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति का प्रभाव	शकुंतला,

1.आत्मनिर्भरता - बालकृष्ण भट्ट

बालकृष्ण भट्ट का जन्म 3 जून 1844 को इलाहाबाद के व्यवसायी परिवार में हुआ था। साहित्यिक जीवन मासिक पत्रिका 'हिंदी प्रदीप' के संपादक के रूप में 1877 में शुरू हुआ । पत्रकारिता के साथ ही उन्होंने निबंध (भट्ट निबंधमाला ,दो भाग), आलोचना (साहित्य सृजन), नाटक (रेल का विकट खेल, बाल विवाह), उपन्यास (सौ सुजान और एक सुजान , नूतन ब्रह्मचारी) आदि की रचना की । भारतेन्दुयुगीन निबंध लेखकों में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है । उन्होंने साहित्यिक , राजनीतिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक विषयों पर अनेक निबंध लिखे । निबंध लेखन में उनके मुख्यतः दो उद्देश्य रहे -- एक जो अच्छे साहित्य के माध्यम से हिन्दी जाति का वैचारिक और भावनात्मक उथान यानी सांस्कृतिक दृष्टि से उसका विकास करना , दूसरे शिक्षित समाज को हिंदी की ओर आकृष्ट करना । इसलिए हम देख सकते है कि विषय की विविधता भट्ट जी के निबंधों के अनिवार्य गुण है । जो उनके 'आँसू' मन की दृढ़ता, चन्द्रोदय, नाक निगोड़ी भी बुरी बला है , साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है इत्यादि निबंधों में दिखाई पड़ता है। निबंध को एक कलात्मक विद्या के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय बालकृष्ण भट्ट को ही जाता है। बेनी जी ने बंगला तथा संस्कृत नाटको का भी अनुवाद किया।जिसमें वेणीसंहार , मृगकटिका, पद्मावती आदि प्रमुख है । इनकी मृत्यु 20 जुलाई 1914 को हुआ ।

निबंध का सार - आत्मनिर्भरता निबंध में समाज में प्रचलित बुराईयों को प्रकट किया है। भट्ट जी एक ऐसे निबंधकार हैं जिसे अपनी निर्भिकता, वैचारिक मौलिकता तथा हास्य व्यंग्यपूर्ण शैली के लिए सदा याद किया जाता है। आत्मनिर्भरता यानी अपने भरोसे पर रहना। यह एक श्रेष्ठ मानवीय गुण है। अपने भरोसे के बल वाले सबसे ऊपर रहते है । इस संदर्भ में निबंधकार ने महाकवि भारवि का कथन देते हुए लिखा है कि तेज और प्रताप से संसार भर को अपने नीचे करते हुए उँची उमंग वाले दूसरे के द्वारा अपना वैभव नहीं बढ़ाना चाहते । आत्मनिर्भरता के न होने से मनुष्य में पौरूषत्व का अभाव पाया जाता है। जिस मनुष्य में भरोसा होता है वह नदी में भी अपना रास्ता खोज लेते हैं। मनुष्य में शारीरिक बल, सेना का बल, ऊँचे कुल में पैदा होने का अभिमान, मित्रता का बल या मंत्र- तंत्र का बल क्यों न हो पर यदि उसमें आत्मबल की कमी है तो इतने सारे बलों के होते हुए भी वह कमज़ोर ही रहेगा।

कहावत भी है- 'अपना हाथ जगन्नाथ' आज यूरोप के देशों जैसे अमेरिका, जापान, फ्रांस आदि पूरे विश्व के सरताज बने हुए हैं। उनकी उन्नति का मुख्य कारण है कि वे लोग अपने भरोसे पर रहना जानते हैं। हिन्दुस्तान की बात करे तो वे अपने भरोसे पर रहना भूल से गाए हैं इसलिए वे दूसरों के सेवक बने रहने में अपनी शान समझते हैं। जो लोग अपनी

किस्मत व भाग्य के भरोसे रहते हैं वे आलसी बन जाते है । यह सत्य है कि ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता आप करते हैं। वही सच्चे अर्थों में तरक्की भी करता है। प्रत्येक देश या जाति के लोगों में बल और ओज, गौरव और महत्व आने का द्वार आत्मनिर्भरता है। देखा गया है कि किसी काम को करने के लिए दूसरों की सहायता लेने से अच्छा है कि आत्मनिर्भर बनना।

एक आदमी किसी भी समाज या जाति का क्यों न हो यदि अलग-अलग अपने को सुधारे तो जाति की जाति या समाज का समाज सुधर जाएगा। कोई भी जालिम से जालिम बादशाह की गुलामी लोग तभी करेंगे जब उस देश के एक-एक आदमी की नस-नस में दारूणता की भावना होगी। किसी भी देश की स्वतंत्रता की नींव तभी गहरी और मजबूत होगी जब उस देश के हर एक आदमी में आत्मनिर्भरता का गुण होगा। लेखक कहते हैं कि ऊँचे से ऊँचे दर्जे की शिक्षा भी बेकार है जब हम अपने ही सहारे अपनी भलाई न कर सकें। जॉन स्टुअर्ट मिल ने भी कहा कि 'राजा का भयानक से भयानक अत्याचार देश पर असर नहीं करेगा जब तक देश के एक-एक व्यक्ति में अपने सुधार की अटल दृढ़ता व बुद्धि बल हो।' मनुष्य विद्या से पूर्ण नहीं होता बल्कि काम करने से पूर्ण होता है। उदाहरण के लिए प्रसिद्ध पुरूषों की जीवनियों के पढ़ने से नहीं वरन् उन प्रसिद्ध पुरूषों के चरित्र का अनुसरण करने से ही मनुष्य में पूर्णता आती है। आत्मनिर्भरता के सम्बन्ध में हमें जो शिक्षा खेतिहर किसानों, दुकानदारों, बढ़ई से मिलती है उसके मुकाबले स्कूल और कॉलेज की शिक्षा कुछ नहीं है। आत्मनिर्भरता की प्राप्ति मनुष्य को धैर्य, परिश्रम व दृढ़ निश्चय से मिलती है। ये सभी गुण हमारे जीवन को सफल बनाते हैं। जो व्यक्ति लोगों पर उपकार करता है तो उसे बड़े लोगों की कोटि मे रखा जाता है। वह मनुष्य रूप में साक्षात देवता है । चाहे वह गरीब से गरीब या छोटे दर्जे या छोटी जाति का क्यों न हो। वह मनुष्य के रूप में साक्षात् देवता होता है । सौ गीदड़ों की अपेक्षा एक सिंह का जन्म लेना उत्तम है।

लेखक का मानना है कि बाल विवाह की कृपा से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है जिससे हिन्दुस्तान की पृथ्वी का बोझ बढ़ रहा है । अतः समाज में कुसंस्कारों और कुरीतियों के चलते आत्मनिर्भरता कभी नहीं आ सकती है । हिन्दुस्तान की अस्सी प्रतिशत लोग बाप दादों की कमाई या परंपरा प्राप्त जीविका से जीवन निर्वाह करते है । केवल एक प्रतिशत व्यक्ति ही निज बाहुबल और पुरुषार्थ के बल पर आगे बढ़ते है । इस संदर्भ में भट्ट जी कहते है कि 'यदि हम स्वतंत्र होना चाहते है तो पहले समाज बंधन के बोझ को हल्का करें जो सर्वथा बेबुनियाद है और जिसके रहते हमारे में कर्मण्यता और साहस कभी आएगा ही नहीं । पारिवारिक एकन्नवर्धिता आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के अपरहण का प्रधान कारण है। कुटुम्ब भर का एक ही मकान में गँजे रहने की बुरी रस्म को जब तक हम पालते रहेंगे

तब तक आत्मनिर्भरता हमारे में कभी भी नहीं आएगी । हमारे लोगों के अंधे माँ-बाप यदि अपनी संतान को पूरी उमर भर आ जाने से उन्हें अलग कर दें और तभी उनका विवाह किया करें .. उनके बोझ से अपने को हल्का कर डाले तो दोनों सुखी रहेंगे । कुछ महापुरूषों का मानना है कि देश का विकास औरतों को शिक्षित करने से होगा , तो कोई विधवा विवाह के जारी रखने में भलाई को मानता है ,तो कोई विलायत में पढ़ने से तरक्की होने की बात कहता है , तो कोई कम फिजूलखर्ची से देश की तरक्की को नापता है, पर भट्ट जी का यह मानना है कि जनसंख्या पर रोक लगाने के लिए बाल-विवाह को रोकना अनिवार्य है। और इस के लिए कठोर कानून की आवश्यकता है। सबसे पहले इस कोढ़ को साफ करने की आवश्यकता है । तभी व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सकता है । दूसरे शब्दों में आत्मनिर्भरता की योग्यता सम्पादन किए बिना व्यक्ति व समाज का विकास संभव नहीं है इसलिए आत्मनिर्भरता जैसे श्रेष्ठ गुण का विकास करना हमारे जीवन का एक अनिवार्य घटक है।

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए-

1.आत्मनिर्भरता निबंध के निबंधकार कौन है ? (बालकृष्ण भट्ट)

2.आत्मनिर्भरता का अर्थ क्या है ? (अपने भरोसे पर रहना)

3.किस बल के आगे अभी बल क्षीण है ? (आत्मनिर्भरता)

4.आत्मनिर्भरता की सही शिक्षा हमें किन से मिलती है ? (खेतिहर, दुकानदार, बढ़ई, लोहार व कारीगर,)

5.सत्पुरुषों के जीवन -चरित्र किस के समान है ? (धर्म ग्रन्थ)

6. आत्मनिर्भरता न होने का प्रधान कारण क्या है ? (बाल -विवाह)

7. किस्मत और भाग्य के भरोसे कौन रहते है ? (आलसी)

8. हिन्दी प्रदीप के संपादक कौन थे ? (बालकृष्ण भट्ट)

9. यूरोप के देशों में पिता अपने पुत्र को किस के लिए तैयार कर देता है। (जीवन संग्राम के लिए)

10. आदमी के लिए बेशकीमती मोती क्या है ? (आज़ादी)

II. संदर्भ सहित व्याख्या -

1.जिनको अपने भरोसे का बल है ये जहाँ होंगे जल में तूम्बी के समान ऊपर रहेंगे ।
निरी किस्मत और भाग्य पर वे लोग रहते हैं जो आलसी हैं ।

२. हमारे देश की कुल आबादी के दस हिस्से में आठ हिस्सा ऐसा है जो केवल बाप- दादों की कमाई या परम्परा -प्राप्त जीविका अथवा वृति निर्वाह करता है ।

III. निबंधात्मक प्रश्न-

1. 'आत्मनिर्भरता' निबंध का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?

2. 'आत्मनिर्भरता एक श्रेष्ठ गुण है' सविस्तार विवेचन कीजिए ?

<u>डॉ. वैशाली सालियन, हिन्दी विभाग, यूनिवर्सिटी इंवनिग कॉलेज, मंगलूर</u>

2.नयी संस्कृति की ओर - रामवृक्ष बेनीपुरी

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरनगर जिले के बेनीपुर गांव में सन् 2 जनवरी 1902 ई. में हुआ था । माता पिता का निधन बचपन में ही हो जाने के कारण जीवन के आरंभिक वर्ष अभावों -कठिनाइयों और संघर्षों में बीते । दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सन् 1920 ई. में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप से जुड़ गए । कई बार जेल भी गए। उनका देहावसन सन् 1968 में हुआ। 15 वर्ष की अवस्था में बेनीपुरी जी की रचनाएं पत्र पत्रिकाओं में छपने लगे। वह बेहद प्रतिभाशाली पत्रकार थे । उन्होंने अनेक दैनिक साप्ताहिक एवं मासिक पत्र पत्रिकाओं का संपादन किया । जिसमें तरुण- भारत, किसान मित्र, बालक, युवक, योगी, जनता, जनवाणी और नयी धारा उल्लेखनीय है।

गद्य की विविध विधाओं में उनके लेखन को व्यापक प्रतिष्ठा मिली । उनका पूरा साहित्य बेनीपुरी रचनावली के आठ खंडों में प्रकाशित है । उनकी रचना यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव है- पतियों के देश में (उपन्यास), चिता के फूल(कहानी संग्रह), आम्रपाली (नाटक), गेहूँ और गुलाब, वन्दे वाणी विनायको, मशाल (निबंध संग्रह), माटी की मूरते ,लाल तारा , जंजीरे और दीवारें , मील के पत्थर (रेखाचित्र और संस्मरण) , पैरों में पंख बांधकर, उड़ते चल (यात्रावृत) आदि। उनकी रचनाओं में स्वाधीनता की चेतना, मनुष्य की चेतना, मनुष्य की चिंता और इतिहास की युगानुरूप व्याख्या है । विशिष्ट शैलीकार होने के कारण उन्हें 'कलम का जादूगर' भी कहा जाता है।

निबंध का सार - रामवृक्ष बेनीपुरी ने इस निबंध 'नयी संस्कृति की ओर' में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन की नयी दिशाओं की ओर संकेत किया है । अपने निबंधों के द्वारा देश की दशा और उसे एक नयी दिशा देने का प्रयास किया है । बेनीपुरी जी समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे । इस निबंध मे भी उन्होंने समाजवादी समाज की स्थापना तथा उनके उद्देश्यों को बताने का प्रयास किया है। इस निबंध के अंतर्गत स्वतंत्रता के बाद बदलते हुए समाज का सजीव चित्रण किया गया है । जब हमारा भारत देश आजाद हो गया तब हमें जरूरत थी, एक नये भारत में एक नवीन समाज के निर्माण की , लेकिन वह नया समाज कैसा हो? उसका स्वरूप कैसा हो? उसका विकास किस प्रकार किया जाए ? इन सभी प्रश्नों पर देशभक्त जनता, बुद्धिजीवी विचार विमर्श कर रहे थे। उसी अधार पर बेनीपुरी के विचारों का स्वरूप इस निबंध में उभर कर आया है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है जब हमारा देश आजाद हुआ और किस तरह से भारत का नवनिर्माण होना चाहिए । इन सभी बातों को बेनीपुरी जी ने इस निबंध के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

समाज के नए स्वरूप के संदर्भ में रामवृक्ष बेनीपुरी जी कहते हैं कि यदि हम अपने समाज को एक वृक्ष मान ले, तो अर्थनीति उसकी जड़,राजनीति तना, व विज्ञान उसकी

डालियां तथा संस्कृति उसके फूल है। इस नये समाज के निर्माण में राजनीति और अर्थनीति पर तो ध्यान देना ही है पर सबसे ज्यादा ध्यान हमें संस्कृति पर भी देना है क्योंकि जड़ व तने की सार्थकता तो उसके फूलों में ही है । इन तीनों का संबंध इतना गहरा है कि हम इन तीनों को बिलकुल भी अलग नहीं कर सकते । नयी अर्थनीति व राजनीति के साथ नयी संस्कृति का विकास हमारी आंखों के सामने हो रहा है । पर हम उसे देख नहीं पा रहे है। इसका मुख्य कारण पिछले 50 वर्षों के राजनीतिक,आर्थिक संघर्षों ने हमारे दिमाग पर पर्दा डाल दिया है। संस्कृति की सुकुमार दुनिया को हम अपनी पथराई आंखों से नजरांदाज कर रहे है । वे उदाहरण देते हुए कहते हैं कि गेहूं हमारे ऊपर इस कदर छाया हुआ है कि गुलाब को हम देख ही नहीं पाते हैं । बेनीपुरी जी कहते है कि हम गेहूं के सवालों को हल करना जरूरी समझते है पर गुलाब के बिना नहीं , क्योंकि मनुष्य केवल चारा व दाना खाने वाला पशु नहीं है । नये समाज की हर एक योजना तब तक अधूरी है जिसमें नयी संस्कृति के लिए जगह नहीं है। नयी संस्कृति के निर्माण की आवश्यकता को बताते हुए वे कहते हैं कि सिर्फ राजनीतिज्ञ व अर्थशास्त्री ही इस नयी संस्कृति के निर्माण के दायित्वों से नहीं बंधे हुए हैं अपितु कलाकारों, लेखकों व साहित्यकारों आदि बुद्धिजीवियों का योगदान भी इसमें अहम् है । ये सब गुलाब की खेती के काम आते हैं । अतः हम ही गुलाब के खेतों के माली है और फूलों के संसार के भौंरे भी हम ही हैं । यह काम हम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा? अतः हमारा रहना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि दुनिया इतनी सुकुमार और नाजुक है कि कहीं अर्थशास्त्रियों और राजनेताओं के हाथों की कुल्हाड़ी से इसका नाश ना हो जाए । अर्थात् प्रेमचंद के शब्दों में 'रक्षा में हत्या' न हो जाए। आगे वे कहते है कि हमें पुरानी संस्कृति की जमीन पर ही पर तो नयी संस्कृति की इमारत खड़ी करनी हैं । पुरानी संस्कृति हमारी विरासत है । हमें उसी से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना है । किंतु इस बात का भी ध्यान रखना है कि हमारी पुरानी संस्कृतियों में जो सड़न व घुन लग गई है उसे सुधारने के लिए नये साधनों को अपनाने से भी हम नहीं हिचकिचाएंगे ।

नयी सांस्कृतिक केंद्रों के निर्माण के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बेनीपुरी जी कहते हैं कि हमें देश के प्रत्येक सांस्कृतिक पहलू पर विचार कर उसका विकास करना है ताकि हमारा सामाजिक जीवन स्वतंत्रता, समानता और मानवता के आधार पर पुनर्गठित हो सके तथा यही हमारी नयी संस्कृति का आधार होगा । समाज में सभी दासता व विषमताओं से मुक्त होकर मानवता को जब हम स्थापित करेंगें तभी आदमी अपने जीवन में सौंदर्य आनंद की उपलब्धि कर पाएगा क्योंकि नयी संस्कृति में सौंदर्य व आनंद दोनों ही अनिवार्य है । आज के समाज में जो कुरूपता व पीड़ा है। उसे हम सुंदर व सुखी बनायेंगे। इसके लिए लेखकों, कवियों, पत्रकारों, कलाकारों, नाटककारो,संगीतकारों सभी को एकत्र करना होगा। वे

परस्पर मिलकर जनता के जीवन के अभावों का सही चित्रण करेंगे । बेनीपुरी जी चाहते है कि इन बुद्धिजीवियों का संगठन करके हम गांवों व शहरों में ऐसे सांस्कृतिक केंद्रों को स्थापित करें जिसमें उनकी कलाकृतियों का प्रदर्शन हो सके । जहां से नयी संस्कृति का संदेश भिन्न- भिन्न साधनों द्वारा देश के कोने कोने पर फैलाया जा सके । नयी संस्कृति में जनता के महत्व को बताते हुए बेनीपुरी जी कहते हैं कि हम बार-बार जनता पर जोर दे रहे हैं क्योंकि मेरा मानना है कि आज की संस्कृति कुछ अभिजात लोगों तक ही सीमित है । अतः नये समाज में जनता का राज होगा । इसलिए संस्कृति भी जनता की ही होनी चाहिए । अब तक की संस्कृति मानवता के सौ में से एक का भी सही प्रतिनिधित्व नहीं कर पा रही थी । परंतु अब सौ में से सौ का प्रतिनिधित्व करेगी। सदियों से झरना जब नये रास्तों से पहाड़ों को तोड़ता हुआ कलरव करता निर्झर बहेगा तो सभी बाधाओं को तोड़ते हुए एक नए समाज में नयी संस्कृति का निर्माण होगा । नयी संस्कृति का भविष्य महान है बस हमें इतना करना है कि हम सभी को कंधे से कंधा मिलाकर काम करना है ।

निष्कर्षः समाजवादी विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है समाजवादी विचारधारा को किस दृष्टि से देखते हैं इसका भी हमें पता चलता है । इस दृष्टि से इसे राजनीतिक निबंध कहा जा सकता है। लेखक की मान्यता यह है कि सामज की सारी साधनाओं की परिणति उसकी संस्कृति में होती है । प्राचीन से प्रेरणा लेकर हमें नयी दिशा की ओर अग्रसर होना है । राजनीतिज्ञ एवं अर्थशास्त्री जहाँ बहुत बड़ी - बड़ी योजनाओं में लगे है वही कलाकारों का भी दायित्व है कि वे संस्कृतिक क्षेत्र को विकसित करें । जिससे जनता का जीवन सौन्दर्य व आनंद से परिपूर्ण हो । नया समाज जनता का समाज हो । जिसकी संस्कृति जनता की संस्कृति हो । यह प्रयास तभी सफल होगा जब सभी एक दूसरे का साथ देकर आगे बढ़ेंगे ।

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए-

1. नयी संस्कृति की ओर के निबंधकार कौन है ? (रामवृक्ष बेनीपुरी)
2. लेखक ने अगर समाज को एक वृक्ष माना है तो अर्थनीति, राजनीति विज्ञान और संस्कृति क्या है? (जड़, तना, डालियाँ व फूल)
3. किसने हमारे दिमाग को कुंठित कर दिया है ? (राजनीतिक व आर्थिक संघर्षों ने)
4. नयी संस्कृति के आधार क्या हो सकते है ? (स्वतंत्रता, समता और मानवता)
5. नया समाज किसका समाज होगा ? (जनता)
6. विशुद्ध मानवता को प्रतिष्ठित करने पर जीवन में हम क्या उपलब्धि कर पाएंगे? (सौन्दर्य और आनंद की)
7. लेखक सभी कलाकारों को संगठित करके शहरों और गांवों में किस तरह का केन्द्र खोलना चाहते है ? (सांस्कृतिक केन्द्र)

8. कलाकारों का व्यापक आह्वान करने से समाज किस दिशा में जाने लगेगा ? सत्यम् शिवम् सुन्दम्)

9. समाज की सारी साधनाओं की परिणति किसमें है ? (उसकी संस्कृति में)

10. विशिष्ट शैलीकार होने के कारण बेनीपुरी को क्या कहा जाता है ?(कलम का जादूगर)

II. संदर्भ सहित व्याख्या -

1. गेहँ हमारी आँखों में इस कदर छाया हुआ है कि गुलाब को हम देखकर भी नहीं देख पाते।

2. सदा याद रखिए, आदमी सिर्फ चारा और दाना खाने वाला जानवर नहीं ।

3. आज समाज में कुरूपता ही कुरूपता है, पीड़ाओं की विविधता है, बहुलता है । हम इसे सुन्दर बनायेंगे- हम इसे सुखी बनायेंगे।

4. नया समाज जनता का समाज होगा ; संस्कृति को भी जनता की संस्कृति होना है ।

III. निबंधात्मक प्रश्न-

1.नयी संस्कृति की ओर निबंध का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?

2.लेखक के अनुसार स्वतंत्र हिन्दुस्तान का कौन सा रूप विकसित होना चाहिए ?

3.प्रेमचंद के शब्दों में 'रक्षा में हत्या' न हो जाए निबंध के आधारपर तर्कपूर्ण विवेचन कीजिए।

डॉ. वैशाली सालियन, हिन्दी विभाग, यूनिवर्सिटी इंवनिग कॉलेज, मंगलूर

3.मित्रता - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का जन्म ४ अक्टोबर १८८४ इसवी को बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था । इनके पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था जो हमीरपुर जिले की राठ तहसील में कार्यरत थे । शुक्ल जी बचपन से ही हिन्दी साहित्य में रुचि रखे थे । खुद के अध्ययन से हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू, बंगला, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान घर पर ही कर लिया । हिन्दी विभाग में हिन्दी अध्यापक के रूप में भी कार्य किया । फिर काशी नागरी प्रचारिणी सभा में हिन्दी शब्द सागर के सहायक संपादक का कार्यभार भी संभाला । जो इन से पूर्व उनके गुरु बाबू श्यामसुंदर दास संभालते थे । शुक्ल जी ने आजीवन हिन्दी साहित्य की सेवा की । २ फरवरी १९४१ को हृदय गति रुक जाने से देहांत हो गया ।

रचनाएठ :- संपादन - नागरी प्रचारिणी पत्रिका और हिन्दी शब्द सागर । कहानी - ग्यारह वर्ष का समय । काव्यरचना - अभिमन्यु वध । इतिहास लेखन - हिन्दी साहित्य का इतिहास । आलोचना - रस मीमांसा भ्रमरगीत, जायसी ग्रंथावली, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास । निबंध लेखन- विचार वीधी चिंतामणि और मित्रता ।

साहित्यिक परिचय - शुक्ल जी ने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ एक कवि के रूप में किया था लेकिन इनकी मुख्य रुचि साहित्य और निबंध के क्षेत्र में थी इसलिए उनकी

ज्यादतर रचनाएठ एक निबंधकार और साहित्यकार के रूप में होती है । उन्होंने सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार की आलोचनाएं लिखी है ।

सारांश :- लेखक के अनुसार मित्र वहीं है जो सदैव सुख दु:ख में समान रूप से शामिल रहता है । युवावस्था में मित्र बनाने की बडी उत्कृष्ट अभिलाषा रहती है । युवा वर्ग के लोग सभी को मित्र बनाने में संकोच नहीं करते, उनमें एक ललक होती है । जिनका परिणाम उन्हें भविष्य में भोगना पडता है । किसी से संगी साथी हो जाये, वास्तव में क्या वह मित्र है, यह एक विवादास्पद प्रश्न है । जो संकल्पों को दृढ करने में सहायक होता है । वहीं सच्चा मित्र है । जिसमें संकल्प शक्ति क्षीण होती है वह मित्र नहीं है । लेखक कहते हैं लोग एक घोडा लेते हैं तो उसके गुण-दोषों को कितना परख लेते हैं पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और प्रकृति आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते । हमें किसी का हठेसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोडी चतुराई या साहस ये दो-चार बाते आकर्षित करते हैं और चटपट उसे अपना बना लेते हैं । हम लोग नहीं सोचते कि मैत्री का उद्धेश्य क्या हैं तथा जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है । एक अच्छे मित्र से आशा की जाती है कि वह हमारे संकल्पों को दृढ करे, दोषों से बचाए, सत्य, पवित्रता, मर्यादा को पुष्ट करे कुमार्ग से बचाए और सदा उत्साहित करे ।

शुक्ल जी कहते हैं कि छात्रवास में जो विद्यार्थी रहते हैं उनके मन में हमेशा एक ही बात दौडती है कि मैं ज्यादा से ज्यादा मित्र बनाऊँ उनके हृदय में मित्रता की भावना पूरे वेग से उमडती रहती है । हाला कि युवावस्था अथवा वृद्धावस्था में भी लोग एक दूसरे के स्नेह में बंधते हैं एक दूसरे को मित्र बनाते हैं परंतु फिर भी जो उमंग किशोरावस्था में छात्रावास में होती है वैसी स्थिति वयस्क और वृद्धावस्था में नहीं होती है । वास्तव में बचपन की मित्रता में उस आनंद की अनुभूति होती है जिसमें हमारा मन सब कुछ भूलकर मित्रता की स्मृतियों में ही तल्लीन हो जाता है । इस अवस्था में जैसी तीव्र ईर्ष्या और मन को गहन दु:ख पहुंचाने वाली अनुभूति होती है वह अन्य किसी अवस्था में दिखाई नहीं देती है । बाल मित्रों से संबंध अत्यंत मधुरता पूर्ण और एक दूसरे के परम विश्वास पर आधारित होते हैं । बात मैत्री में हृदय से अनूठे भावों की अभिव्यक्ति होती है । उस समय वर्तमान आनंद में निमग्न करने वाला दिखाई देता है और भविष्य के संबंध में हमारा मन अनेक कल्पनाएठ करता है । किसी को कोई बात तत्काल आहत कर देती है और हम उसे रूठ जाते हैं । यही नहीं रूठ कर कुछ ही देर में उनसे प्रसन्न हो जाते हैं अपनी नाराज़गी वापस कर लेते हैं । अपने जिस मित्र को हम नाराज़ कर दिया करते हैं कुछ समय बाद हम उसे मनाने में लग जाते हैं । सहपाठी की मित्रता देखने में बहुत छोटी होती है परंतु इसमें उस व्यक्ति के हृदय में हलचल मचा देने वाले अनेक भाव विद्यमान होते हैं।

सच्ची मित्रता के लिए दो व्यक्तियों के स्वभाव अथवा आचरण में समानता होना इनमें कोई संबंध नहीं है । यदि व्यक्ति परस्पर एक दूसरे के प्रति सहानुभूति का भाव रखते हैं एक दूसरे के सुख और दु:ख को अपने सुख और दु:ख के समान मानते हैं तो उनके स्वभाव विपरीत होने पर भी उनकी मित्रता हो सकती है इसके विपरीत यदि ये भाव विद्यमान होने पर भी उनमें मित्रता नहीं हो सकती । इस बात को सिद्ध करने के लिए राम और लक्ष्मण, कर्ण और दुर्योधन की मित्रता का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है । राम धैर्यशाली और शांत स्वभाव के थे तथा लक्ष्मण उग्र स्वभाव के थे, परंतु फिर भी दोनों भाइयों में बहुत असीम प्रेम था और एक दूसरे के मित्र भी हो । इसी प्रकार कर्ण दयालू स्वभाव और उच्च विचारों का धनी व्यक्ति था जबकि दुर्योधन दुश्ठ और लोभी प्रवृत्ति का व्यक्ति था परन्तु फिर भी दोनों में अटूठ मित्रता थी इसका प्रमुख कारण था दोनों को एक दूसरे के प्रति सुखदु:ख को समझना एक दूसरे के प्रति सहानुभूति का भाव होना ।

सच्चे मित्र का कर्तव्य होता है कि वह अपने मित्र को हमेशा अच्छे काम करने के लिए प्रोत्सहित करें संकट और विपत्ति के क्षणों में वह अपने मित्र को उत्साहित करें तथा उसका मनोबल बढाए । जिससे वह किसी भी संकट का सामना दृढता पूर्वक कर सके अर्थात एक सच्चा मित्र अपने मित्र के अच्छे एवं महान कार्यों को करने के लिए प्रेरित करता है और उसकी उस कार्य को करने में सहायता करता है । इस प्रकार उसका मित्र साहस और दृढ संकल्प के बल पर अपनी सामर्थ्य से भी अधिक कार्य कर जाता है । लेकिन ऐसे सच्चे मित्र आसानी से नहीं मिलते संकट में अपने मित्र की सहायता वही करता है जिसका मम्न शक्तिशाली हो तथा जो स्वभाव से दृढ निश्चय वाला हो ।

शक्तिशाली मन तथा सत्य के मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति संकट अपने पर मित्र की सहायता कर सकता है । मित्र का चुनाव करते समय हमें क्या क्या बातें ध्यान में रखनी चाहिए जिसे हम उसको अपना मित्र बनाए सबसे पहले उसका आत्मबल देखना चाहिए । आत्मबल से युक्त व्यक्ति का सहारा हम पूरे विश्वास के साथ ले सकते हैं भगवान राम के आत्मशक्ति के विषय में विश्वास हो जाने पर ही वानरों के राजा सुग्रीव ने उनका आश्रय ग्रहण किया था । श्रीराम की शक्ति के बल पर भी अपना राज्य और अपनी पत्नी को प्राप्त कर सकता था । वास्तव में राम जैसा मित्र पाकर सुग्रीव धन्य हो गया । मित्र का चुनाव करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मित्र ऐसा हो जिसका समाज में सम्मान हो या जो सत्य में निष्ठा रखनेवाला हो निष्कपट हो परिश्रमी हो सत्य पर चलनेवाला हो ऐसा मित्र किसी को धोखा नहीं दे सकता अर्थात हमें हमारे जीवन के लिए सच्चे मित्र की बहुत आवश्यकता होती है ।

कुसंग हमारे विकास व उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध करके अवनति व पतन की ओर धकेल देती है तथा दिन प्रतिदिन विनाश की ओर अग्रसर करती है जबकि अच्छी संगति सहारा देनेवाले हाथ के समान होती है जो अवनति के गर्त में गिरने वाले व्यक्ति की भुजा पकडकर उठा देती है और सहारा देकर खडा कर देती है, साथ ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर कर देती है । कुसंग से नीति सदवृत्ति और बुद्धि का नाश होता है । इंग्लेंड के एक विद्वान को युवावस्था में राजदरबारियों में जगह नहीं मिली इस पर वह जिंदगी भर अपने भाग्य को सराहता रहा । वह समझ गया कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगत में पडता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते । वास्तव में जो लोग युवावस्था में बुरी संगति में पड जाते हैं । वह कभी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो पाते । अर्थात उनका जीवन आगे चलकर दुष्ट प्रवृत्ति का हो जाता है मानव जीवन में सबसे ज्यादा असर युवावस्था में होता है इसलिए जब युवावस्था हो उस समय हमें अपनी संगति सोच समझकर बनानी चाहिए । इस समय बुद्धि और विवेक दोनों से कार्य करना आवश्यक है ।

व्यक्ति को बुरे लोगों के साथ को और उनकी बातों को हल्के में नहीं लेना चाहिए और इसे एक सामान्य बात समझकर इसकी अनदेखी भी नहीं करनी चाहिए । अश्लील और फूहड बातें करनेवालों से हमें कभी मित्रता नहीं करनी चाहिए । एक बार जब पैर कीचड में पड जाता है तो फिर उसमें से पैर निकालना आसान नहीं होता है । फिर भले बुरे की पहचान भी नहीं रहती है । व्यक्ति का चरित्र बल उअत्तम हो तो उसपर किसी को संगति का प्रभाव नहीं पडेगा अत: हृदय और बुद्धि को निर्मल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय वही है कि बुरी संगत से बिलकुल बचा जाए ।

एक पुरानी कहावत है - काजल की कोठरी में कैसो हूँ सयानों जाय
एक लीक काजल की, लागे है तो लागे है ।

1.एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. युवक को संसार में अपनी स्थिति जमाने में पहली कठिनाई क्या होती है ? - सच्चे मित्र की चुनाव की होती है ।
2. खजाना किसे कहा गया है ? - विश्वासपात्र मित्र को
3. उत्तम वैध्य की-सी निपुणता किसमें होती है ? - सच्ची मित्रता में
4. बालावस्था की मित्रता कैसी होती है ? - चंचल
5. सुग्रीव ने किसका पल्ला पकडा था ? - राम का
6. अच्छे मित्र में अपने मित्र के प्रति क्या होनी चाहिए ? - सच्ची सहानुभूति
7. अच्छी संगति का लाभ क्या है ? - अच्छे गुणों का विकास
8. कर्तव्य कैसे पूरा होगा ? - दृढ चित्त और सत्य संकल्प

9. कुसंग से क्या होता है ? - व्यक्ति पतन के गड्डे में गिर जाता है

10.'मित्रता' निबंध के रचनाकार कौन है ? - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

2. **संदर्भ सहित व्याख्या -**

1. विश्वासपात्र मित्र से बड़ी रक्षा होती है ।
2. कुसंग का ज्वर भयंकर होता है
3. बाल मैत्री में जो मनन करने वाला आनंद होता है, जो हृदय को भेदने वाली ईर्ष्या होती है वह और कहाँ ?

३. निबंधात्मक प्रश्न :

1. सही मित्र का चुनाव न होने से हमारे जीवन में क्या प्रभाव पडता है ?
2. मित्रता निभाते समय चरित्र-बल का योगदान क्या होगा ।
3. मित्र का कर्तव्य स्पष्ट कीजिए ।
4. कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक क्यों कहा गया है ।
5. 'मित्रता' का सारांश लिखिए ।

<u>प्रस्तुति : डॉ. नागरत्ना शेट्टी, मंगलूर वि.वि.कॉलेज मंगलूर</u>

4.मैं धोबी हूँ - आचार्य शिवपूजन सहाय

आचार्य - शिवपूजन सहाय का जन्म ९ अगस्त १८९३ को बिहार के ग्राम उनवास, थाना बटाडही, जिला इलाहाबाद में हुआ था । उनका बचपन का नाम भोलानाथ था । दसवीं की परिक्षा पास करने के बाद उन्होंने बनारस की अदलत में नौकरी की । बाद में हिन्दी के अध्यापक बन गए । असहयोग आंदोलन केक प्रभाव से उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया । शिवपूजन सहाय अपज़्ने समय के लेखकों में बहुत लोकप्रिय और सम्मनित व्यक्ति थे । उन्होंने जागरण, हिमालय, माधुरी, बालक आदि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया । इसके साथ ही वे हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिका मतवाला के संपादक-मंडल में थे । सन १९६३ में उनका देहांत हो गया ।

वे मुख्यत: गद्य के लेखक थे । देहाती दुनिया, ग्राम सुधार, वे दिय वे लोग, स्मृतिबोध आदि उनकी दर्जन भर गद्य कृतियाठ प्रकाशित हुई हैं । शिवपूजन रचनावली के चार खंडों में उनकी संपूर्ण रचनाएठ प्रकाशित हैं । उनकी रचनाओं में लोकजीवन और लोकसंस्कृति के प्रसंग सहज ही मिल जाते हैं ।

सारांश : प्रस्तुत निबंध में लेखक कहते हैं कि मनुष्य की महत्वता जाती से नहीं उसकी कर्मों के वजह से होती है । विधाता ने सभी जीवों में से श्रेष्ठ मनुष्य को बनाया है । कालांतर में वे अपनी कर्मों के प्रति असावधान और लापरवाह होकर विभिन्न विकारों से घिरता गया । उसी का परिणाम है कि आज उसकी महत्वता में कमी आ गइ है । इस निबंध में एक पौराणिक कथा के ज़ारिए यह कहते हैं कि धोबी क्यों धोबी बना और वह अस्पृश्य क्यों ? लेखक के अनुसार भगवान का काम और इनके काम में कोई विशेष भिन्नता नहीं है । वे

पाप को धोते हैं तो यह कपडों को । मगर लोग भगवान को श्रेष्ठ मानते हैं और इन्हें नीच । ऐसा क्यों ?

पौराणिक कथा के अनुसार हर मानव की सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेव जब इन्हें लाया तब इनसे कहा कि 'देवताओं का राजा इन्द्र के कपडे धोने होंगे ।' इंद्र इनके काम से संतुष्ट हुए और यह सब को पता लग गया । अप्सराएं भी इन्हें अपने-अपने कपडों को धोने के लिए देने लगी । इन सुगंध की सुरभि से इनका मस्तिष्क आमोदपूर्ण होने लगता था । और आँखों में मादकता छा जाती थी । इस नशे की झोंक में वह अप्सराओं के कपडों को बार-बार झकझोरता था और कपडों के गट्ठर पर ढेर हो जाता था ।

एक दिन जब साडियों को दबाए अचेत पडा था तब उसी गरुते में सरोवर की ओर जा रही अप्सराएं इनकी इस अवस्था में देख लिया । मंजुघोषा, मेनका, धृताची देवी, उर्वशी और रम्भा सबको इनका इस तरह विलासित हो जाना, अपवित्र मन से इनके कपडों को धोना बिलकुल अच्छा नहीं लगा । सभी का यह मानना था कि देवलोक में लालसाओं की स्वच्छंद लीला हुआ करती है न कि वासनाओं का गुपचाप खेल । कपडों की मलिनता का दूर जल वरुणदेव से, हवा-पवन देव से और किरण-सूर्यदेव के प्रताप से होता है । इसलिए कपडे दिवय बनते हैं । अब धोबी के इन कपडों में वासना भर दिये हैं । इसलिए इन्हें दण्ड मिलना चाहिए । दण्ड के रूप में अब धोबी को धर्ती मे रहना होगा । यहाँ इन्हे अस्पृश्य माना जाएगा । परंतु इन्होंने जो अच्छा काम किया है कुसकी गणना करते हुए इन्हें आशिर्वाद भी मिलता है कि जब भी कोई यात्रा करने जाता है तब सामने धोबी का दर्शन हो तो,शुभ माना जाएगा ।

इस तरह शाप और आशिर्वाद दोनों पाकर धोबी देवतों से पृथ्वीलोक पर गधा पर बैठकर आया । धोबी को भगवान की तरह पतितपावन तो कहा नहीं जाता मगर बहुत सारी पौराणिक कथाओं में धोबी का या गधा का उल्लेख हुआ है । रामायण में इन्हीं की बात सुनकर राम अपनी पत्नि को जंगल भेजता है । और कृष्ण पहली बार मथुरा जब आए तब इन्हीं के कपडों को पहनकर मामा कंस के पास गये थे । गरुड जगत्पिता की सवारी है तो गधा जगदम्बा देवी की है । रावण ने भी अपने मस्तक में इसको जगह दिया था । साथ में भगवान ने धोबी को इतना अच्छा तीव्र स्मृति शक्ति दी है कि कपडों के लेन्देन में कभी भूल नहीं होती । अब शापग्रस्त होने के कारण यहाँ रानी, सेठानी, युवतियों के रंग-बिरंग कपडों से इनका घर गमगमाया करता है ।

इस तरह विधाता ने सभी जीवों में श्रेष्ठ मनुष्य को बनाया । कालान्तर में वह अपने कर्मों के प्रति असावधान और लापरवाह होकर विभिन्न विकारों से घिरता गया । उसकी महत्व में कमी आई है । आज वह अपना मूल्य खो चुका है ।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. पतितपावन कौन है ? - भगवान
2. सारे समाज की मलिनता का परिष्कार करने वाले क्या कहलाते हैं ? - अछूत
3. इन्द्र लोक का सरोवर कैसा था ? - कमल-कुमुद-मधुप-मगल-सेवित सरोवर था
4. देवलोक में कैसी लीला हुआ करती है ? - लालसाओं की स्वच्छन्द लीला
5. देवसभा के सुर सम्राट कोन थे ? महाराज देवराज

6. गर्दभा का अर्थ क्या है ? - गधा
7. 'गरुड' किसकी सवारी है ? - जगत्पिता की
8. भगवान की धोबिन कौन है ? - गंगा
9. 'धोबी' का अर्थ क्या है ? कपडे धोने का पेशा करनेवाली एक समूह
10. 'मैं धोबी हूँ' निबंध के लेखक कौन है ? - आचार्य शिवपूजन सहाय

संदर्भ स्पष्टीकरण :-

1. "तुम्हें इन्द्र के पास रहना होगा, उन्ही के कपडे धोने होंगे ।"
2. वह महाराज इन्द्र का अन्न खाता है, विलासिता के कीठाणु इसके रक्त में भी घुस गये हैं ।'
3. "विधाता ने तुझे पतितपावन बनाकर शुभ कर्म सौंपा, तो मनोविकार का शिकार हो गया ।"
4. "वहीं गदहा मेरी सनातन सवारी है ।"
5. "बर मैं भी अपनी हरी धनिया के लिए हरा पुदीना बन जाता हूँ ।"

निबंधात्मक प्रश्न

1. "मैं धोबी हूँ" निबंध का सारांश लिखिए ।
2. शिवपूजन सहाय जी ने इस निबंध में मनुष्य की महत्ता को कैसे दर्शाया है ?
3. "मैं धोबी हूँ" इस निबंध में पौराणिक कथाओं के माध्यम से धोबी का चित्रण कैसे हुआ है?
4. "विधाता ने सभी जीवों में श्रेष्ठ मनुष्य को बनाया है" इसे "मैं धोबी हूँ " निबंध के माध्यम से स्पष्ट कीजिए ।

<u>प्रस्तुति : डॉ. नागरत्ना शेट्टी, मंगलूर वि.वि.कॉलेज मंगलूर</u>

5.जब मैं फेल हुआ - डाä. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

डाä. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का पूरा नाम अब्दुल पकीर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम हैं । इनका जन्म १५ अक्टूबर १९३१ को रामेश्वरम में हुआ । कलाम ने भारत के लिए कई मिसाइल बनाई । डाä. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भारत के लिए अग्नि और पृथ्वी जैसी विभिन्न मिसाइलों का निर्माण किया । भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवीं राष्ट्रपति थे । इनका मृत्यु २७ जुलाई २०१५ को शिलांग में हुआ । सभी के लिए डाä. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जीवन यात्रा प्रेरणा का स्रोत है ।

"सपने वो नहीं जो नींद में देखे, बल्कि सपने तो वह है जो आपको नींद ही न आने दे ।

"You cannot change your future, but you can change your habits and surely your habits will change your future."

अब्दुल कलाम जी द्वारा लिखी गई यह पंक्तियाँ जीवन को एक नई उडान भरने के लिए प्रोत्साहित करती है । इनकी विशेषताएँ इतनी विशाल है कि इन्हें शब्दों में संजोना आसान नहीं । उन्होंने अपनी पूरी जीवन अपने करियर कामकाज और लेखन की माध्यम से देश के नई पीढी के दिलों में ज्ञान के दीप प्रकाशित किया है । हर भारतीय के लिए यह गर्व की बात है कि इनके जैसे महान व्यक्ति एवं महान वैज्ञानिक इस देश की भूमी से जन्म है ।

जैसा की हम सभी जानते हैं कि इनका जीवन का सफर संघर्षों एवं कठिनाइयों से भरा रहा । पर वे कभी भी उन मुसीबतों से डरे नहीं । **उन्होंने खुद को खडी मेहनत से बुलंदियों के उस आसमान पर पहुठँचना संभव नहीं ।**

"जब मैं फेल हुआ' प्रस्तुत आलेख अब्दुल कलाम साहब की "मेरी जीवन यात्रा" पुस्तक का एक अंश है । जिसमें हमें उनकी जीवन यात्रा की कई जानकरियाठ प्राप्त होती है साथ ही उनके अतीत के यादों से भरी है ।

डाä. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी कहते हैं अपने कामियाबी के ऊठँचाइयों को छूने, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान और देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होने का सौभाग्य उन्हें अपने और अपने टीम के प्रयास के कारण मिला । फिर भी उनका मानना है कि जब तक कोई व्यक्ति नाकामी की कडुवी गोली नहीं चखता, तब तक सफलता प्राप्त नहीं होगा । ये पाठ उनके जिन्दगी के हर मोड पर याद करते हैं, जिससे हर कठिनाइयों का सामने करने को मदद मिलता है ।

ऐसे ही एक घटना को याद करते हुए कहते हैं- जब वे एम.आइ.टी के छात्र थे उनकी अध्यापक प्रो.श्रीनिवासन उस संस्था के अध्यक्ष ने चार छात्रों की एक टीम बनाकर, कम ऊठँचाई पर उडनेवाले एक लडाकू विमान का डिज़ाइन तैयार करने को कहा । इस टीम का इंचार्ज कलाम जी को बनाया गया । जो सभी मिलकर कई घंटों चर्चा व अनुसंधान पर विचार करते हुए तैयार किए डिज़ाइन अपने प्रोफेसर को प्रभावित करना चाहते थे । जब प्रोफेसर ने अपने भौहें सिकुडकर, डिज़ाइन देखते हुए कहा- "मुझे तुमसे ज्यादा ही उम्मीद्द थी। यह कार्य निराशाजनक है। मुझे बहुत निराशा हुई । तुम्हारे जैसा होनहार छात्र और ऐसा काम . . ..?"

प्रोफेसर की इस बात पर बहुत शर्मिंदगी उठानी पडी । हर क्लास में होनहार छात्र होते हुए भी यह उनका पहला अनुभव रहा । इसके बाद प्रोफेसर ने तीन दिन का मोहल्लत देते हुए फिर से डिज़ाइन तैयार करने को कहा । अगर पूरा न कर पाए तो उनका स्कालरशिप बन्द कर दिने की चेतावनी मिली । इसे सुनकर कलाम जी को एक क्षण के लिए अपना परिवार और भविष्य अन्धकार दिखाई पडने लगा ।

खुद को साबित करने के लिए दृढ निश्चय करके अपना खाना-पीना तक की चिंता न करते हुए मस्तिष्क में तैर रहे डिज़ाइन को एकाग्रिचित्त होकर तैयार किए । अगले दिन कुछ खा-पीकार फ्रेश होने के बाद उस दिन इतवार के शाम तक लगभग काम पूरा कर चुके थे । तब उन्हें ऐसा लगा कि उनके कमरे में कोई और मौजूद है । देखा तो उनके प्रोफेसर सफेद टेनीस ड्रेस पहने क्लब से खेलकर लौटे थे । कलाम जी से बने डिज़ाइन का निरीक्षण करते हुए, उन्हें गले से लगाए । और कहने लगे "तुम्हारे कार्य को अस्वीकार करते हुए तुमपर

दबाव डाला, नामुमकिन समय-सीमा को निर्धारित करने के बाद भी, तुमने उस समय के भीतर अपना काम पूरा कर दिखाया । जो असाधारण कोटी का है ।"

इन शब्दों को सुनते ही अब्दुल कलाम के कानों में संगीत के सुरों के समान गूँजने लगा । जिससे उनका आत्मविश्वास और बढने लगा । उस दिन से उन्होंने दो बातें सीखी, पहला जो शिक्षक अपने विध्यार्थी की प्रगती का ध्यान रखता हो, वह उनका सर्वश्रेष्ठ मित्र होता है जो आगे बढने के लिए प्रेरित करता हो । दूसरी, इस दुनिया में कोई भी बाधा नामुमकिन समय-सीमा नहीं होती । यह विचार उनके लिए आगे बढने में मददगार साबित हुई ।

एम.आई.टी के बाद कामकाजी जीवन शुरु हुआ । बेंगलूर में एचए.एल में काम करते हुए विमान के डिज़ाइन और प्रौद्योगिकी के बारे में सीखते हुए एरोनेटिकल स्नातक इंजीनियर बने । इसके बाद नौकरी के दो अवसर मिले - पहला इंटर्व्यू देहरादून में दूसरा दिल्ली में मिला ।

सुदूर आकाश में ऊँची और ऊँची उडान भरने का सपना दिन-ब-दिन नज़दीक आ रहा था । इसीलिए कलाम ने एरोनाटिकल इंजीनियरिंग को अपना अध्ययन क्षेत्र चुना । जब उन्हें विमान को नज़दीक से दिखने का अवसर मिला तब उनकी जानकारी से उनका प्यारा-सा सपनों में पंख लग जाते ।

सबसे पहले डी.टी.डी एंड पी में साक्षात्कार देने दिल्ली में एक सप्ताह रुखे । वहाँ इंटर्व्यू बहुत आसान रहा । फिर देहरादून जाते समय युवक होने के नाते यहसमझना शुरु ही किया था कि लोगों से कैसे व्यवहार किए जाते हैं । पहले तो वे मितभाषी और संकोची स्वभाव के थे । आगे जाकर अपने व्यक्तित्व यें दृढता लाने के लिए कडी मेहनत की । जिससे भली भाँती बडे-बडे लोगों से अंग्रेज़ी और तमिल में व्यवहार करने लगे ।

अंत में कलाम जी वायुसेना चयन बोर्ड के साक्षात्कार से लौटने के बाद उन्होंने महसूस किया कि इंजिनियरिंग के ज्ञान के अलावा योग्यता एवं हाजिरिजवाबी की क्षमता होना भी आवश्यक है । बोर्ड स्वास्थ और व्यक्ति के मुखरित तौस्तरीके, आचरण व व्यवहार भी देखना है । इस प्रकार प्रस्तुत संस्मरण में अब्दुल कलाम जी ने अपने जीवन के रोचक घटनाओं को सामने रखते हुए कहते हैं कि कठिनाइयों से गुज़रे हुए पल मित्रों का सहयोग और सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों का मार्गदर्शन कभी भी भूलना नहीं चाहिए । इन सबके लिए अब्दुल कलाम जी अपने को शुक्रगुज़ार मानते हैं ।

जीवन में हार ही जीत की पहली सीढी होती है, अपमान ही सम्मान को दिलाने का एक मात्र मार्ग है । इन विचारों को अपने जीवन में लागू करते हुए अब्दुल कलाम जी पाठकों के दिलो-जान में हार न मानते हुए अपने में धैर्य बंधाने का प्रयास किया है ।

I.एक वाक्य में उत्तर लिखिए -

१.'जब मैं फेल हुआ निबंध के लेखक कौन है ? - डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम

२. डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम को किस नाम से जाने जाते है ? - मिसाइस मैंन

३. डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम के जन्मदिन को संयुक्त राष्ट्र द्वारा किस रूप में मनाता है ? विश्व विद्यार्थी दिवस

४. डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के डिजाइन अध्यापक का क्या नाम था ? - प्रो. श्रीनिवासन

५. डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम की पहली मंजिल क्या थी ?- पायलट के रूप में वायु सेना में जाना

६. पहली बार कलाम कहाँ से बड़े- बड़े शहरों का अध्ययन करने निकले? - रामेश्वर से

७. कलाम जी ने अपना अध्ययन क्षेत्र किसे चुना ? - एरोनॉटिकल इंजीनियर

८. डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम बेंगलूरु में किस कंपनी में काम करते थे? - हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड

९. डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम को किन दो क्षेत्रों में काम करने का अवसर मिला ?

- पहला -वायु सेना में दूसरा - तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय में

१०. साक्षात्कार के दौरान कलाम जी ने क्या अनुभव किया है ? - उम्मीदवार में योग्यता एवं हाजिरजवाबी की क्षमता तथा प्रत्युत्पन्नमति के गुणों को भी देखा जाता है ।

II.संदर्भ सहित व्याख्या -

१. 'मुझे तुम से ज्यादा उम्मीद थी । यह कार्य निराशाजनक है । मुझे बहुत निराशा हुई । तुम्हारेजैसा होनहार छात्र और ऐसा काम।'

२.'उस दिन मैंने दो बातें सीखी । पहली जो शिक्षक अपने विद्यार्थी की प्रगति का ध्यान रखता है, वहीं हमारा सर्वश्रेष्ठ मित्र होता है ।'

३. 'मैंने सिक्के के दो पहलू देखे हैं- नकामी के साथ निराशा के गर्त में जाने पर मैंने जीवन के सबसे कठोर पाठ सीखे है ।'

४. आज शुक्रवार की दोपहर है और मैं सोमवार की शाम तक पूरे विन्यास का आरेख ड्राइंग देखना चाहता हूँ । यदि ऐसा नहीं कर पाए तो तुम्हारी स्कॉलरशिप बन्द कर दी जाएगी ''

III. निबंधात्मक प्रश्न-

१. 'जब मैं फेल हुआ निबंध के आधार पर डॉ. ए. पी जे. अब्दुल कलाम जी के जीवन संघर्षों पर प्रकाश डालिए ।

२. 'जब मैं फेल हुआ निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

३. 'जब मैं फेल हुआ निबंध के आधार पर डॉ. ए. पी जे. अब्दुल कलाम जी की जीवन यात्रा पर प्रकाश डालिए ।

<u>प्रस्तुति - हर्षा के.पी, हीरा विमेन्स कॉलेज तोक्कोट्टु ।</u>

6.पानी है अनमोल - श्रीराम परिहार

श्रीराम परिहार का जन्म 16 जनवरी 1952 को मध्यप्रदेश में हुआ । इन्होंने एमए हिन्दी एवं पी.एच.डी की उपाधी 'हिन्दी उपन्यास : दाम्पत्य जीवन का स्वरूप' विषय पर प्राप्ती की । इनकी प्रकाशित कृतिया - अब तक कुल ११ ग्रन्थ प्रकाशित एवं लगभग ५० से अधिक शोध आलेखों का प्रकाशन हुआ है । अनेक विशेषकों एवं राष्ट्रीय स्तर की पत्र पत्रिकाओं में ललित निबंधों, नवगीतों, शोध-आलेखों एवं समीक्षाओं का प्रकाशन हुआ है ।

प्रस्तुत निबंध 'पानी है अनमोल' में श्रीराम परिहार जी ने पानी का महत्व उपयोग और संरक्षण के बारे में बताने की कोशिश की है ।

जिस देश में दूध-दही बिकता था, जगह-जगह प्याऊ खुलवाते, वही आजकल पानी के पाऊज बिक रहे हैं । जहा नर्मदा के जल को अमृत मान रहे थे उसीको बोतलों में बचा रहे है । पहले राजा सडक बनाने के साथ कुए, पेड लगाता था, आजकल पाइपलाइन द्वारा कारखानों में जाकर बोतलबन्द बिक रहा है । यह मनुष्य जल-प्राप्ति के नैसर्गिक अधिकार, पैसे की लालच ने खूनी और बेशरम बना दी है ।

चूल्हे की आग के समान धरती गरमी से तप रही है । जब लेखक मोटर की खिडकी से देखते हैं तो, बिजली के तार पर नीलकण्ठ पंछी चुप और उदास बैठा है, मानो मौसम की चुनौती ले रहा हो । दूसरा दृश्य, जब वे रेल यात्रा में नर्मदा के पुल पार कर रहे तो सतपुडा और वनांचल में पानी की कमी दिखाई देता है । लेकिन नर्मदा पत्थर पर छंद लिख रहा हो । ऐसी त्गपती गरमी में भी नर्मदा के समृद्ध को देखकर लगता है जैसे मॉ की छाती का दूध हरा हो, यह तो नदी की जीवंत संस्कृति है ।

नर्मदा पार करते ही लेखक दु:खित हो जाते है किम, प्लास्टिक के थैलियों में पानी बेचा जा रहा है । वहीं कुए-बावडियों को कूडादान बना दी गयी है । जिस बेईमानी से परोपकार ही मिठ गया है । सृष्टि के सौंदर्य को करेंसी में बदलना है ना ही व्यापाएर में । हम सब बेपरवाह होकर पानी को पाऊच और बोतलों में भरकर अपने विकास पर गुमान कर रहे हैं । जिससे अपने को लज्जित होते हुए भी धनी बनने का अहंकार निहित है ।

जगह-जगहों, अड्डों, बाज़ारों, रेल्वे स्टेशनों के अन्दर पाऊच और बोतलों को सजाकर बेच रहे हैंण । लेकिन निमाड के दो गावों में अब भी दूध नहीं बेचा जा रहा है, जबकी हमारे यहा पानी को बेचा जा रहा है, कितना दुर्भाग्य है । इसके आगे लेखक का कहना है कि - झीने, तालाब और नदियों का पानी नीलाम व उद्योगपतियोंण के वश में होगी जिसका उपयोग जनसाधारण नहीं कर सकेगा । इससे क्या हाल होगा उसका उन्हें कुछ भी खबर नहीं । पानी को अजूरी में भरकर पीने के बदले बोतल को मुह में रख अमीर लोग ललचाएंगे ।

पैसा होते खरीदना न हो तो मर जाए, उनको क्या लेना देना । गरीबों के अधिकार को दबोच कर अमीरों और नव-विवाहित पैसे को पानी के बराबर खर्च कर रहे हैं । इस षडयंत्र में हम सब फस चुके है जिसे अधिकतर महानगरों में देख रहे हैं ।

पानी से जुडा है आदमी का धर्म-कर्म, तन-मन, संस्कार और सम्मान।आखों में प्रकाश, प्राणों में शान्ति इन सभी संघर्षों को परास्त कर सकता है।प्रकृति की कृपा से मिला पानी मुक्त और पर्याप्त है इसे संतुलित बनाए रखे । एकएक बूद से जलाशय, नदिया, समुंदर लहराए और उनकी आरती उतारें यह आवाज़ हर जगह गूज उठने की आशा करते हैं ।

पानी के बरसने से ही धरती में सोना उगेगा । नदी-घाटियों में ही सभ्यता छिपी हुई है । इसीकी ख्दाई में कई अवशेषा पाये है । ऐसा किसने सोचा था कि पंचतत्वों में से किसी एक कि भी बिकी शुरू हो जाएगी, जिससे संस्कृति को भी खरीदी जाएगी । पानी को पानी ही रहने देना है । सिर्फ हमारे दाग धोना आवश्यक है ।

लेखक जब 1975 में मुंबई में पच्चीस पैसे एक गिलास पानी को जगह-जगह बिकता देख, उनका मोल-तोल होता देख, इतना दु:खित हो गये कि कहीं भी न जाने का निर्णय ले लेते हैं । लेकिन गोदावरी के उद्गम पर पहाडी चढाई के दोनों तरफ पानी बिका जा रहा है। तब भारत भूषण की पंक्तिया याद आने लगी । "इस मनुष्य को धन की ये अन्धी दौड कहा ले जायेगी ।"

उनके पिताजी कहते - बाज़ार में अनाज पानी के मोल बिक गये । यह कहावतें भी झूठ हो गयी, क्योंकि आजकल तो कारखानों से बना पनी की पाऊच और बोतल ही ऊचे दाम में बिकते हैं।इस कृत्य से कई अधिक नीचे गिर चुका है ।

हमारी संस्कृति-सभ्यता कई रंगों से बना है । पानी को खेत में खींचे है, पंछीयों को पिलाए रही के प्यास मिठाए । सामाजिकता का विस्तार किया जाता जिससे मानवता मुस्कुराती । रहीम के कलम भी गा उठती - पानी को बचा के रखिए, क्योंकि बिना पानी के सब सूना हैं, पानी के जाने से मोती अपनी चमक खो देता है, चूना सूख, बेकार हो जाता है ठीक उसी प्रकार सम्मान के खो जाने से मनुष्य के जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता ।

खरीदा हुआ पानी, खरीदी हुई संस्कृति से जीवन नहीं चलेगा । हमने धरती को मोल-भाव किया, उनका पिण्डों से आकाश को भर दिया, वायुमंण्डल को ज़हरीले गैसों से भर दिया और रोशनी की कीमत वसूली। अब पानी पर डाका डाल रहे हैं ।

इन सभी घटना से अत्यंत दु:खित लेखक कहते हैं कि - मानव अपनी बौद्धिक अपच और अपार संपत्ती ने उन्हें पागल बनाया है । न जाने खुद की प्रतिष्ठा बनाए रखने को मिट्ठी में अपने को मिठा रहा है ।

अंत में लेखक कहते है पानी का अधिकाधिक संग्रहण और उचित उपयोग करना है । नहीं तो काली घटा छा जायेगी । वर्षा होगी तो धरती और मानव दोनों लहलहाएगा ।

पानी है अनमोल

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए -

१. पानी है अनमोल निबंध के लेखक कौन है ? - श्रीराम परिहार

२. बोतल बंद पानी किस अधिकार का हनन करते है ? - जल -प्राप्ति के नैसर्गिक

३.पानी का टोटा कहाँ पर पड़ा है ? - विन्ध्याचल और सतपुड़ा के सूखे और दरके अंचल और वनाचंल

४. नर्मदा नदी किस का प्रतीक है? - जीवनवाही संस्कृति

५. पानी पर किसका कब्जा होगा ? - उद्योगपतियों का

६. लोगों की प्यास और पानी का व्यापार किस प्रकार किया जा रहा है ? - पानी के पाउच बना कर

७. सभ्यता की खुदाई में किन-किन के अवशेष मिले?- जलाशय, कुंड, कुएँ, बावडी,प्याऊ और नहर के

८. पाउचों और बोतलों में बंद करके किस संस्कृति की कीमत चुकाई जा रही है ? जल संस्कृति

९. कंपनी उत्पाद बोतलबंद पानी कितने रुपए में बेचा जा रहा है ? - सात से दस

१०. हमने किसका मोल-भाव किया है? - धरती का

II. संदर्भ सहित व्याख्या -

१. 'पानी का बिकना सृष्टि के तत्व का व्यपार में तबदील हो जाना है । सृष्टि के लालित्य का करेंसी में बदल जाना है ।'

२. 'बाजार में फलाँ अनाज इस बार पानी के मोल बिक गया । किसान की वस्तु की कोई कीमत नहीं और जो कारखानों से चीज़े बनकर आती है उनके उँचे दाम है ।'

३. 'एक स्वच्छन्द तत्त्व को पिंजरे में कैद करना है ।'

४. 'जीवन में पानी है तो संघर्षों को परास्त करने का विश्वास है । यह विश्वास, यह आस, यह शक्ति यह हरापन, यह ओज , यह आभ सब कुछ पानी से मिला है ।'

III.निबंधात्मक प्रश्न

१) पानी है अनमोल निबंध में पानी का व्यापारीकरण पर प्रकाश डालिए ।

२) पानी है अनमोल निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

३) जल संस्कृति की कीमत किस तरह से वसूली जा रही है ? सविस्तार स्पष्ट कीजिए ।

<u>प्रस्तुति - हर्षा के.पी, हीरा विमेन्स कॉलेज, तोक्कोट्टु ।</u>

7.ताज - डॉ. रघुवीर सिंह

डाä. रघुवीर सिंह भावनात्मक निबन्धकार के रूप में श्रेष्ठ स्थान पर रहे हैं । हिन्दी गद्य साहित्य में भावनात्मक निबन्ध में इतिहास के अतीत का आधार लेकर इस इतिहास की सजगता और सजीवता अपने निबन्ध में अंकित करनेवाले एकमात्र निबंधकार के रूप में डा. रघुवीर सिंह का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है । इनके साहित्य में भावनाओं के अधिक महत्व दिया गया है ।

'ताज' इस निबन्ध में मानवीय संवेदनाओं की स्थिति उभरकर आयी है । मानसिक दशाओं का चित्रण तथा उमडते भावों का अनुटी व्यंजना इस लेख की मनुष्य विशेषता दिखाई देती है । 'ताजमहल' आज भी प्रेम के प्रतीक के रूप में खडा है । लोग इसे दिखकर उस अतीत दिन के गौरवगान करते हैं तथा उसी पर आसु बहाकर चले जाते हैं ।शाहजहा ने अपने लिए नहीं बल्की अपनी प्रेयसी मुमताज और उनके प्रेम के लिए ताजमहल की निर्माण की । इस जगत में मनुष्य अपने-अपने कुछ श्रेष्ठ स्मृति-चिन्ह पीछे छोडकर चला जाता है, ताकी वह अमरत्व प्रदान कर सके ।'ताजमहल' शाहजहा और मुमताज के प्रेम की अमर देन है ।

लेखक ने 'ताज' निबंध में मुमताज और शाहजहा के प्रेम के प्रतीक के रूप में खडा 'ताजमहल' को सामने रखकर उसके अतीत की ओर जाकर ताजमहल सम्बन्धी जो इतिहास है उसे भावना और कल्पना का सत्य देकर उसे भावमयी श्रृंखला में पिरोया है । शाहजहा का मुमताज के प्रति प्रेम की भावना तथा मुमताज के मरोणोपरान्त शाहजहा के हृदय में उठी हुई निश्वासे, ओह, उदासीनता, निराशा, दर्द, व्याकुलता आदि संवेदनाओं को चित्रित किया है । ताजमहल जिस दिन बन कर पूरा हो गया और शाहजहा बडी धूमधाम के साथ पहले पहल उसे देखने गया होगा वह दिन कितने महत्व का रहा होगा । जिस समय शाहजहा ने उस समाधी को देखा होगा उस समय उसके हृदय की क्या दशा होगी, उनके मन में न जाने कितनी अनुभूतिया उद्वेलित हो उटी होगी, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है ।

शाहजहा ताजमहल को देखकर कितनी बार रोया होगा । मनुष्य जीवन की कितनी ही इच्छाए अतृप्त ही नष्ट हो जाती हैं । कितने वैभव विलीन हो जाते हैं । शाहजहा के साथ भी प्रकृति ने क्रूर चेष्टा की, फिर भी सफेद पत्थरों से उसकी आवाज़ गूजती हैं - "मैं भूला नहीं हू"। आज भी मुझे तुम्हारी स्मृति है। शाहजहा ने निराकार मृत्यु को सौन्दर्यपूर्ण स्वरूप प्रदान किया । ताजमहाल प्रेमाग्नि की धधकती हुई ज्वाला का ही प्रतीक है ।

ताजमहल आगरा के यमुना नदी के दाहिने तट पर स्थित है । सफेद संगमरमर से निर्मित ताजमहल का निर्माण करने के लिए दुनिया के सबसे अच्छे कारीगारों को बुलाया । इसके तैयार होने में बहुत सा धन और समय लगा । शाहजहाँ अपनी पत्नी की सभी यादों को अपनी नज़रों के सामने रखने का निर्णय लिया, तब उसने आगरा के किले के सामने अपने आन्तरिक प्रेम की याद में ताजमहल का निर्माण कराया । वह आगरा के किले से नियमित रूप से ताजमहल को देखा करता था और अपनी पत्नी को याद करता था ।

ताजमहल अपनी अद्भुत और अद्‌वितीय वास्तुकला के लिए जगत-प्रसिद्ध है । लगभग तीन शताब्दिया बीत जाने के बाद आज भी शांत, मौन साधक की भाति अविचल

खडा है । ताजमहल के अपूर्व सौन्दर्य को देखने के लिए देशविदेश से आए सैलानियों की भीड लगी रहती है ।

मनुष्य को स्वयं पर गर्व है । वह स्वयं को जगदीश्वर की अत्युत्तम तथा सर्वश्रेष्ठ कृति समझता है । वह अपने व्यक्तित्व चिरस्थायी बनाना चाहता है । चिरकाल से मब्नुष्य यही प्रयत्न कर रहा है कि किस प्रकार से वह अमर हो जाये । लेकिन अभी तक उसे अमर होने का उस अमृत का पता नहीं लगा है । यही कारण है कि जब मनुष्य को प्रतिदिन निकटतम आती हुई रहस्यपूर्ण मृत्यु की याद आते ही उसका हृदय बेचैनी से तडपने लगता आई । भविष्य में आनेवाले अपने अन्त के तथा उसके अनन्तर अपने व्यक्तित्व के ही नहीं, अपने सर्वस्व विनष्ट होने के विचार मात्र से मनुष्य का सारा शरीर सिहर उठता है । मृत्यु के अप्रिय कठोर सत्य को भूलने के लिए अपने स्मृति से, अपने मस्तिष्क से निकाल बाहर करने के लिए कई बार मनुष्य सुखसागर में मग्न होने का चेष्टा करता है । जब मनुष्य को पता चलता है कि मृत्यु के भयानक प्रवाह में वे स्वयं ही नहीं, उसकी समग्र वस्तुएँ, स्मृतिया, स्मृतिचिन्ह आदि सब कुछ बह जायेंगे, इस संसार में मनुष्य के सांसारिक जीवन का चिन्ह मात्र भी न रहेगा और उसको याद करनेवाला भी कोई नहीं मिलेगा । ऐसे में मनुष्य इस भौतिक संसार में अपनी अमिट स्मृतियों को छोड जाने को विकल उठा, इसी का नतीजा है पिरेमिड स्फिंक, बडे-बडे मकबरे, कीर्तिस्तम्भ, कीलिया, विजयद्वार, विजयतोरण आदि कृतिया मनुष्य की इसी इच्छा का फल है । एक तरह से देखा जाये तो इतिहास भी अपनी स्मृति को चिरस्थायी बनाने की मानवीय इच्छा का एक प्रयत्न है ।

मनुष्य का मस्थिष्क विधाता की एक अद्वितीय कृति है । लेकिन समय के सामने किसी की भी नहीं चलती, समय के प्रलयंकारी भीषण प्रवाह में सब कुछ बह जाता है । फिर भी मनुष्य अपने इच्छा और स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए भिन्नभिन्न प्रयत्न करता रहता है । ताजमहल भी मानव मस्तिष्क की ऐसी ही अद्वितीय सफलता का एक अद्भुत उदाहरण है ।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. 'ताज' निबंध किसके द्वारा लिखा गया है ? - डा. रघुवीर सिंह
2. मनुष्य स्वयं को किसकी अत्युत्तम तथा सर्वश्रेष्ठ कृति समझता है ? - जगदीश्वर की
3. मनुष्य के सारे प्रयत्नों का उद्देश्य केवल एक है वह कौन सी है ? - अमृत को प्राप्त कर या पीकर वह अमर हो सके ।
4. मनुष्य का हृदय बेचैन की मारे कब तडपने लगता है ? - जब उसे रहस्यपूर्ण मृत्यु की बाद आ जाती है ।

5. विधाता की एक अद्‌वितीय कृति कौन सी है ? - मनुष्य का मस्तिष्क
6. मानव मस्तिष्क की अद्‌वितीय सफलता का अद्भुत उदाहरण कौन सा है ? - ताजमहल
7. शाहजहा की प्रियतमा का नाम क्या था ? - मुमताज
8. दार्शनिक जीवन के बारे में लेखक क्या कहते हैं ? - पानी का बुदबुदा कहते हैं ।
9. ताजमहल किस नदी के किनारे बना है ? - यमुना
10. आज भी ताजमहल के उन सफेद पत्थरों से किस तरह आवाज़ आती है ? मैं भूला नहीं हूँ
11. शाहजहाð ने मृत्यु को असद सौन्दर्यपूर्ण स्वरूप किस प्रकार प्रदान किया ? - ताजमहल के रूप में

संदर्भ सहित व्याख्या :

1. "यमुना को स्वयं पर गर्व है । वह स्वयं को जगदीश्वर की अत्युत्तम तथा सर्वश्रेष्ठ कृति समझता है ।"
2. वे जानते हैं कि उनका अन्त अवश्यंभावी है, किन्तु सोचते है कि सम्भव है उनकी स्मृतिया संसार में रह जाए ।"
3. "स्नेह और जीवन की अन्तिम घडिया थी उन सुखमय दिनों की, प्रेम तथा आह्लाद से छलकते हुए उस जीवन का अब अन्त होने वाला था ।'
4. "संसार उसकी सुन्दरता को देखकर स्तब्ध है, सुखी मानव जीवन के इस करुणामय अन्त को देखकर क्षुब्ध है ।"
5. उन श्वेत पत्थरों में आवाज़ आती है - "आज भी मुझे स्मृति है ।'

निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'ताज' निबंध का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
2. 'ताजमहल एक सच्चे प्रेम की अद्भुत निशानी है । स्पष्ट कीजिए ।

<u>प्रस्तुति -डॉ. शकुंतला डी.डॉ.पी. दयानन्द पई सरकारी प्रथम दर्जा कॉलेज रथबीदि, मंगलूर</u>

8. वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव - डॉ. नामदेव

डाä. नामदेव द्‌वारा लिखित प्रस्तुत निबन्ध में वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपान्तरन की प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया से जो समाज उत्पन्न होता है उसे 'ग्लोबल गाäव' या 'वैश्विक ग्राम' कहते हैं । यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। मतलब सम्पूर्ण दुनिया अनेक माहाद्‌विपों, भूभागों में विविधताओं में विभाजित हुए भी एक गðव के समान दिखती है, जिसमें कोई पराया या अजनबी नहीं है ।

वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को संसार की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना है । वस्तुओं, सेवाओं, व्यक्तियों और सूचनओं का राष्ट्रीय सीमाओं के आरपार स्वतंत्र रूप से संचरण ही वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण कहलाता है ।

वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप विश्व के सभी देशों में वस्तुओं की कीमत लगभग समान होती है । संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था में सभी व्यापारिक क्रियाओं का अन्तर्राष्ट्रीकरण ही वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण के स्वरूप का निर्धारण करता है । वैश्वीकरण के माध्यम से विभिन्न देशों के बीच अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन, उपभोक्ता की अभिरुची, जीवन शैली और मांग में बदलाव लाना वैश्वीकरण का प्रमुज्ख उद्धेश्य है ।

वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण ने आज पूरी दुनिया को एक बडे बाज़ार - शाäपिंग काäप्लेक्स में परिवर्तन कर दिया है । इस चौतरफा बाज़ार में मानवता की रक्षा के बजाय वस्तुओं में अधिक निवेश किया गया है, जहाठ बेचो - खरीदों की भावना के साथ-साथ सभ्यता और संस्कृति को भी खरीद-फरोख्त वस्तु बना दी गयी है ।

वैश्विक आत्मकेन्द्रित और उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर भी पडा है । भारतीय संस्कृति त्याग, कल्याण, सादगी, सन्तोष इत्यादि सुन्दर मानवीय भावनाओं के लिए जानी जाती है । "सन्तोष परम धन है" उसका मूल मन्त्र रहा है । लेकिन सादगी सम्पन्न यही भारतीय संस्कृति अब वैश्वीकरण के प्रभाव से अब ग्लैमराइस और उपभोक्तावादी संस्कृति बन गई है । जिस संस्कृति में पूजा-पाठ, उपासना, भक्ति इत्यादि दिखावे की वस्तु नहीं थी, - अब उसका जोर-शोर से महिमामण्डन किया जाता है । विदेशी वस्तु देश के बाज़ार में प्रवेश करने के कारण लोगों के जीवन मूल्य भी बदले और धनाढ्य वर्ग शान-शौकत से रहने और अपनी सम्पदा का प्रदर्शन करने लगे ।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने एक सीमा में भारत के वंचितों विशेषकर दलितों के सशक्तीकरण में योगदान दिया है, लेकिन उससे ज्यादा नुकसान भी किया है । क्योंकि वैश्वीकरण द्वारा पोषित आर्थिक उदारीकरण में सरकारों ने अपने जनकल्याणकारी योजनाओं को संकुचित किया है, जिससे सबसे ज्यादा प्रभावित वंचित तबके के लोग होते हैं । वैश्वीकरण देश के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को कमजोर कर रहा है । सामूहिकता में विश्वास करनेवाले लोग अब स्वार्थी और आत्मकेन्द्रीत होते जा रहे हैं । अब 'हम' की जगह 'मैं' ने ले लिया है, जो भारतीय संस्कृति 'हम' की भावना से संचालित होती थी वह अब मैं में सिमटकर रह गयी है । सामाजिकता और समाजीकरण की जगह व्यक्ति और व्यक्तिवाद का बोलबाला बढता जा रहा है । पैसे को लेकर परिवार के अन्दर ही नहीं बल्की पडोसियों के बीच भी तनाव बढ रहे हैं । संयुक्त परिवार अब इतिहास बन चुके हैं । परिवार की सम्पत्ती को लेकर उसके सदस्य आपस में लडने लगे हैं और एक दूसरे की हत्या करने लगे हैं ।

मर्यादा, सहनशीलता, सम्मान समाज से गायब होने लगे हैं । स्त्री को पूजने वाली भारतीय संस्कृति अब स्त्री को सिर्फ काम-पिपासा शान्त करने वाली उत्पाद के रूप में देख रही है । इस नव दृष्टि ने स्त्रियों की आज़ादी और सम्मान को खतरे में डाल दिया है । स्त्रियों की आज़ादी और सम्मन को खतरे में डाल दिया है । दलितों आदिवासियों के कई फलदायी पेशों को बडे-बडे कारोबारियों ने हाथिया कर उनको बाजारू उत्पाद में तब्दील कर अपनी शोहरत और सम्पत्ती में चार-चाठेंद इज़ापा कर लिया है । यह निर्विवाद है वैश्वीकरण के फैलाव के साथ ही प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार बढा है और अनेक संगीन अपराधिक **कृत्यों** में वृद्धि हुई है । गाठेंवों का विकास रुक गया है और निरन्तर शहरीकरण जारी है, एक तरह से देहाती संस्कृति और शहरी संस्कृति के मूल्य बोध भिन्न होते जा रहे हैं ।

वैश्वीकरण दुनिया समेत भारत को जबरदस्त ढंग से प्रभावित किया है । वैश्वीकरण के पोषक शक्तिशाली संस्कृतियाठें, छोटी संस्कृतियों को निगलती जा रही है जिसके कारण स्थानीय पहचान, उद्योग, कलाएठं इत्यादि संकट में हैं, । वैश्वीकरण ने भारतीय संस्कृति के साझे मानवीय मूल्यों को बदलने का प्रयास किया है जिसके कारण क्षणिक खुशी तो प्राप्त होती है लेकिन व्यक्ति की समस्त निजता और स्वतन्त्रता बाज़ार के हाथों में स्थानान्तरित हो जाती है । इस तरह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह भौतिक रूप से स्वतन्त्र रहते हुए भी मानसिक गुलामी में चला जाता है ।

कोई स्पष्ट रूप से यह नहीं बता सकता है कि भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव अच्छा या बुरा रहा है, क्योंकि दोनों काफी स्पष्ट है । आर्थिक दृष्टिकोण से वैश्वीकरण ने वास्तव में भारतीय बाज़ार को आकांक्षाओं के लिए ताज़ी हवा की सांस ली है । हालाकि, यह वास्तव में गहरी चिंता का विषय है जब भारतीय परंपराएं, संस्कृति और मूल्य दांव पर है । भारत सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है । भारतीय परंपराओं, संस्कृति और मूल्यों से समझौता किए बिना विकास की दशा में वैश्वीकरण का प्रयास किया जाना चाहिए ।

एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. भूमंडलीकरण का समानार्थी शब्द क्या है ? - वैश्वीकरण
2. भारतीय संस्कृति पर किसका प्रभाव पड रहा है ? - वैश्विक आत्मकेन्द्रिक और उपभोक्तवादी संस्कृति का
3. भारतीय संस्कृति किस के ज्लिए प्रसिद्ध मानी जाती है?-त्याग, कल्याण, सादगी, संतोषऔरभारतीय भावनाओं
4. विश्वीकरण से भारतीयज़ संस्कृति के साझे किसे बदलने का प्रयास किया गया है?- भारतीय मूल्यों का
5. भारतीय संस्कृति किस के लिए जानी जाती है ? - सहिष्णुता

6. वैश्वीकरण देश के किस क्षेत्र को कमज़ोर कर रहा है ? - सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र को
7. मनुष्य ने पंचतत्त्वों को किससे तौलना शुरु कर दिया है ? धन
8. भारतीय संस्कृति किनके हाथों में जाकर असहिष्णु हो रही है ? - पूँजी जीवादी संस्कृति
9. 'वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति का प्रभाव' निबंध के लेखक कौन है ? - डॉ. नामदेव
10. व्यक्ति की समस्त निजता और स्वतंत्रता किसके हाथो स्थानान्तरित हो जाती है ? - बाज़ार

संदर्भ सहित व्याख्या :

1. "सामाजिकता और सामाजीकरण की जगह व्यक्ति और व्यक्तित्ववाद का बोलबाला बढता जा रहा है । समाज में सामूहिकता की जगह साम्प्रदायिकता ने लिए लिया है ।"
2. "इस चौतरफा बाज़ार में मानवता की रक्षा के बजाय वस्तुओं में अधिक निवेश किया जाया है, जहाठँ खरीदो बेचों की भावना के साथ-साथ सभ्यता और संस्कृति को भी खरीद-फरोख्त की वस्तु बना दी गयी है ।"
3. "वैश्वीकरण की उदार संस्कृति करोबार में लचीली है, लेकिन मेहनतकशों के लिए निरंकुश है ।"
4. "भारतीय संस्कृति 'हम' की भावना से संचलित होती थी, वह अब "मैं" सिमट कर रह गई है ।"

निबंधात्मक प्रश्न :

1. वैश्वीकरण आत्मकेन्द्रित और उपभोक्तवादी संस्कृति का प्रभाव हमारे भारतीय संस्कृति पर किस प्रकार पडा है ? सविस्तार लिखिए ।
2. 'वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव' निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
3. वैश्विक बाज़ार ने किस प्रकार भारतीय का दोहन कैसे किया है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

<u>प्रस्तुत्ति-डॉ. शकुंतला डी, डॉ.पी. दयानन्द पई सरकारी प्रथम दर्जा कॉलेज रथबीदि, मंगलूर</u>

I SEM B.SC

(FND,FD,GD,FT,IDGD,AVE,C,CS,LD,BHM)

SL. NO.	CHAPTER	LECTURER NAME
1.	सद्गति और लेटर बाक्स	उमेश हेगडे
2.	बाप-बेटा और दिल्ली में एक मौत	डॉ. कल्पना प्रभु
3.	मलबे का मालीक और पहाड	डॉ. वैशाली सालियान
4.	हरी बिन्दी और स्विमिंग पुल	डॉ. परशुराम गणपति मालगे

1.सद्गति - प्रेमचंद

लेखक का परिचय:

हिन्दी साहित्य के कथा-सम्राट प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के नजदीक लमही नामक ग्राम में हुआ । उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था । प्रेमचंद को नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है । आपको जीवन संघर्षों के कथाकार माना जाता है । लोगों का दु:ख-दर्द ही आपके साहित्य का प्राण है । प्रेमचंद का आरंभिक साहित्य आदर्शवादी था । परन्तु बाद में प्रेमचंद ने यथार्थवाद को प्रमुखता दी क्योंकि आपने अनुभवों से जाना था कि आदर्श और यथार्थ में जमीन आसमान का अन्तर है ।

प्रेमचंद ने अपनी साहित्य सेवा में लगभग एक दर्जन उपन्यासों की रचना की है, जिसमें गोदान, गबन, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, सेवासदन, निर्मला आदि विख्यात है । कहानी की दृष्टि से आपने करीब तीन-सौ कहानियाँ लिखी हैं । जिन्में कफन, पूस की रात, बूढी काकी, पंचपरमेश्वर, सद्गति जैसी कहानियाँ हिन्दी कहानी संसार के अनमोल रत्न हैं । मुंशी प्रेमचंद की लंबी बीमारी के कारण 8 अक्टूबर 1936 जलोदर रोग से उनका देहांत हुआ था। **पात्र:** दुखी - मुख्य पात्र, झुरिया - दुखी का पत्नी, पंडित घासीराम और उनकी पत्नी (पंडिताइन)

प्रेमचंद जी द्वारा रचित "सद्गति" एक बहुत ही दर्दनाक कहानी है।"सद्गति"में दुखी जो एक दलित व कहानी के नायक है। जिसमें उन्होंने समाज की क्रूरता को प्रदर्शित किया है।

बेटी की शादी के लिए पिता सारी जिन्दगी मेहनत करता है या तो सारी जिन्दगी की कमाई शादी में लगा देता है । फिर शादी के बाद उम्र भर के लिए कर्जे में डूब जाता है । कभी यह नहीं सुना की शादी के लिए पिता ने इतनी मेहनत की हो कि शादी से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो जाए ?

माना जाता है कि जातिवाद में किसी एक जाती को सर्वश्रेष्ट कहा जाता है और किसी जाति को सबसे निम्न समझा जाता है । जब उच्च जाति का व्यक्ति निम्न जाति के व्यक्ति को छुना पसंद नहीं करता तो उसी निम्न जाति के व्यक्ति द्वारा छुई वस्तुओं का इस्तेमाल कैसे कर सकता है ? कहते हैं कि भूखें को खाना खिलाना पुण्य का काम है लेकिन अपने ही घर के सामने कोई व्यक्ति यदि भूख से अपनी जान गवा दे तो इस कार्य को किस श्रेणी में रखा जायेगा?

कहानी के आरंभ में प्रेमचंद जी दुखी नाम के एक चमार से कराते हैं । दुखी अपने कामों में व्यस्त है और उसकी पत्नी झुरिया भी घर का काम काज निपटा रही है। उनके बातचीत से यह पता लगता है कि दुखी अपनी बेटी का सगाई तय कर चुका है और वह पंडित जी को बुलाने से सकुचा रहा है, परन्तु पंडित जी का आना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि वे विवाह के लिए साइत (शुभ समय) निकाल सके । संकोच उन्हें इस बात का है कि वे नीची जात के लोग है और पंडित जी ठहरे बडे. ब्राह्मण । उनका छुआ कुछ भी छू नहीं सकते, यहाँ तक की

आसन भी उन्होंने पत्तलों का बनाना ठीक समझा । दुखी पंडित जी को निमंत्रण देने खाली पेट निकल तो जाता है, परन्तु उसे क्या पता था की साइत के लिए उसे अपनी जान ही गवानी पड़ेगी । पंडित जी उससे इतना कठोर परिश्रम कराते है कि कड़ी धुप में बिना खाने और पानी के वह दम तोड़ देता है, और बिटिया की शादी करवाए बिना ही परलोक सिधार जाता है । इसलिए इस कहानी को "सद्गति" नाम दिया गया है क्योंकि पूरे दिन के पश्चात दुखी को अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्ति मिल जाती है। परन्तु हम सोच भी नहीं सकते की उसके परिवार पर एक दिन के अनावश्यक श्रम क्या कहर (संकट) ढा गया ।

कथा सार: इस कहानी में हमें समाज और उसकी निर्दयता का बोध होता है । जब दुखी पंड़ित जी के घर जाता है ब्राह्मण को बुलाने बेटी के विवाह के शुभ अवसर पूछने तब घर का सारे काम करने को कहता है । पंडित घासीराम ईश्वर का परम भक्त था । हर दिन सुबह उठते ही नहा धोकर पूजा पाठ में लग जाता था। पूजा समाप्त होने में करीब दस बज जाते थे । घासीराम ईश - उपासना के बाद जब बाहर आता है । पंडित को देखते ही दुखी के मन में श्रद्धा जाग उठती है और नमस्कार करके हाथ बांधकर खडा हो जाता है।

पंडित दुखी चमार से पूछता है कि 'आज कैसे चला आया रे दुखिया?' तब दुखी उत्तर में बताते हैं कि 'बिटिया की सगाई कर रहा हूँ महाराज। कुछ साइत सगुन विचारना है।कब मर्जी होगी?' पंडित जी कहते हैं 'आज मुझे छुट्टी नहीं है 'शाम तक आजाऊँगा कहते हैं।'

घर का कुछ काम करने को कहते हैं झाड़ू लगाना, द्वार लीपना, और आंगन में पडी गाँठ वाली लकडी को चीरने के लिए कहकर चला जाता है। जब दुखी पंड़ित जी के घर जाता है, तो घास काटकर, भेंट के तौर पर ले जाता है, दुःख की बात तो ये है कि उस दरिद्र व्यक्ति के उपहार से पंड़ित जी के गायों को तो खाना नसीब हो गया, किन्तु उस मनुष्य को खाने का एक दाना भी नहीं प्राप्त हुआ । इसका अर्थ है कि किसी भी कार्य करने के लिए दक्षिणा देना है ।

लकडी काटना जो किसी के लिए सरल कार्य नहीं है । जिस लकडी को काटने का काम दुखी को मिला है उस लकडी में एक गांठ है, जिसे सामान्य कुल्हाड़ी से काटना मुश्किल है । लगातार कुल्हाड़ी मारने पर भी लकडी पर एक निशाना तक न आया फिर भी बार - बार कार्य करता रहा क्योंकि उसकी बेटी की सगाई होना आवश्यक है । भूखों (खाली पेट) से काम करते - करते दुखी की आँख लग जाती है । पंडित दुखी पर चिल्लाकर कहते हैं "अरे, दुखिया तू सो रहा है? लकडी तो अभी ज्यों की त्यों पडी हुई है। इतनी देर तू करता क्या रहा ? मुट्ठी भर भूसा ढोने में सांझ कर दी । उठा ले कुल्हाड़ी और फाड डाल, तुझ से जरा सी लकडी नहीं फटती। फिर साइत भी वैसी ही निकलेगी, मुझे दोष मत देना ।"

तब दुखी को लगा अगर एक चिलम तम्बाखू पीने को मिल जाती तो शायद कुछ ताकत आयेगी । मगर वह ब्राह्मणों का मोहल्ला था । कोई भी तम्बाखू खाने वाले नहीं थे । तब उसे

याद आया कि गाँव में एक गोंड भी रहता है । उसने तम्बाखू भी और चिलम दी, पर आग वहाँ न थी । दुखी ने कहा, " आग की चिन्ता न करो भाई । जब दुखी चिलम पीने के लिए आग मांगने पंडित जी के घर के अन्दर चला आता है तो पंडिताइन उस पर इतना क्रोधित हो जाती है कि आग दुखी के सर पर ही फेंक देती है । इसका भी दुखी बुरा नहीं मानता है और सोचता है कि मैं एक पंडित के घर चला आया इसकी सजा ईश्वर ने अभी इतनी जल्दी दे दी ।

लकडी के पास आकर पंडित जोर देने लगे की लकडी पर जोर से मार दी अभी फट जायेगी । अचानक दुखी के अन्दर न जाने कैसी शक्ति आ गई थकान, भूख, कमजोरी मानो सब भाग गई । पूरी ऊर्जा के साथ लकडी पर आधे घंटे तक प्रहार करता रहा परिणाम स्वरूप लकडी बीच से फट गई और दुखी के हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर गिर पडी । खुद दुखी भी चक्कर खाकर गिर गया ।

कहते हैं कि भूखें को खाना खिलाना पुण्य का काम है लेकिन इस कहानी में दुखी जो घर से जलपान भी नहीं कर के आया था । सारा दिन दुखी से मुप्त में काम करवाने के बाद भी उसे दो रोटी देना भी पंडित व पंडिताइन ने जरूरी नहीं समझा । भूख और अत्यधिक मेहनत करने के परिणाम स्वरूप दुखी की मृत्यु हो गई ।

पंडित ने पुकारा और कहा लकडियों के और टुकडे कर दे लेकिन दुखी उठा ही नहीं । पंडित भीतर गये और तैयार होकर बाहर आये। दुखी को पुकारा चलो तुम्हारे घर ही चल रहा हूँ । मगर दुखी न उठे । पंडित जी समझ गये दुखी प्राण त्याग दिये हैं । पंडित जी ने जब यह बात अपनी पत्नी से बताई तो पत्नी ने कहा चमारन में कहला भेजो मुर्दा उठा ले जाएँ । खबर तो पहुंचा दी गई लेकिन पुलिस के डर से कोई मुर्दा उठाने नहीं आये । दुखी कीपत्नी और बेटी दोनों रोती हुई दुखी के पास आई आधी रात तक रोती रहीं लेकिन कोई मदद करने न आये । सुबह हो गई कोई चमार लाश उठाने नहीं आये । चमारिन भी रो -पीटकर चली गई । दुर्गधं फैलने लगी, पंडित जी ने रस्सी का फंदा दुखी के पैर में डाला और घसीट कर गाँव के बाहर खेत में छोड़ दिया जहाँ दुखी की लाश गीदड़ और गिद्ध, कुत्ते, कौए नोचते रहे । वापस आकर पंडित जी ने स्नान, दुर्गापाठ व गंगाजल छिड़क कर खुद को पवित्र किया ।

निष्कर्ष :- प्रेमचंद जी ने इस कहानी के माध्यम से जातिवाद पर प्रहार किया है । जहाँ उच्च श्रेणी की जातिवालों द्वारा निचली जातिवालो का शोषण किया जाता है । परन्तु आज भी कुछ गाँवों में, दलितों को ऊँचे वर्ग के लोगों के कुए से पानी नहीं नसीब है । ईश्वर ने सबको एक समान बनाया है। ऊँच-नीच तो इंसान के द्वारा किया गया वर्गीकरण है ।

पंडित जी अपने पद का दुरूपयोग करते गए और ऊलटे उन्होंने इतना बड़ा पाप कर दिया । पंडितों को यह ऊँचा पद क्यों दिया जाता है? केवल ब्राह्मणों के घर में जन्म लेने से तो कोई

सम्मान के लायक नहीं बन जाता । मनुष्य अपने कर्म और सोच से सम्मान के लायक बनता है।

इस कहानी के माध्यम से पता चलता है कि इंसान के भेद भाव भी कितना औपचारिक हैं एक तरफ पंडित जी दुखी के मृत्यु के बाद भी उसे इसलिए नहीं छुना चाहते क्योंकि वह अपवित्र हो जायेंगे । यदि किसी चमार को स्पर्श किया तो दुसरी तरफ उसी चमार द्वारा फाडी लकडी से घर की रसोई में भोजन तैयार किया जायेगा । फाडी गई लकडी छुनेवाली स्त्री, रसोई, या खाना कुछ भी अपवित्र नहीं होगा ?

यह स्पष्ट है कि साहित्य समाज का दर्पण है । परिणाम स्वरूप साहित्य का विषय व स्थिति समाज से ही ली जाती है । जिस तरह दर्पण में दिखने वाले व्यक्ति का प्रतिबिंब सजा होता है । उसी तरह समाज के विषय को साहित्यिक रूप देते समय साहित्यकार द्वारा सजा दिया जाता है ।

वर्तमान में इन सारे विषयों पर स्थिति कैसी है यह हमारे आसपास के महौल और समाचार पत्रों के माध्यम से पता चल ही जाता है । लेकिन आज से लगभग सौ वर्ष पहले जातिवाद स्थिति कैसी थी इसकी झलक प्रेमचंद जी द्वारा लिखी कहानी सद्गति से ही पता चलता हैं । यह कहानी पढ़कर स्पष्ट रूप से यह तुलना कर सकते हैं कि स्वतंत्रता के बाद हमारे समाज में कितना बदलाव आया है या वर्तमान में और कितना बदलाव करने की आवश्यकता है ।

यदी वह दलित ही अपने आप को पंडित के हवाले कर दे, उसमें मूर्खता उसकी ही है । आज के दलित किन्तु खुद को उस लाचारी से देखना चाहते । जब पंडिताइन दुखी का अपमान करके उसे आग देती है, दुखी का ह्रदय कृतज्ञता से गद - गद हो जाता है, परन्तु मैं पूछता हूँ कि उसे यह अपमान सहने की ज़रुरत ही क्या था? इसलिए आज के दलित अपने आप को दुखी की जगह देखने को राज़ी नहीं है । दुनिया बदल रही है और हम धीरे - धीरे जात और धर्म के आधार पर भेदभाव को हटा देगें ।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए

1. 'सद्गति' कहानी के लेखक का नाम लिखिए?- **मुंशी प्रेमचंद।**
2. मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या है? - **धनपत राय श्रीवास्तव ।**
3. झुरिया के पति का नाम क्या है? - **दुखी ।**
4. 'सद्गति' कहानी के पंडित का नाम क्या है? - **घासीराम ।**
5. दुखी, पंडित घासीराम के घर में किस लिए गए थे?**बेटी की सगाई के सगुन को विचारने के लिए।**
6. दुखी का लाश उठाने कोई चमार क्यों न आये थे? - **पुलिस का रोब से ।**
7. पंडित जी ने मुर्दे (लाश) को घसीटकर कहाँ ले गये? - **गाँव के बाहर ।**

8. दुखी चमार की पत्नी का नाम क्या है? - **झुरिया ।**

9. दुखी के लाश को खेत में कौन - कौन सी प्राणी नोच रहे थे?-**गीदड़, गिद्द और कुत्ते, कौए ।**

10.लाश को किससे बांधा गया? - **रस्सी से**

11.लकडी क्यों कट नहीं रही थी? - **गाँठ के वजह से**

संदर्भ सहित प्रसंग व्याख्या कीजिए

1. "बिटिया की सगाई कर रहा हूँ महाराज! कुछ साइत - सगुन बिचारना है। कब मर्जी होगी?"
2. "इस चमरवा को भी कुछ खाने को दे दो, बेचारा कब से काम कर रहा है। भूखा होगा ।"
3. "कुछ खाने को मिला कि काम की कराना जानते हैं, जाके माँगते क्यों नहीं?"
4. " उठके दो-चार हाथ और लगा दे । पतली-पतली चौलियाँ हो जायें ।"
5. "अरे, क्यों पड़े ही रहोगे दुखी? चलो, तुम्हारे घर चल रहा हूँ । सामान ठीकठाक है न?"

निबंधात्मक प्रश्न

1. "सद्गति" कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
2. "सद्गति" के सार लिखते हुए कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।
3. "सद्गति" कहानी के शीर्षक की सार्थकता समझाइए ।

उमेश हेगडे, हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री गोकर्णनाथेश्वर कॉलेज, मंगलूर.

2.लेटर बॉक्स - अज्ञेय

लेखक का परिचय: अज्ञेय जी को आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रमुख साहित्यकार माना जाता है । अज्ञेय जी का पूरा नाम 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेय' था । अज्ञेय उनका उपनाम था । अज्ञेय का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के जिले कुशीनगर में हुआ था । इनके पिता जी का नाम हीरानंद शास्त्री था, जो की भारतीय पुरातत्व विभाग में उच्च पद पर आधिकारी थे । वे संस्कृत के विद्वान थे । माता जी का नाम श्रीमति कांति देवि था ।

अज्ञेय ने 1929 में लाहौर के फॉरमैन कॉलेज से बि.एस.सी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । 1930 में उन्होंने अंग्रेजी में एम. ए का अध्ययन प्रारंभ किया, किन्तु क्रांतिकारी दलों में सक्रिय भागिता के कारण उन्हें बंदी बना लिया गया और उन्हें 4 साल तक कारावास में रखा गया । 1961 में वे कैलिफोर्निया विश्वविध्यालय में भारतीय संस्कृति और साहित्य के अध्यापक नियुक्त हुए । 1964 में 'आँगन के पार द्वार' काव्य के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ और 1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला । 4 अप्रैल 1987 को दिल्ली में अज्ञेय जी की मृत्यु हुई थी ।

'अज्ञेय' जी हिन्दी में 'प्रयोगवाद' और 'नयी कविता' के प्रवर्तक माने जाते हैं । उनकी कहानियों पर फ्रायड का मनोविश्लेषणवाद और अस्तित्ववादी प्रभाव नजर आता है । उन्होंने 'सैनिक' और 'विशाल भारत' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन करने के बाद इलाहाबाद से 'प्रतीक'

नामक पत्रिका निकाली और ऑल इंडिया रेडियो की नौकरी स्वीकार की । उनकी कहानियाँ बौद्धिकता, मनोविज्ञान एवं सामाजिक यथार्थ का समन्वय है । 'जयदोल' , 'कोठरी की बात' , 'साँप' आदि कहानियाँ इस बात के साक्ष्य हैं । उनके प्रतिष्ठित उपन्यास हैं - शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने - अपने अजनबी । इसके अतिरिक्त निबन्ध, समीक्षा, नाटक, कहानी, उपन्यास, आदि विविध गद्य विधाओं में भी उन्होंने उच्चकोटि की रचनाएं लिखी हैं ।

'लेटर बॉक्स' :'लेटर बॉक्स' अज्ञेय के सामाजिक सरोकार को गहराई से बुलन्द करने वाली महत्वपूर्ण कहानी है । कहानी की घटनाओं का समय लगभग द्वितीय महायुद्ध का रहा है । इसमें पाँच वर्षीय रोशन की दर्दभरी चित्ताकर्षक (दिलकश) कहानी कही गई है जो ऐसे ही हजारों का प्रतिनिधि है ।

कथावाचक की रोशन से मुलाकात शरणार्थी कैम्प के निकट के डाकघर में होती है । रोशन अपने बाबूजी को खत भेजना चाहता है । उसके पास मोटे अक्षरों में कुछ न कुछ लिखा एक कुचला -मुचला पोस्टकार्ड है। उसे वह अपने पिताजी को पहुँचाना चाहता है । लेकिन पिता कहाँ है, उनका पता लडका न जानता था। वह अपने चाचा और माँ के साथ लाहौर जाने के लिए निकला था । पिता जी भी शेखुपूरे तक साथ थे । फिर अलग हो गए । लाहौर में मिलने की बात की थी । पर ये लोग लाहौर पहुँचे ही नहीं । रास्ते में आक्रमणकारियों ने चाचा और माँ को मार दिया । रोशन किसी न किसी प्रकार बच गया । एक आदमी के साथ चलकर आखिर शरणार्थी कैम्प पहुँच गया । बच्चा पोस्टकार्ड कथावाचक के पास देता है । कथावाचक कुछ न कुछ कहकर तसल्ली देता है । पर रोशन को उस पर भरोसा नहीं होता । वह अपना कार्ड वापस माँगता है । पर वह निराश नहीं है । उसके चेहरे पर अडिग विश्वास है - अवश्य उसकी मुलाकात ऐसे आदमी से होगी जो उसके बाबूजी का पता बता सकेगा ।

कहानी में बालमनोविज्ञान का भी कारगर (प्रभावकर) ढंग से इस्तेमाल किया गया है । जिसकी वजह से रोशन का अपूर्व चरित्र और निखर उठता है । इनकी कहानियों का रचना सैनिक-काल के जीवन से नाभि-नाल जुड़ा है । ये कहानियाँ आहत संवेदना की और मानव मूल्यों के आग्रह की कहानियाँ है । विभाजन से उत्पन्न समस्याओं से जूडे हुए है ।

"लेटर बॉक्स" में मनोदशा का विस्फोट है । लडका पिता से बिछुड़ गए है । माँ चल बसी है । शरणार्थी कैम्प में रोशन प्रस्तुत है । सभी लोगों की तरह लेटर बॉक्स में चिट्ठी डालने का अरमान, किन्तु चिट्ठी में पता लिखने के लिए कोई पता नहीं जानता है ।

कथा सार: शरणार्थी कैम्प में कथाकार के अपना कोई न थे । जिन - जिन अपनों का पता लेना चाहता था वे मिले और सबकी खबर मिल गई थी । बड़ी से बड़ी दुर्घटना को मानव 'न कुछ' करके निकाल देता है यदि वह कहे कि 'मेरे अपनों की कोई क्षति नहीं हुई ।' कैंप से जब बाहर निकलकर आये कुछ पत्रों के साथ उन्में कुछ पते मिले हुए थे और कुछ अपने और

परिचितों का, उस पर टिकट लगाकर डाक में ड़ालने लगे । छुट्टी का समय था, ड़ाक से कुछ लेना न था । मगर जल्दी ड़ाकघर में चिट्ठी डाल कर जल्दी पहुँचाना चाहता था । छोटी जगहों में लेटर बॉक्स से डाक निकालने में देर हो या न कोई बात नहीं होती । मगर बडी जगहों में तेजी होती है और जरूरी होती है ।

जब डाकघर जाकर देखा, बॉक्स का मुहँ पर टीन का ढक्कन लगी हुई थी। चिट्ठी भीतर डालना मुश्किल है; फंस जाती थी । तब हाथ डालकर अंदर पहुँचाने पर एक - एक करके पत्र अंदर पढ जाते थे ।

ऐसे समय पर एक छोटा लड़का कथाकार की तरफ देख रहा था । बच्चों के लिए लेटर बॉक्स ताजमहल और पिरामिडों से कम न लगता था । संसार के सात अचरजों में स्थान पाने की याद मेरे बचपन का था । लेटर बॉक्स बच्चों के लिए जादू जैसे लगता था क्योकि मुँह में चिट्ठी डालने के लिए मुँह ढूंढना और भीतर तक ठेलना । लडका कथाकार को देख रहा था । इसलिए कथाकार बच्चे को देखकर मुस्कुरा दिया ।

बच्चे के चेहरे पर कौतूहल न था धैर्य का भाव था । कथाकार सारे अपने पत्र डालकर जब जाने लगे कि बच्चा साहस से पूछा, " जी, इसमें कहाँ की चिट्ठी जाती है?" । तब मैने कह दिया " सब जगह की । तुझे कहाँ भेजनी है चिट्ठी ?" ।

बच्चे के हाथ में एक कुचला- मुचला पोस्टकार्ड था । पूछने पर अनाश्वस्त भाव से मेरी ओर बढ़ाया । उस में लिखा हुआ था, मगर पता न था । पगले पता लिखना है, ऐसे बताया और पता पूछने लगा । तब लडका कहा कि "सो तो बाबूजी बताएंगे-मुझे क्या मालूम....." ऐसे कहते-कहते आवाज में रुंआसी आ गई ।

घर कहाँ है पूछने पर लडका बताया "शेखुपूरे" । अब मैं स्थिति को समझ लिया, ध्यान से उसे देखा। उम्र कोई पाँच वर्ष: गोरा रंग के लडके पर इतनी जल्दी मैल की धारियों ने छिपा लिया है । तन पर एक फटी कमीज और एक फटा कोट , कमर के नीचे नगां , टांगों पर जहाँ-तहाँ चोटों के सूखे झिल्ली (घाव के ऊपर जमी हुई परत)और पैर सूजे हुए थे । सिर नंगा, बाल रूखे और कुछ भूरे - से, आँखों में गहराई था। नरम स्वर में फिर से पूछा, "शेखुपूरे" में कहाँ ? " वीरांवाली" । क्या तेरे बाबूजी वहीं है, नहीं, वहां से तो चले थे ।

तू फिर किसके साथ आये । लडके ने कहा न जानता हुँ । तब बच्चे के बारे में पूरा जानकारी पूछने लगा । उसका नाम है रोशन ; घर से माँ और चाचा के साथ निकले थे लाहौर जाने केलिए । पिता भी साथ में थे शेखुपूरे तक वहां से अलग चले थे रोशन की बुआ और फूफा को बुलाकर लाने केलिए क्योंकि उनका दोनों बेटे जंग में मारे गये थे । लाहौर जाते-जाते और भी कई लोग साथ हो चुके थे । मगर रास्ते में ही कुछ लोग बन्दूकों से आक्रमण किए तब चाचा जी मर गए । तब लाहौर जाने से सब लोग मना किए इसलिए रास्ते में से मुड़ गए ।

मगर आक्रमण करने वाले ज्यादा थे बहुत सारे लोग मर गए । उन्होंने औरतों को पकड़ने लगे माँ को भी पकड़ लिए । माँ चिल्लाई और जोर से काट कर बचने का प्रयत्न की मगर उन्होंने जमीन पर पटकाकर मुँह पर कुल्हाड़ी की उल्टी तरफ से मार दिए और माँ के छाती पर पैर रखकर और भी चोट पहुँचाये । तब साथियों ने रोशन को पकड़ा और दूर निकल गए । आठ - दस दिन में जालंधर पहुंचे । पर पहले जो साथ में थे अब कोई न रहे सब नए चेहरे थे । उन्हीं में से एक व्यक्ति कैंप ले आये थे । रोशन को वहाँ मन न लगा वह पिता से मिलना चाहते थे क्योंकि माँ तो मर गयी थी ।

इतना कहकर लड़का रोने लगे साथ ही कहानी भी कहता रहा । उन से कथाकार ने बताया वापस कैंप में लौट जा और वहीं रह जाना । तेरे नाम और कैंप का पता देकर रेडियों से खबर करवाऊंगा, तेरे पिता जी सुनकर चिट्ठी लिखेंगे और लेने आयेगें ।

लड़के ने अपना चिट्ठी लिखने का विचार व्यक्त किया । तब कुछ कह न सका क्योंकि बच्चे को धोखा करना बड़ा पाप था । मैने कह दिया, " इस कार्ड को तू शेखुपूरे गाँव के पते पर डाल दे ।" लड़का बताया पिता वहां से चले है, तब बुआ के गाँव के पते पर डालने के लिए कहा । फिर रोशन कहा पिता वहाँ बैठ थोड़े ही रहेंगे ।

रोशन ठीक ही बता रहे हो, पत्र में पता जो लिखे है, वहाँ से ड़ाकवाले पत्र आगे बाबू जी तक पहुँचा देगें कह दिये कथाकार । रोशन कह दिए कि तुम कुछ भी न जानते मेरे चिट्ठी को मुझे वापस दे दो । बच्चा जो कहा था सच्च था, मैने चिट्ठी रोशन को दे दिया ।

लड़का चिट्ठी को लेकर फिर से मोड़ लिया और कसकर पकड लिया । कथाकार धीरे - धीरे वहाँ से चलने लगे। बच्चे के आँखों में आँसू सूख गए थे फिर भी धैर्य दिखाई पढ रहा था । अधिक जाननेवाले कोई तो आयेगें डाकघर में उन से बताकर वह अपने पिता को भेज देगें । चिट्ठी बाबू जी को मिल जायेंगे ।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए

1) "लेटर बॉक्स" कहानी के लेखक का नाम लिखिए? **अज्ञेए ।**

2) अज्ञेए जी का पूरा नाम क्या है? **सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन अज्ञेए ।**

3) अज्ञेए जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर मिला ? **'कितनी नावों में कितनी बार'।**

4) लडके का नाम क्या था ? **रोशन ।**

5) रोशन का गाँव कौन सा था ? **शेखुपूरे के वीरांवाली ।**

6) रोशन का पिता किसे लाना के लिए गए थे? **रोशन की बुआ और फूफा को बुलाने ।**

7) रोशन के हाथ में क्या था ? **पोस्टकार्ड ।**

8) रोशन की माँ को किस से मार दिया गया ? **कुल्हाड़ी की उल्टी तरफ से ।**

9) बच्चों के लिए लेटर बॉक्स कैसे लगता था । **ताजमहल और पिरामिडों जैसे ।**

10) अज्ञेय जी को साहित्य अकादेमी पुरस्कार किस काव्य केलिए मिला? **आँगन के पार द्वार।**

संदर्भ सहित प्रसंग व्याख्या कीजिए

1) "जी , इसमें कहाँ की चिट्ठी जाती है ? "

2) " सब जगह की । तुझे कहाँ भेजनी है चिट्ठी ?"

3) "सो तो बाबूजी बताएंगें - मुझे क्या मालूम ....."

4) " और मेरी चिट्ठी ? मैं भी तो उन्हें लिखना चाहता हूँ ।'

5) "हाँ बेटा, ठीक कहते हो तुम, मैं सचमुच कुछ नहीं जानता....."

निबंधात्मक प्रश्न

1)"लेटर बॉक्स" कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

2)"लेटर बॉक्स" के सार लिखते हुए कहानी का विशेषता स्पष्ट कीजिए ।

3)"लेटर बॉक्स" कहानी के शीर्षक की सार्थकता समझाइए ।

उमेश हेगडे, हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री गोकर्णनाथेश्वर कॉलेज, मंगलूर.

3.बाप- बेटा - भीष्म साहनी

लेखक परिचय :- भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 ई में रावलपिंडी में हुआ था| वे हिन्दी के ख्यातिप्राप्त निबंधकार है | दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापक रहे हैं | भटकती राहें, पहला पाठ आदि उनकी संकलन बहुत लोकप्रिय हैं | वांग्चू , अमृतसर आ गया इन कहानियों को पर्याप्त सराहना मिली है |

"तमस" नामक उपन्यास पर उन्हें अकादमी पुरस्कार मिला है |

सारांश:- भीष्म साहनीजी से लिखित कहानी बाप- बेटा में लेखक गरीबों की दयनीय स्थिति को चित्रित करतें है| एक बाप और उसका बेटा फौजी दफ्तर में आते है | पहले बेटे की वीरमृत्यु फौज में हुई थी| उसके पेंशन से परिवार का पालन बड़ी मुश्किल से गुजरता था | एक पंडित के यहाँ बची -खुची ज़मीन भी गिरवी रखनी पड़ी थी | कर्ज़ के कारण उस ज़मीन से भी उनको हाथ धोना पड़ा था |

अब दूसरे बेटे को जो घर का एकमात्र सहारा था , फौज में भर्ती करवाने के लिए आया है | वह लड़का अभी मुश्किल से सोलह वर्ष का है | पुरोहित को रिशवत देकर पिता ने सत्रह वर्ष की जन्मपत्री प्राप्त की है | कहानी के आरम्भ में वही अधेड़ उम्र का आदमी एक फौजी बारक़ की दीवार के बहार खड़ा अंदर झरोखों से देख रहा था | दीवार के बहार गेट के पास जहाँ वह बृहदाकार फौजी सिपाही की तस्वीर थी देश सेवा के लिए देश की फौज में भर्ती हो जाओ |

सामने मैदान में दस बारह नववयस्क लड़के परीक्षा देने खड़े थे | फौजी अफसर बेत से लड़कों के घुटनों पर मार रहे थे , बाप को घबराहट हो रहरर थर्र क्योंकि उसके बेटे के मुलायम चिकने शरीर का स्पर्श कर उसे निकल दिया तो वे क्या करेंगे |

थोड़ी देर बाद परीक्षा समाप्त हुई | शाम हो चुकी थी | दीवार के पीछे से लड़के बहार आने लगे | बेटे को देखते ही बाप ने पुछा क्या हुआ रसिये? लड़के रसिये निकाह सबको ले लिया| बेटे ने बाप को माँ को याद कर बाप से पूछा कि माँ खफा तो न होगी ? बाप कहने लगे कि माँ गलत कहती है तुम्हारी उम्र सत्रह बरस दो महीने ही है| पुरोहित की पटरी में भी यही लिखा है वह तो केवल तुझे न भेजने के लिए सोलह साल की उम्र कहती है | लड़का झट से उठा और और चल दिया कहने लगा कि बारक़ के पीछे हाज़री देनी है अगले दिन उसे अपनी छावनी में भेजेंगे | बेटे ने पाँव छुए बाप ने गले से लगा लिया और कहा किसीसे अपनी उम्र न कहना , सबके साथ भाई के तरह रहना | अफसर का हुक्म मानना बीटा सर हिलाते नहीं भूलूंगा बापू कहते हुए बराक के पीछे चला गया| बाकि सबकुछ वैसा का वैसे ही रह | केवल एक बाप से उसका बेटा दूर चला गया |

निष्कर्ष :- भीष्म सहनीजी ने इस कहानी के दौरान बाल सहज सवाल जवाब के साथ यह दर्शाया है कि एक समय भारतवर्ष में गरीबों के हालात प्रकार की हो गयी थी कि लोग अपने छोटे उम्र के लड़कों को मजबूरन फौज में भेज दिया करते ताकि उसके मृत्यु के बाद भी पेंशन के नाम पर कुछ पैसे तो आते | यह विडम्बना प्रस्तुत कहानी में एक बाप का अपने बेटे के उम्र को बढाकर फौज में भर्ती करवाते हुए दर्शायी है | युवावों का देश प्रेम भी यहाँ बखूबी दर्शाया गया है |

एक शब्द या एक वाक्य केलिए प्रश्न :-

१) लड़के का नाम क्या था ? -- रसिये |

२) बाप- बेटा कहनी के कहानीकार कौन है ? -- भीष्म साहनी |

३) बेटे की सही उमर क्या थी ? सोलह साल |

४) बेटे की उम्र बाप क्या बताते है ? सत्रह साल दो महीने |

५) दीवार के पीछे बारक़ के मैदान में कितने लड़कों की पाँत खड़ी थी ?- दस- बारह

६) बाप फौज के दफ्तर क्यों आये थे ? पेंशन के पैसे लेने |

७) बाप और बेटा किस गाँव के थे ? नूरपुर के |

सन्दर्भ सहित व्याख्या के लिए प्रश्न :-

१) जब मैं आया तो वह बहुत रोती थी |

२) "सबको ले लिया है |"

३) फौज में किसीको सोलह बरस नहीं कहना, नहीं तो फौज में से निकल देंगे |

४) इसी बराक के पीछे | वाहन पर हाजरी होगी |

५) " नहीं भूलूंगा बापू |"

निबंधात्मक प्रश्न :-

१) " बाप - बेटा " कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ?

२) बाप - बेटा कहानी के आधार पर कहानीकार के उद्देश्य को विस्तार से लिखिए ?

३) बाप बेटा कहानी का सर लिखकर कहानीकार के उद्देश्य को स्पष्ट लिखिए ?

<u>प्रस्तुतकर्ता :- डॉ कल्पना प्रभु जे, हिन्दी विभागाध्यक्षा, केनरा कॉलेज, मंगलुरु</u>

4.दिल्ली में एक मौत - कमलेश्वर

लेखक परिचय:- कमलेश्वर इनका पूरा नाम है कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना ,इनका जन्म 6 जनवरी 1932 में मैनपुरी उत्तरप्रदेश में हुआ था | ये बीसवीं शती के सबसे सशक्त लेखकों में से एक समझे जाते हैं | कहानी ,उपन्यास, पत्रकारिता ,स्तंभ लेखन फ़िल्म पटकथा जैसी अनेक विधाओं में उन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया है | कमलेश्वर का लेखन केवल गंभीर साहित्य से जुड़ा न रहा बल्कि विभिन्न प्रकारों में पाया गया है | उनका उपन्यास "कितने पाकिस्तान " हो या फिर भारतीय राजनीती का एक चेहरा दिखाती फ़िल्म

'आँधी' हो कमलेश्वर का काम एक मानक के तौर पर देखा जाता है | कामगार विश्व नाम के कार्यक्रम में उन्होंने गरीबों, मजदूरोंकी पीड़ा उनकी दुनिया को अपनी आवाज दी है | इन्हे 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2005 में पद्मभूषण की उपाधी प्राप्त हुई है| इनकी मृत्यु 27 जनवरी 2007 में फरीदाबाद में हुई थी |

कथावस्तु:- कमलेश्वर से लिखित कहानी " दिल्ली में एक मौत" महानगर की यांत्रिक युग के व्यस्त एवं आत्म केंद्रित कृत्रिम जीवन को आधार बनाकर लिखी गयी वातावरण प्रधान कहानी है| सम्पूर्ण कहानी में इसी यान्तिकता का सजीव चित्रण दिखाई देता है | किसी की मौत में भी शामिल होना है तो एक औपचारिकतावश जा रहे होते हैं , किसी के पास शोक संवेदना प्रकट करने का भी वक्त आज नहीं है | लेखक शहरी जीवन के इस अभिशप्त समय को व्यक्त करते है |

कहानी के आरम्भ में लेखक ने एक महानगर के सबेरे की चहल पहल का वर्णन के साथ उस दिन अखबार में छपे किसी व्यक्ति की मौत की खबर का खुलासा किया है | अखबार में छपा था कि पिछली रात करोलबाग के मशहूर और लोकप्रिय बिज़नेस मैगनेट सेठ दीवानचंद की मौत इरविन अस्पताल में हो गई है | उनका शव कोठी पर ले आया गया है | कल सुबह नौ बजे उनकी अरथी आर्यसमाज रोड से होती हुई पंचकुइयां शमशान भूमि में दाह संस्कार के लिए जाएगी | अचानक लेखक के दरवाजे पर दस्तक हुई अतुल उनका पड़ोसी आयरन करनेवाले न मिलने पर आयरन लेने आया हुआ था| इसी प्रकार सरदारजी, उनका नौकर धर्मा , वासवानी जी सभी व्यस्त रहे किसीने भी अर्थी पर जाने की इच्छा प्रकट नहीं की |

सेठ दीवानचंद भले आदमी थे सबकी परेशानी दूर करने में मदद करते थे मगर किसी के पास उनके शवयात्रा में जाने की फुरसत नहीं थी \ लगा कि काम से काम उन्हें तो जाना ही है | कुहरा मचा हुआ था ,सर्दी भी थी लेकिन दीवानचंदजी के लड़के ने लेखक की बड़ी सहायता की थी |

इस वजह से उन्हें जाना होगा इसी सोच में पड़े थे | सर्दी की वजह से हिम्मत छूट रही थी | देखा कि सभी शवयात्रा में जाने के लिए तैयार होकर आये | सभी उनके सामने से टैक्सी पर या बस में चले गए केवल वे अर्थी के साथ जो कुछ लोग जा रहे थे उनमे शांमिल हुए

जब शवयात्रा पंचकुइयां शमशान भूमि पर पहुँची तो सारे पहचानवाले इकट्ठे दिखाई दिए| सभी अपने अपने काम पर जाने के लिए तैयार होकर आये थे , जैसे ही अर्थी को माला पहनाई नमन किया अपने अपने काम पर चलने लगे |लेखक सोचने लगे कि शायद वे भी तैयार होकर आते तो काम पर निकल जाते , मगर उन जैसे पांच लोह पेड़ के नीचे बैठे हुए थे तो वे उनमे शामिल हुए | उन्हें भी यही अब वे घर जाकर तैयार होकर दफ्तर जाएँ या शवयात्रा में शामिल होने का और हुई मौत का बहन बनाकर छुट्टी लें वैसे भी कड़ाके की सर्दी जो पडी है | वे यही सोचने लगे कि मनुष्य के लिए मौत अंतिम सच है , मौत के बाद सारे समीकरण बदल जाते हैं | किसे फुरसत है कि वह बैठे और लाश पूरी जलाकर ही घर लौटे | न घरवालों को इतना समय है, न बाहरवालों को,क्योंकि यह सब देखने-सुनने वाला तो चला गया , सदैव

के लिए | इस प्रकार कमलेश्वरजी ने दिल्ली में हुई एक मौत के उदहारण के साथ लोगों के यान्तिक जीवन को बखूबी चित्रण किया है |

विशेषताएँ :- कमलेश्वरजी अपनी कहानी 'दिल्ली में एक मौत ' में यही दर्शाते है कि -जन्म हो या मरण, सुख हो या दुःख ,आज का सभ्य कहा जानेवाला मनुष्य सहयोग -सहानुभूति के नाम पर मात्र ओपचारिकता ही निभाता है सच्चाई कम दिखावा अधिक करता है | दूसरों के दुःख बाँटने की अपेक्षा अपने सुख आराम और सुविधा पर उसका अधिक ध्यान है| नगर जीवन की यही विडम्बना है जिसे कहानीकार ने सशक्त अभिव्यक्ति दी है |

एक शब्द या एक वाक्य के लिए प्रश्न :-

१) दिल्ली में एक माउथ कहानी किसकी रचना है ? --- कमलेश्वर की |

२) दिल्ली में किसकी मौत हुई थी ? दीवानचंद की |

३) दीवानचंद की मौत कहाँ हुई थी ? दिल्ली के इरविन अस्पताल में |

४) सरदारजी के नौकर का क्या नाम है ? धर्मा |

५) अर्थी के साथ कितने आदमी चल रहे थे ? सात |

६) अतुल मवानी किसे कागज दिखा रहे थे ? वासवानी को |

सन्दर्भ सहित व्याख्या के लिए प्रश्न :-

१) "यार क्या मुसीबत है, आज कोई आयरन करनेवाला भी नहीं आया ज़रा अपना आयरन देना|"|

२) "तुमने सुना डीएनचांद की मौत हो गयी?"

३) "पहुंचना तो चाहिए - तुम ज़रा जल्दी से तैयार हो जाओ |"

४) "आईये सरदारजी , अब देर हो रही है ,दस बज चूका है |"

५) आवाजों से लग रह है कि औरतों के दिल को ज्यादा सदमा पहुंचा है |

निबंधात्मक प्रश्न :-

१) "दिल्ली में एक मौत " कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए |

२) दिल्ली में एक मौत कहानी का सार विशेषताओं के साथ लिखिए |

३) कमलेश्वर से चित्रित यांत्रिकता भरी जिंदगी पर कहानी के आधार पर प्रकाश डालिए |

<u>प्रस्तुतकर्ता :- डॉ कल्पना प्रभु जे, हिंदी विभागाध्यक्षा, केनरा कॉलेज, मंगलुरु |</u>

5.मलबे का मालिक - मोहन राकेश

मोहन राकेश का जन्म 1925 को अमृतसर में हुआ । पंजाब विश्वविद्यालय से इन्होंने हिंदी में एम. ए. किया तथा कुछ दिनों तक जालंधर के डी. ए. वी. कॉलेज एवं दिल्ली के शिक्षण संस्थान में अध्यापन करते रहे । प्रसिद्ध कहानी पत्रिका 'सारिका' का संपादन भी इन्होंने कुछ समय तक किया फिर नौकरी छोड़ दी और मृत्युपर्यंत स्वतंत्र लेखन में व्यस्त रहें । मोहन राकेश की मृत्यु 1972 में हुई । मोहन राकेश की मातृभाषा यद्यपि पंजाबी है पर उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी ही है। नए बादल जानवर और जानवर, एक और जिंदगी, इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह है तथा अंधेरे बंद कमरे प्रसिद्ध उपन्यास है । लहरों के राजहंस और आषाढ़ का एक दिन इनके प्रसिद्ध

नाटक हैं । आषाढ़ का एक दिन पर इन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

'मलबे का मालिक' सामाजिक संबंधों का सांप्रदायिक बिखराव और उससे पैदा होती भयावह अमानवीयता कहानी का विषय है लेकिन साथ ही व्यापक अर्थों में मलबे का मालिक नामक ये कहानी उस व्यक्ति और सामाजिक त्रासदी को अपना विषय बनाती है जो समाज के होने से भरोसे के टूटने से जन्मी है। समाज लोगों की कोई ऐसी भीड़ नहीं , बल्कि वह तो संबंधों का एक ऐसा संजाल होता है जो आपसी भरोसे पर टिका करता है। इसी भरोसे से बंधकर आसपास रहने वाले लोग एक सांझे आस-पड़ोस का निर्माण करते हैं । जहां हम सिर्फ पारिवारिक रक्त संबंधों को ही नहीं जीते वरन भरोसे पर आधारित इस सामाजिक संबंधों को भी जीते हैं । मलबे का मालिक कहानी इसी सामाजिक भरोसे के बिखर जाने को उद्घाटित करती है । कहानी की कथा शुरू होती है अब्दुल गनी नामक व्यक्ति से, जो साढ़े सात वर्षों के बाद पाकिस्तान से भारत पर्यटकों पर युवकों के एक समूह के साथ आया है । हॉकी के एक मैच को देखने के लिए जिसे वह देश के बंटवारे के समय हुए दंगे के डर से छोड़कर पाकिस्तान चला गया था। अब्दुल गनी धीरे-धीरे अमृतसर के बांसा बाजार वाले मोहल्ले की तरफ बढ़ रहा था । वह देखता है कि इन साढ़े सात सालों में ही यहां कितना कुछ बदल गया है । वह अपने घर की तरफ जाने वाले रास्ते को भी भूले जा रहा था । जगह-जगह पर नई इमारत बन गई थी । हालांकि बीच-बीच में ऐसे भी मकान दिख जाते हैं जो दंगों के दौरान जला कर राख कर दिए गए थे । एक गली के मुहाने पर पहुंचकर भटका हुआ सा खड़ा हो जाता है । तभी उसे एक युवक दिखाई पड़ता है जिसे वह देखते ही पहचान जाता है । अब्दुल गनी उसे आवाज देता है, 'मनोरी'! यह मनोरी कभी अब्दुल गनी के परिवार का पड़ोसी था । मनोरी भी अब्दुल गनी के बाद बताने पर कि वे लोग भी पहले इसी गली में रहते थे और उसका बेटा चिराग उनके घर का दर्जी था । मनोरी अब्दुल गनी को पहचान लेता है और उससे उसका हाल-चाल पूछता है । मनोरी उससे उसके आने का कारण पूछता है तो अब्दुल गनी कहता है कि 'चिराग और उसके बीवी बच्चे तो अब मुझे मिल नहीं सकते, मगर मैंने सोचा कि एक बार मकान की ही सूरत देख लूँ ! इतना बोलते -बोलते अब्दुल गनी की आंखों से आंसू निकल जाते है । मनोरी ने अब्दुल गनी की बांह अपने हाथों में ले ली और बोला चलो मैं आपको आपके घर ले चलता हूं । जहां कभी अब्दुल गनी का नया बनवाया हुआ मकान हुआ करता था। अब वहां केवल टूटे-फूटे मकान का मलवा इकट्ठा था । मनोरी ने उसी मलबे की तरफ इशारा करते हुए अब्दुल गनी से कहा कि 'वह था तुम्हारा मकान।' अपने नए बने मकान को इस हालत में देखे जाने की कल्पना उसने नहीं की थी । उसके मुंह से भी निकला 'मलबा'? इसके बाद मनोरी ने बताया कि

उसके मकान को उसी समय आग लगा दी गई थी। कहानीकार ने सामने पड़े अपने घर के मलबे को देखकर अब्दुल गनी की विचलित स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा कि गनी छड़ी के सहारे चलता हुआ किसी तरह मलबे के पास पहुंच गया । मलबे में अब मिट्टी ही मिट्टी थी। जिसमें से जहां- तहां टूटी और जली हुई ईंटें बाहर झांक रही थी । लोहे और लकड़ी का सामान उसमें से कब का निकाला जा चुका था । केवल एक जले हुए दरवाजे का चौखट ना जाने कैसे बचा रह गया था। पीछे की तरफ दो जली हुई अलमारियां थी । कालिख पर अब सफेदी की हल्की- हल्की तह उभर आई थी। उसने घुटने जैसे जवाब दे गए और वही वह जले हुए चौखट को पकड़ कर बैठ गया । क्षणभर बाद उसका सिर चौखट से जा सटा और उसके मुंह से बिलखने की आवाज निकली , हाय ओए चिरागदीन! इसी बीच गली के तमाम लोगों को मालूम पड़ गया था कि अब्दुल गनी पाकिस्तान से वापस अपने घर लौट आया है । लोग मन ही मन सोच रहे थे कि अब उसे सारी कहानी मालूम पड़ जाएगी और वह रक्खे पहलवान को नहीं छोड़ेगा ,लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता क्योंकि मनोरी ने अब्दुल को यह घटना बताई नहीं । रक्खे पहलवान और उसका एक साथी वहीं थोड़ी दूर पर स्थित एक कुएं के पास पीपल के नीचे बैठे यह सब देख रहा था । लेकिन रक्खे पहलवान इसे जाहिर नहीं होने दे रहा है कि अब्दुल गनी को यहां देख कर उसको कोई फर्क पड़ा है । लेकिन उसका साथी चिंतित है कि कहीं अब्दुल गनी को सारी कहानी मालूम ना पड़ जाए । मकान और अपने बेटे चिराग दिन का मातम मना कर अब्दुल गनी वापस लौटने लगता है । मनोरी ने उसकी बांह अपने हाथ में पकड़ी हुई थी । दोनों उसी कुएं के पास से गुजरते हैं जहां रक्खे पहलवान बैठा हुआ था। अब्दुल गनी एक नजर देखकर उसे पहचान लेता है और मुस्कुराते चेहरे के साथ उसकी तरफ अपनी दोनों बांहे खोलकर बढ़ता है। रक्खे पहलवान का गला सूख जाता है। उसकी जबान अटक जाती है । जिसके बेटे को उसने अपने साथियों के साथ मिलकर बड़ी निर्ममता के साथ कत्ल किया था । इस सच से वह अनजान है । आज उसी का बाप अब्दुल गनी अपने पड़ोसी रक्खे पहलवान से गले मिलने की कोशिश करता है । इस सवाल के साथ की रक्खे यह सब क्या हो गया। तुम लोगों के रहते हुए भी मेरा बेटा अपने पूरे परिवार सहित कत्ल कर दिया गया । यही वो कहानी का की चरम सीमा है जहां दोनों के बीच खामोशी छा जाती है। इसके बाद दो छोटी- छोटी बातें जो पूरी कहानी में बड़ी अनुगूंज बनकर विस्तार ले लेती है वह होती है । पहली अब्दुल गनी अपने बेटे की मौत का मातम मना कर यह मान कर वापस पाकिस्तान चला जाता है कि उसे घर में रहने की गलती नहीं करनी चाहिए थी । उसे मदद के लिए रक्खे पहलवान समेत अपने पड़ोसियों से मदद लेनी चाहिए थी और दूसरी जिस मकान को रक्खे पहलवान अभी तक पूरी दबंगई के साथ

अपना बताता आया था वह ऐसे निरर्थक मलबे में तब्दील हो गया। जहां समाज के वे कीड़े मकोड़े और आवारा कुत्ते बसते हैं । जिनकी समाज में अपनी कोई कमाई हुई अर्जित जगह नहीं हुआ करती। इस एहसास ने रक्खे पहलवान को उस मकान से पूरी तरह अपरिचित बना दिया जिसे हड़पने के चक्कर में उसने उसे एक निरर्थक मलबे में बदल दिया था।

विशेषता : मलबे का मालिक की मूल संवेदना कहानी में जिस मलबे का जिक्र किया गया है वह मलबा मकान के ढहने से नहीं बनता बल्कि उस घर के ढहने से बना है जो अपने आस पड़ोस के साथ सामाजिक संबंधों और सामाजिक भरोसे से बंधा था ।मोहन राकेश ने मलबे का मालिक कहानी के माध्यम से कमजोर होती हमारी सामाजिकता और अमानवीयता को उद्घाटित किया है। सांप्रदायिक सोच और उन्माद कैसे हमें हमारे सामाजिक परिवेश और माहौल में निरंतर कमजोर बनाने का काम कर रही है इसका एक सटीक रेखांकन इस कहानी में किया गया है। वस्तुतः खंडित सामाजिकता और कमजोर मानसिकता बोध मलबे का मालिक कहानी का मूल भाव और संवेदना है । कहानी का तात्कालिक संदर्भ विभाजन के दौर भारत का है किंतु साहित्य का प्रभाव किसी काल विशेष तक सीमित नहीं होता है । यह कहानी हमें हमारे आज के विभाजनकारी परिवेश और सामाजिक चिंतन के साथ भी जोड़ने का काम करता है।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए -

१.मलबे का मालिक के रचनाकर कौन है ?(मोहन राकेश)

२.मलबे का मालिक कहानी की रचना की पृष्ठभूमि क्या है? (भारत विभाजन की पृष्ठभूमि)

३.गनी मियां लाहौर से अमृतसर कितने वर्ष बाद आए थे? (साढ़े सात वर्ष बाद)

४.नुक्कड़ पर सुखी भातियारण की भट्टी वाले स्थान पर किसने कब्ज़ा किया था ? (पान वाले)

५.हकीम आसिफ अली की दुकान पर अब किसका कब्ज़ा है ?(मोची)

६.बाँसा बाजार अब कैसा बाजार हो गया है ? (कपड़े और तुर्की टोपी का)

७.बाँसा बाज़ार में मुख्यतः क्या बिकता था ? (बांस और शहातिरें)

८. चिरागदीन क्या काम करता था ? (दर्जी का)

९.रक्खा पहलवान कौन था ? (गली का बादशाह)

१०.चिराग की बीबी व उसकी दोनों लड़कियों के क्या नाम थे?(बीबी जुबैदा, दोनों लड़कियाँ किश्वर और सुल्ताना)

संदर्भ सहित व्याख्या -

१. सब कुछ बदल गया मगर बोलियाँ नहीं बदली !

२.चिराग और उसके बीबी बच्चे तो अब मुझे मिल नहीं सकते , मगर मैंने सोचा कि एक बार मकान की सूरत ही देख लूँ !

३. मलबा उसका कैसे है? मलबा हमारा है !

४. जो होना था , हो गया रक्खिया ! उसे अब कोई लौटा थोड़े ही सकता है ! खुदा नेक की नेकी बनाए रखे और बद की बदी माफ करे!

निबंधात्मक प्रश्न-

१. मलबे का मालिक कहानी की कथावस्तु लिखकर उसकी विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

२. मलबे का मालिक कहानी मानवीय मूल्यों का विघटन उजागर हुआ है स्पष्ट कीजिए।

३. मलबे का मालिक कहानी साम्प्रदायिकता की आड़ में अवसरवादी पहलू को उजागर करती है । सविस्तार विवेचन कीजिए ।

४. मलबे का मालिक कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए ।

डॉ. वैशाली सालियन, यूनिवर्सिटी इवनिंग कॉलेज मंगलूर

6.पहाड़- निर्मल वर्मा

निर्मल वर्मा का जन्म 1929 को शिमला में हुआ । बचपन का बड़ा भाग पहाड़ों में बीता । सेंट स्टीफन कॉलेज से एम. ए. इतिहास में करने के बाद कुछ वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया । 1959 में यूरोप प्रवास पर गए । इनकी रचनाएँ जीवन की अनुभूतियाँ है । जो यथार्थ में मानव मन से संबंधित है । निर्मल वर्मा की परिन्दे, जलती झाड़ी , पिछली गर्मियों में , बीच बहस में कहानी संग्रह है । चीड़ों पर चाँदनी, यात्रा- वर्णन और वे दिन उपन्यास है । इन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार, ज्ञान पीठ पुरस्कार, पद्म भूषण आदि सम्मान से विभूषित किया गया । इनकी मृत्यु 25 अक्टूबर 2005 दिल्ली में हुई ।

निर्मल वर्मा द्वारा लिखित 'पहाड़' संक्षिप्त किंतु संश्लिष्ट भाषा में लिखी कहानी है । कहानी में चित्रित पति-पत्नी अपने जीवन के रोमानी क्षणों साथ जीते हुए नजर आते हैं । बच्चा होने पर भी उन दोनों की चितवृत्तियों में किसी प्रकार का कोई अंतर नहीं आया था और न ही वे अन्य दंपतियों की तरह संतान होने के बाद विरक्त सा जीवन जी रहे थे । जीवन को जीने की उनकी अपनी एक विशेष शैली है। जिसमें सुख, आनंद और रोमानी परिवेश का मिश्रण दिखाई देता है। दोनों प्रकृति के बीच अपने बच्चे के साथ जाकर जीवन का एक अलग लुफ्त उठाते हैं । इस कहानी की यह विशेषता है कि भारतीय परिवारों में ऐसे बहुत कम परिवार है जो इस प्रकार का जीवन जीते हैं । प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने सभी पारिवारिक परेशानियों के पार जाते हुए आदर्श रोमानी परिवार को प्रस्तुत किया है ।

यह कहानी एक आर्किटेक्ट पिता उनकी पत्नी व उनके छोटे बच्चे की है । हर रात सोने से पहले वह बच्चा अपने माता-पिता से पहाड़ों पर घूमने के लिए जाने का सवाल पूछता तो मां खिड़की से बाहर कहीं दूर देखती रह जाती थी । पिताजी कागज पर अपनी पेंसिल को घुमाते एक क्षण के लिए रुक जाते थे । पति और पत्नी एक दूसरे को बेहद

चाहते थे । पतझड़ के मौसम के साथ पूरा एक साल बीत गया था । लेखक को सुखी दंपत्ति देखने में अच्छे लगते हैं और उनका आपस में प्यार करना उन्हें एक चमत्कार से कम नही लगता था । दोनों के जीवन में अपनी -अपनी पुरानी स्मृतियां थी । कहानी में चित्रित यह पति-पत्नी एक दूसरे से ऐसे घुल मिल गए थे जैसे वे एक ही सिक्के के दो पहलू हो । वह पूरी समरसता के साथ अपना जीवन यापन कर रहे थे । वैवाहिक जीवन को खुशी से जीते उन्हें एक संतान की प्राप्ति हो चुकी थी । संतान के जन्म के बाद भी उनके जीवन के रंग कम नहीं हुए थे बल्कि वे रंग और गाड़े हो गए थे। एक बच्चा होने के बाद भी वे दोनों जीवन के प्रति बिल्कुल विरक्त नहीं थे।

वे दोनों अक्सर हर साल घूमने के लिए पहाड़ों पर जाते थे । ऐसे ही जीवन के कई वर्ष एक के बाद एक गुजर गए। फिर एक साल अक्टूबर के महीने में वे उन पहाड़ियों पर गए जहाँ विवाह के बाद कुछ दिनों के लिए गए थे । वहां की रिज की बेंच लोअर बाजार जाने वाली पगडंडी पुराने चर्चयार्ड का कोना जहाँ वे अकसर बैठते थे । वही पुराना होटल सब कुछ वैसा ही था । पतझड़ के मौसम के कारण पर्यटकों की संख्या कम थी । उसी होटल में वही कमरा फिर से मिला जहां उन्होंने वैवाहिक जीवन की सुखद रातें एक साथ गुजारी थी । थकावट सी महसूस होने पर आए हुए दिन में वे कहीं बाहर नहीं गए । अपनी पुरानी स्मृतियों को याद करते हुए एक दूसरे की बाहों में लेटे थे । उनका छोटा बच्चा सो रहा था । पतझड़ के मौसम में पेड़ों के गिरे हुए पत्तों की एक अलग सी गंध पूरे परिवेश में छाई हुई थी । तभी बच्चा जाग जाता है और अपने माता-पिता की रोमानी छाया को बड़ी आंखों करके देखने लगता है । बच्चे के जागने पर मां ने उसके पास आकर उसके माथे पर हाथ रख देती है । बच्चा शांत स्वर में माँ से पहाड़ पर जाने के बारे में पूछता है । मां उसे बाहर आसपास के पहाड़ों को देखने के लिए कहती है । बच्चा चुप होकर अपने माता-पिता की तरफ देखने लगाता है । तीनों उसी शाम अंधेरे होने से पहले पहाड़ियों की ओर पड़ते है । बच्चा गोद में बैठाने की अपेक्षा पैदल ही चल रहा था । सर्द मौसम में सफेद हल्के बादल छा गए थे । समूचे पहाड़ी शहर पर एक पीली सी छाया उतर आई थी । माल रोड पार करके चर्च के पास ग्रंथालय की लंबी चौड़ी खिड़कियों पर पत्ते झूल रहे थे । लंबी चढ़ाई पैदल चलने के बाद बच्चे की आँखे ज्वर से भर गई । बच्चा कहीं न कहीं अपनी इस विस्मय दुनिया में अपने आप को अकेला पाता है ।

चारों ओर रिज का समतल मैदान था । वे रिज के एक कोने में खड़े थे । सामने एक बेंच जो अब काफी पुरानी लग रही थी । ऐसा लगता था कि मुद्दत से उस पर कोई नहीं बैठा था । पति-पत्नी उस बेंच पर बैठ कर अपनी पुरानी स्मृतियों को याद

कर रहे थे। बच्चा बेंच पर सिर रखकर सो गया। सामने दिखाई देने वाली पहाड़ियां अंधेरे में डूब रही थी। पति ने पत्नी के कंधे पर हाथ रखा तो उसने हाथ को अलग किया । पत्नी का यह कहना था कि बच्चे को यहाँ नहीं लाना चाहिए था । उसे लग रहा था कि उस रोमानी क्षण में बच्चा उसके लिए पहाड़ बन गया है । कुछ पल के लिए वे दोनों पुरानी स्मृतियों में खो जाते हैं । इस प्रकार निर्मल वर्मा की 'पहाड़' कहानी में संतान के साथ होने पर भी जीवन के रस रंग में उसका आनंद उठाने वाली सुखद दंपति जीवन का चित्रण किया गया है।

विशेषता- प्रेम व प्रकृति के दर्शन इस कहानी में दिखाई देते है । स्त्री व पुरुष के दाम्पत्य भाव का यथार्थ चित्रण हुआ है । साथ ही कहानी में अंतर्मन की अनुभूतियों के साथ ही अबोध बालक के अनछुए कौतुहल और अकेलेपन की ओर कहानी मुड़ी है । दम्पति का वर्षों बाद भी आपसी रोमानी खिंचाव के साथ उन अनुभूति क्षणों के बीच बच्चे का विस्मयकारी दुनिया में अकेले विचरण करना कहानी के मूल स्वर को भी उजागर करता है ।,

एक वाक्य में उत्तर दीजिए-

१. पहाड़ कहानी के कहानीकार कौन है ? (निर्मल वर्मा)
२. पिता कौन थे? (आर्किटेक्ट)
३. किस महीने दम्पति पहाड़ों पर धूमने जाते है ? (अक्टूबर)
४. बच्चे की क्या असाधारण रूप से चमकने लगी ? (ज्वर -ग्रस्त आँखे)
५. बाहर पतझड़ का कैसा आलोक था ? (हरा)
६. बच्चा क्या देखने की जिद कर रहा था ? (पहाड़)
७. निर्मल जी का जन्म स्थल कहाँ था ? (शिमला)
८. रिज के समतल मैदान के एक कोने के सामने क्या थी ?(हवाघर की बेंचें)
९. नीचे घास की ढलान पर क्या चमक रहे थे ? (इक्के- दुक्के जुगनू)
१० 1999 में निर्मल वर्मा को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया ? (ज्ञानपीठ पुरस्कार)

संदर्भ सहित व्याख्या -

१. पागल ! हम आ तो गए तुमने बाहर देखा नहीं..... वे यहाँ हर जगह हैं
२. समूचे पहाड़ी शहर में एक पीली सी छाया उतर आई थी ।
३. इन स्मृतियों ने एक खास जगह बना ली थी - पहाड़ों ने!
४. बच्चे की ज्वर ग्रस्त आँख असाधारण रूप से चमकने लगी।

निबंधात्मक प्रश्न -

१. पहाड़ कहानी की कथा -वस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
२. पहाड़ कहानी में चित्रित छोटे बच्चे के मनोभावों का वर्णन कीजिए ।
३. पति-पत्नी के संबंधों को 'पहाड़' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए ।

डॉ. वैशाली सालियन, यूनिवर्सिटी इवनिंग कॉलेज मंगलूर

7.'हरी बिंदी' - मृदुला गर्ग

संक्षिप्त परिचय - मृदुला गर्ग का जन्म **25 अक्टूबर 1938** में कलकत्ता में हुआ था| पिता का तबादला होने के कारण लगभग तीन वर्ष की आयु में वे दिल्ली आ गयीं जहाँ उनके अनुभव संसार को और भी विस्तार मिला| मृदुला जी का बचपन काफी शारीरिक पीड़ा में बीता और इसके कारण वे कई वर्षों तक स्कूल भी नहीं जा पायीं| घर पर ही रहकर वे अध्ययन करतीं और समय से सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होतीं| उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से एम्.ए. किया| तदोपरांत १९६० से १९६३ तक दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज और जानकी देवी कॉलेज में बतौर प्राध्यापिका कार्यरत रहीं| इस दौरान उन्होंने सामाजिक और आर्थिक शोषण जैसे विषयों पर भी गहन अध्ययन किया| मृदुला जी को बचपन से ही साहित्यपठन का शौक था| साहित्य-पठन से उनका लम्बा लगाव रहा।

उन्होंने अपने सृजन यात्रा का आरम्भ कर्णाटक के बागलकोट से आरम्भ किया| उनकी पहली कहानी **'रूकावट'** सन १९७१ में कमलेश्वर के संपादन में **'सारिका'** में प्रकाशित हुयी| बाद में उनकी कहानी 'हरी बिंदी', 'लिली आफ दी वैली', 'दूसरा चमत्कार' भी **'सारिका'** में प्रकाशित हुयी| १९७२ में प्रकाशित कहानी **'कितनी कैदें'** को **'कहानी'** पत्रिका द्वारा प्रथम पुरस्कार दिया गया| सन १९७४ में मृदुला गर्ग दिल्ली वापस आ गयीं और पूर्णतया साहित्य के सृजन का आरम्भ किया| इसी वर्ष उनका पहला उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' प्रकाशित हुआ| इस उपन्यास को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा **'महाराजा वीरसिंह पुरस्कार'** से सम्मानित किया गया|

मृदुला गर्ग की रचनाएँ - मृदुला जी ने अपने रचना कर्म से हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं को समृद्ध करने का कार्य किया है| उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, संस्मरण आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है| वह एक चर्चित स्तंभकार भी हैं जिन्होंने पर्यावरण, महिला,बाल व साहित्य तक सभी विषयों पर मुखर होकर लिखा। उनके उपन्यास **'चित्तकोबरा'** ने उन्हें एक विवादित लेखिका के रूप मे स्थापित किया| मृदुला गर्ग की रचनाओं को मोटे तौर पर तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है| कथा-साहित्य (कहानी, उपन्यास), कथेत्तर गद्य साहित्य(निबंध, नाटक, संस्मरण आदि) अनुदित साहित्य (हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी)।

उपन्यास-उसके हिस्से की धूप,वंशज, चितकोबरा, मैं और मैं, अनित्य, कठगुलाब, मिलजुल मन। **कहानियाँ -** कितनी केद, टुकड़ा टुकड़ा आदमी, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लैशियर से, उर्फ सैम, दुनिया का कायदा, शहर के नाम, समागम, चर्चित कहानियाँ, संगति-विसंगति (सम्पूर्ण कहानियाँ, दो खंडों में) **नाटक -** एक और अजनबी, जादू का कालीन, तीन केदें **निंबध -** रंग-ढंग, चुकते नही सवाल

प्रस्तावना - 'हरी बिंदी' कहानी स्त्री स्वतंत्राता की विषय को प्रतिपादित करनेवाली कहानी है। सामाजिक बंधन या रुढ़िबद्ध समाजिक व्यवस्था से मुक्त खुली हवा में अपनी खुशियों को तालाशने की इच्छा रखनेवाली या अपने लिए एक जगह तलाशनेवाली महिला की कथा है। जिस महिला की छोटी - छोटी खुशियाँ और सुख को छीनें हैं उन्हें वह पुनः प्राप्त करना चाहती है।

सारांश - हरी बिंदी मृदुला गर्ग व्दारा रचित बहु चर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में मृदुला जी ने आधुनिक नारी की मनोभावनाओं को चित्रित किया है। इस कहानी की मुख्य स्त्री पात्र आधुनिक नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। आज के आधुनिक सोच एवं मानसिकता के कहानी की नायिका अपने पारिवारिक जीवन में संतुष्ट नहीं है। वह अपने घर में घुटन सी महसूस करती है। वह अपने घर के परिवेश से परेशान है। वह अपने घर से निकलकर बाहर आकर वह सब करना चाहती है, जो अभी तक अपने घर में पति के साथ रहकर नहीं कर पाई है। अर्थात आजाद पंछी की तरह स्वच्छंदता से जीना चाहती है।

इसी बीच एक दिन उसका पति अपने काम से दिल्ली चला जाता है। पति के शहर से बाहर जाते ही, नायिका अपने आपको बिलकुल स्वतंत्र महसूस करने लगती है। अपनी इच्छानुसार व्यवहार करने लगती है। अपना एक पूरा दिन वह अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहती है। हर दिन जो जब पति राजन रहता था, तब उसे सुबह-सुबह छह बजे उठना पडता था। उठते ही खटर-पटर शुरु हो जाती थी। चाय-नाश्ते की तैयारी, दोपहर का खाना साथ में, फिर लगभग आठ बजे तक राजन दफ्तर के लिए निकल जाता। फिर पूरा दिन उसे घर की कामकाज में व्यस्थ हो जाना था। जिसमें एक प्राकार की एकरसता थी, मानो वह यंत्र हो। जिससे वह ऊब चुकी थी। इस एकतान जिन्दगी से वह मुक्त होना जाहती थी। अपनी जीन्दगी अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहती थी। ऐसी भावना या मनस्थिति आधुनिक पीढि के नारियों में अवश्य देखा जाता है।

उस दिन सुबह उठते उसकी नजर कलाई पर बंधी घडी पर पडती है, स्मय साढे छह बजा था। फिर से अपनी आँखे बंद कर वह सोने की कोशिश करने लगती है। क्योंकि आज हर दिन की तरह उसे जगाने के लिए उसके पति उसके पास नहीं है। अपनी पति राजन की एक दिन की अनुपस्थिति में वह अपनी जिन्दगी अपनी तरीके से अपने लिए अत्यंत स्वच्छंद भाव से जीना चाहती है। इसलिए वह अपनी तकिया को कसकर पकडकर फिर से लंबे-चौडे पलंग पर लेट गयी। क्योंकि आज वह स्वतंत्र थी। फिर जब आँख खुली तो उसने देख साडे आठ बज चुका था। सुबह देर से उठने का अर्थात देर तक सोने का जो आनंद है उसका अनुभव कर लेती है। उसने खिडकी खोलकर बाहर देखा तो आज का दिन कुछ विशेष, अनुपम और मोहक लगा। फिर चाय पीकर, गरम पानी से देर तक नहाकर बाहर निकली तो उसमें एक अद्भुत उत्साह और ताजगी थी।

फिर उसने चूडिदार, चांदी की बाली पहनकर एक पुराना बैग पकडकर अत्यंत उत्साही भाव से घर से बाहर निकल आई। बरामदे में बैठा हुआ नौकर 'आज क्या खाना बानाए' ऐसा पूछने पर, "जो तुम्हें अच्छा लगे बना लो" कहते हुए उसे कहाँ जाना है इसकी चिंता न करते हुए घर से बाहर कुछ दूर चलते ही टैक्सी को आवाज देती है। टैक्सीवाले के पूछने पर बिना सोचे ही "जहाँगीर आर्ट गैलरी" की ओर चलने के लिए कह दिया। 'आर्ट गैलरी' में कोई आधुनिक कलाकृतियों की प्रदर्शनी थी, जिसे देखकर वह जोर से हँस पडी। तब वहीं खडे एक दढियल सा आदमी उसे घूरने लगा। उससे क्षमा माँगते हुए सोचती है शायद यह कोई कलाकार ही होगा। क्योंकि या तो कलाकार अथवा सामंत ही दाढी रखने का साहस कर सकता है। फिर नायिका ने वहीं एक रेस्तरा में जाकर गरमागरम आलू टिकिया और आइस्क्रीम के लिए आदेश दिया।

खाकर जब वह निकली तो, सिनेमा देखने का मन हुआ तो तुरंत सिनेमा घर में जाकर अंग्रेजी का मजाकिया सिनेमा देखने लगी। वहीं एक और दर्शक था जो जोर-जोर से हँस रहा था। सिनेमा समाप्त होते-होते दोनों में परिचय हुआ। फिर सिनेमा घर से दोनों एक साथ बाहर निकलें तब तक साढे चार बज चुका था, आसमान में बादल छा चुकें थे। वातावरण बहुत सुहावना था। इसे लेकर दोनों आपस में बात करते रहें। इसी बीच हल्की हल्की पुहार पडनी शुरु हो गईं, दोनों भागकर सामनेवाले रेस्तारां में गएं। काफी मंगाकर आमने-सामने बैठकर पीते हुए समुद्र को देखते हुए अपनेअपने खयालों में खो गयें। फिर दोनों आपस में बातें करने लगतें हैं। कहानी की नायिका अत्यंत प्रसन्न है, इसलिए कभी कभी उस अतिथि की बातें सुनकर हर्ष की अतिरेक से जोर से हँसती थी। काफी समय तक दोनों काँफी पीते रहें। काँफी समाप्त होते - होते, बाहर बारिश थमने लगी। नायिका ने ही पैसा दिया अतिथि ने बहस नहीं किया। फिर टैक्सी लेकर घर की ओर निकलें। घर पँहुचकर नायिका टैक्सी से उतरकर पैसे निकालने लगी तो, उसने उसको रोकते हुए कहा 'आज का दिन मेरे लिए काफी कीमती रहा है, क्यंकि आज से पहले मैने किसी को हरी बिंदी लगाए नहीं देखा, और टैक्सी चली गयी। इसे सुनकर नायिका कूछ पल के लिए स्तब्ध होकर देखती रह गई।

इस प्रकार एक बार उसका पति शहर से बाहर चला जाता है तो वह अपने मनमाफिक जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हो जाती है। वो अपना मनमाना व्यवहार करने लगती है। वह सुबह देर से उठती है। बाहर घूमने जाती है। वो फिल्म देखती है। अजनबी के साथ स्वच्छंदता से घूमती है। वह सब करती है, जो वह करना चाहती है। लेकिन इसके साथ ही वह अपनी मर्यादा का ध्यान भी रखती है। मृदुला गर्ग की इस कहानी में कहानी की नायिका आज की आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। आज की आधुनिक नारी जो जो अपनी शर्तों पर जीना चाहती है। जो अपने ऊपर समाज का कोई बंधन नहीं चाहती। वो नारी जो अपनी मर्यादा जानती है,

लेकिन अपनी स्वतंत्रता के अधिकार को भी पाना चाहती है। इस प्रकार यह कहानी पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध एक नारी के विद्रोही मन को दर्शाती है।

- **एक शब्द, वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए -**

१. आँख खुलते ही सबसे पहले नजर किस पर गयी? (कलाई पर बंधी घडी पर)

२. राजन कहाँ गया था? (राजन रात को ही दिल्ली गया था)

३. राजन होता तो हरी बिंदी को देखकर क्या कहता? (वह कहता, नीले पर हरा?)

४. दराज खोली तो उसकी नजर किस पर पडी? (चांदी की बाली पर पडी)

५. टैक्सी लेकर वह पहले कहाँ गयी? (जहाँगीर आर्ट गैलरी गयी)

६. जब वह जोर से हँस पडी तो क्या हुआ?-पास मे कडा एक दढियल सा आदमी उसे घूरने लगा।

७. समुद्र के जल पर क्या अच्छी लगती है? (गिरती वर्षा की बूंदे अच्छी लगती हैं।)

८. 'हरी बिंदी' कहानी के रचनाकार का नाम क्या है? (मृदुला गर्ग)

९. प्रशांत महासागर पर जब जहाज चलती है तो पानी कैसे लगती हैं?-चांदी की तरह चमकने लगती है।

१०. हलकी हलकी पुहार पडने लगीं तो दोनों कहाँ घुसें?-दोनों भागकर सामनेवाले रेस्तरां में घुस गएं।

- **सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

१. "मेरा मतलब, जो तुम्हें अच्छा लगे बना लो। तुम्हें ही खाना है, चाहे खाओ चाहे छुट्टी मनाओ।"

२. "मैं सोच रही थी, समुद्र में कूद पडे तो कितनी दूर तक अकेली तैर सकूँगी। और आप?"

३. "मैने आज से पहले किसी को हरी बिंदी लगाए नहीं देखा।"

४. "यह क्या, सारी रात कान के पास टिक-टिक होती रहती है। इसे उतार दो ना।"

५. "दो किस्म के लोग ही दाडी रखने का साहस कर सकते हैं, कलाकार और सामंत।"

- प्रबंधात्मक प्रश्न -

१. 'हरी बिंदी' कहानी का सारांश लिखते हुए कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

२. "हरी बिंदी कहानी स्त्री स्वातंत्र्य और स्त्री अस्मिता की कहानी है" पठित कहानी के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिए।

३. 'हरी बिंदी' कहानी के आधार पर कहनी की नायिका का चरित्र चित्रण कीजिए।

४. "हरि बिन्दी कहानी नारी मुक्ति की कहानी है' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

डां.परशुराम.गणपति.मालगे, विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग-बेसेंट महिला महाविद्यालय

8.'स्विमींग पुल' - असगर वसाहत

लेखक परिचय - असग़र वजाहत का जन्म 5 जुलाई 1946 को फतेहपुर, उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ था। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम॰ए॰ तक की पढ़ाई की एवं वहीं से पी-एच॰डी॰ की उपाधि भी पायी। पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च जवाहरलाल नेहरू श्वविद्यालय, दिल्ली से किया। 1971 से जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के हिंदी विभाग में अध्यापन

किया। 5 वर्ष ओत्वोश लोरांड विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी में भी अध्यापन किया। यूरोप और अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में उनके व्याख्यान हो चुके हैं।

मूलतः और प्रथमतः असग़र वजाहत कहानीकार हैं। कहानी के बाद उन्होंने गद्य साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन किया और अपने लिए हमेशा नए प्रतिमान बनाए। अपने लिए जिस भी विधा को उन्होंने चुना वहाँ हमेशा पहले दर्जे की रचना संभव हुई। असग़र वजाहत के लेखन में अनेक कहानी संग्रह, पाँच उपन्यास, आठ नाटक और कई अन्य रचनाएँ शामिल हैं। इनकी पहली कहानी 1964 के आसपास छपी थी तथा पहला कहानी संग्रह 'अंधेरे से' 1976 में आपातकाल के दौरान पंकज बिष्ट के साथ (संयुक्त रूप से) छपा था। इनकी कहानियों के अनुवाद अंग्रेजी, इतालवी, रूसी, फ्रेंच, ईरानी, उज्बेक, हंगेरियन, पोलिश आदि भाषाओं में हो चुके हैं।

बुडापैस्ट, हंगरी में इनकी दो एकल चित्र प्रदर्शनियाँ भी हो चुकी हैं। ये टेलीविज़न व फ़िल्म लेखन और निर्देशन से भी जुड़े रहे हैं। कई वृत्तचित्रों, धारावाहिकों और कुछ फीचर फ़िल्मों के लिए पटकथा लेखन भी इन्होंने किया है। असगर वजाहत नियमित रूप से अखबारों और पत्रिकाओं के लिए भी लिखते रहे हैं। 2007 में उन्होंने अतिथि संपादक के रूप में बी॰बी॰सी॰ वेब पत्रिका का संपादन किया था। सुप्रसिद्ध हिंदी पत्रिका 'हंस' के 'भारतीय मुसलमान : वर्तमान और भविष्य' विशेषांक का तथा 'वर्तमान साहित्य' के 'प्रवासी साहित्य' विशेषांक का संपादन भी उन्होंने किया था।

कहानी संग्रह- अँधेरे से, दिल्ली पहुँचना है, स्विमिंग पूल, सब कहाँ कुछ, मैं हिन्दू हूँ मुश्किल काम (लघुकथा संग्रह) डेमोक्रेशिया, **पिचासी कहानियाँ** - प्रथम संस्करण- फरवरी 2015 (2014 तक की प्रायः सम्पूर्ण कहानियाँ), भीड़तंत्र (लघुकथा संग्रह) **चयनित कहानियों का संग्रह-** 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, मेरी प्रिय कहानियाँ असग़र वजाहत : श्रेष्ठ कहानियाँ

नाटक- फ़िरंगी लौट आये, इन्ना की आवाज़, वीरगति, समिधा

उपन्यास- सात आसमान, पहर-दोपहर, कैसी आगी लगाई, बरखा रचाई, धरा अँकुराई मन-माटी - 2009 ('मन-माटी' एवं 'चहारदर' दो उपन्यासिकाओं का एकत्र संकलन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली)

यात्रा वृत्तांत- चलते तो अच्छा था -2008, पाकिस्तान का मतलब क्या -2011, रास्ते की तलाश में -2012, दो कदम पीछे भी -2017

आलोचना- हिंदी-उर्दू की प्रगतिशील कविता -1985 (मैकमिलन, दिल्ली से प्रकाशित)

विविध- बूंद-बूंद (धारावाहिक), बाकरगंज के सैयद, सफाई गंदा काम है, ताकि देश में नमक रहे, व्यावहारिक निर्देशिका : पटकथा लेखन।

सम्मान - 'श्रेष्ठ नाटककार' सम्मान (हिन्दी अकादमी द्वारा) -2009-10, 'आचार्य निरंजननाथ सम्मान' -2012, संगीत नाटक अकादमी सम्मान -2014, हिन्दी अकादमी का सर्वोच्च शलाका सम्मान -2016

प्रस्तावना - 'स्विमींग पुल' कहानी हमारी राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करनेवाली कहानी है। कहानीकार असगर वसाहत जी ने अत्यंत सहज एवं सरलता के साथ वास्तविक परिस्तिथि अर्थात युग की यथार्थ की ओर पाठकों को आकृष्ट किया है। तथा संपूर्ण स्वार्थ से भरे हुए व्यवस्था के खिलाफ अपनी विद्रोहात्मक स्वर को बुलंद किया है।

सारांश - प्रस्तुत कहानी 'स्विमींग पुल' में कुल तीन पात्र है। जैसे वाचक, उसकी पत्नी और वी.आई.पी। इस कहानी की कथावस्तु अत्यंत सरल है तथा बिलकुल अपनी ही कथा के समान लगती है। क्योंकि इसकी कथा हमारे ही आसपास घटित होनेवाली घटना से संबंधित है। इस कहानी के नायक वाचक के घर के सामने एक नाला बहती है। जिसमें कूडा-कछडा इतना जमा हुआ है कि उसका वर्णन ही नहीं कर पाएंगे। उससे निकलनेवाली दुर्गंध उस मुहल्ले में रहनेवाले लोगों का जीना हराम कर दिया है। इस दुर्गंध के कारण लोगों का हाल बेहाल हो गया है। इसकी शिकायत तो कई बार किया गया था लेकिन इसका कोई प्रयोजन नहीं हुआ था।

उस नाले में आए दिन कुछ न कुछ बहकर आ जाती थी। एक दिन की बात है वाचक जैसे ही आँफिस से घर लौटें तो पत्नी ने बताय कि' नाले में बहुत सारे फूल बहते देखा है। लेकिन वाचक ज्यादा न सोचकर कहा किसी ने फैंक दिया होगा। दो-चार दिन के बाद पत्नी ने फिर से बताया कि, आज उसने नाले में किताबें बहते हुए देखा है। फिर तो केवल पत्नी ही नहीं बल्कि, मुहल्ले के लोग भी हर दिन नाले में किसी न किसी वस्तु को बहते देखा। इस प्रकार उस नालें में फूल भी बह रहें है, किताबें भी, कभी-कभी तो जड से उखडे पेड, चिडियों के घोसलें। एक दिन तो किसी ने मरा हुआ चूहा फैंक दिया था जो पानी में फूलकर आदमी के बच्चे जैसा लग रहा था। इस प्रकार उस नाले में सारी दुनिया ही समा गई है।

वहाँ रहनेवाले सभी लोग इसकी शिकायतें करते-करते थक गए। परिचितों से मिले जो इस बारे में मदद कर सकते थे, यानी कुछ सरकारी कर्मचारी या नगरपालिका के सदस्य या और दूसरे किस्म के प्रभावशाली लोग। लेकिन नाला साफ नहीं हुआ। इस बारे में उपराज्यपाल को दो रजिस्टर्ड पत्र जा चुके थें। इसके बारे में एक स्थानीय अखबार में फोटो सहित विवरण छप चुका था। महानगरपालिका के दफ़्तर में जो पत्र भेजे गए हैं, उनकी फ़ाइल इतनी मोटी हो गई है कि आदमी के उठाए नहीं उठती। इसी बीच एक दिन वी.आई.पी, वाचक के घर आ गएं। वाचक को डर था कि कहीं उसकी पत्नी नाले की बात लेकर न बैठें। इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी को काफी समझाया। लेकिन उस दिन जिस दिन वी.आई.पी आ गएं पत्नी सब कुछ भूल चुकी थीं। मजबूरन उसे भी वी.आई.पी.के सामने 'हां' 'हूं' करनी पड़ रही थी। आखिरकार

वी.आई.पी. ने कहा कि चिंता करने की कोई बात नहीं है। वी.आई.पी. के आश्वासन के बाद ही पत्नी कई साल के बाद ठीक से सो पाईं। उन्हें दोस्तों और मोहल्ले वालों ने बधाई दी कि आखिर काम हो ही गया।

वी.आई.पी. के आश्वासन से मुहल्ले के लोग इतने आश्वस्त थे कि एकदो महीने तो उन्होंनें नाले के बारे में सोचा ही नहीं, उधर देखा ही नहीं। नाला उन सबको कैंसर के रोगी जैसा लगता था। जब कुछ महीने गुज़र गए तो पत्नी ने महानगर पालिका को फोन किया। वहां से उत्तर मिला कि नाला साफ किया जाएगा। फिर कुछ महीने गुज़रे, नाला वैसे का वैसा ही रहा। पत्नी ने वी.आई.पी. के ऑफिस फोन किए। वे इतने व्यस्त थे, दौरों पर थे, विदेशों में थे कि संपर्क हो ही नहीं सका। महीनों बाद जब वी.आई.पी. से संपर्क हुआ तो उन्हें बहुत आत्मविश्वास से कहा कि काम हो जाएगा। चिंता मत कीजिए। लेकिन यह उत्तर मिले छः महीने बीत गए तो पत्नी के धैर्य का बांध टूटने लगा। वे मंत्रालय से लेकर दीगर दफ़्तरों के चक्कर काटने लगीं। इस मेज से उस मेज तक। उस कमरे से इस कमरे तक। सिर्फ 'हां` 'हां` 'हां` 'हां` जैसे आश्वासन मिलते रहे, लेकिन हुआ कुछ नहीं। फिर एक दिन वाचक देर से रात गए घर आये तो पत्नी बहुत घबराई हुई लग रही थीं। बोलीं 'आज मैंने वी.आई.पी. को नालें में तैरते देखा था। वे बहुत खुश लग रहे थे। नाले में डुबकियां लगा रहे थे। हंस रहे थे। किलकारियां मार रहे थे। उछल-कूद रहे थे, जैसा लोग स्विमिंग पूल में करते हैं।'

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी 'स्वीमिंग पूल कहानी वर्तमान राजनीतिक, प्रशासनिक व्यवस्था की विरूपता और गैरजिम्मेदाराना व्यवहार पर अत्यंत सरल-सहज भाषा में ही तीखा व्यंग्य किया है। यह कहानी आजाद भारत की स्तिथि का जीता जागता तस्वीर है। प्रतिकात्मक रूप कई प्रसंगों का उल्लेख करते हुए असगर जी देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, वी. आई. पी संस्कृति, कामचोर राजनेता, अधिकारी वर्ग आदि का फर्दापाश किया है। नाला इस कहानी में भ्रष्टाचार और अव्यवस्थ का प्रतीक है। कहानी के अंत में वी. आई. पी और उनके समर्थक नालें में खुशी से तैरते, नाले में डुबकियां लगातें हंसतें-किलकारियां मारतें, उछल-कूद करते, जैसे लोग स्विमिंग पूल में करते हैं। यह दिखाकर कहानीकार ने राजनेताओं की और उनके समर्थकों की मानसिकता पर भी व्यंग्य किया है।

एक शब्द, वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए -

१. 'स्विमींग पुल' कहानी के कहानीकार का नाम क्या है? (असगर वसाहत)
२. नाले में क्या क्या बह रहे थे? (फूल, किताबें, उखडे पेड, पक्षियों के घोसलें)
३. कहानी में नाला किसका प्रतीक है? (भ्रष्टाचार और अव्यवस्था का)
४. 'स्विमींग पुल' कहानी में कुल कितनें तीन पात्र है? (तीन पात्र है)
५. वी.आई.पी. के आश्वासन से मुहल्ले के लोग क्या करने लगें? (आश्वस्त रहने लगें, नाले के बारे में सोचा ही नहीं।)

६. वी.आई.पी. को घर बुलाने से वाचक को क्या डर था? (पत्नी कहीं उनसे नाले का रोना न लेकर बैठ जाएं)

७. 'स्विमींग पुल' कहानी में किस पर व्यंग्य किया है? (वर्तमान राजनीतिक, प्रशासनिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।

८. असग़र वजाहत का जन्म कब और कहाँ हुआ थ? (5 जुलाई 1946 को फतेहपुर, उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ था।)

९. कहानी के अंत में वी. आई. पी क्या कर रहा था?(उनके समर्थकों के साथ नालें में खुशी से तैरते, नाले में डुबकियां लगातें हंसतें-किलकारियां मारतें, उछल-कूद कर रहा था।)

१०. दुर्गंध के कारण लोगों का हाल क्या हो गया है? (हाल बेहाल हो गया है)

सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

१. 'आपको क्या है, सुबह घर से निकल जाते हैं तो रात ही में वापस आते हैं। जो दिन-भर घर में रहता हो उससे पूछिए कि क्या गुज़रती है।'

२. 'शिकायतें सैकड़ों बार दर्ज कराई हैं। लेकिन नाला साफ कभी नहीं हुआ। उसमें से बदबू आना कम नहीं हुई।'

३. 'किसी दिन जड़ से उखड़े पेड़, किस दिन चिड़ियों के घोंसले, किसी दिन टूटी हुई शहनाई।'

४. 'आज मैंने वी.आई.पी. को नालें में तैरते देखा था। वे बहुत खुश लग रहे थे।'

- **प्रबंधात्मक प्रश्न -**

१. 'स्विमींग पुल' कहानी में चित्रित यथार्थ को स्पष्ट कीजिए।

२. 'स्विमींग पुल' कहानी का सारांश लिखते हुए कहानी का उद्धेश्य स्पष्ट कीजिए।

३. समकालीन परिवेश के संदर्भ में 'स्विमींग पुल' कहानी का विश्लेषन कीजिए।

डां.परशुराम.गणपति.मालगे,विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग-बेसेंट महिला महाविद्यालय

I SEM OPEN ELECTIVE

SL. NO.	CHAPTER	LECTURER NAME
1.	व्याकरण	डॉ.राजीव. सी
2.	संवाद और संभाषण कला	डॉ.कल्पना प्रभु

I Sem Open Elective Grammar

I Unit

व्याकरण - भाषा - बोली - लिपि

१. व्याकरण की परिभाषा : जो शास्त्र हमें शुद्ध रूप से हिन्दी बोलना, लिखना, पढना सिखाता है उसे हिन्दी व्याकरण कहते हैं ।

२. भाषा : भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मन के भावों और विचारों को प्रकट किया जाता है और दूसरों के भावों और विदारों को जाना जाता है ।

भाषा के रूप : १. मौखिक भाषा २. लिखित भाषा

३. बोली : बोली किसी प्रांत के बहुत्से क्षेत्र में बोली जाती है । इसमें साहित्यिक रचनाए नहीं होतीं और इसे सरकारी काम-काज में मान्यता प्राप्त नहीं होती ।

४. लिपि : भाषा की मौखिक ध्वनियों को जिन चिह्नों के द्वारा लिखा जाता है, उसे लिपि कहते हैं ।

वर्ण विचार

वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके और खंड नहीं हो सकते, उसे वर्ण कतते हैं ।

वर्ण के दो भेद : १, स्वर २. व्यंजन

१. स्वर वर्ण (Vowels) : (Independent Letters) : जिन वर्णों के उच्चारण के समय अन्य ध्वनियों का सहारा नहीं लेना पडता, उन्हें स्वर कहते हैं । स्वरों को बोलते समय बिना किसी रुकावट के मुख से वायु (हवा) निकलती है । हिन्दी वर्णमाला में ११ स्वर हैं - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वर के भेद :

अ) ह्रस्व स्वर - जिन स्वरों का उच्चारण करते समय सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं । ह्रस्व स्वर ४ हैं - अ. इ, उ, ऋ

आ) दीर्घ स्वर : जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से लगभग दोगुना अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं ।

दीर्घ स्वर ७ हैं - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

इ) प्लुत स्वर : जिनस्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से लगभग तीन गुना अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं ।जैसे-ओ३म, रा३म, भैया३

२. व्यंजन वर्ण : वे वर्ण जो स्वरों की सहायता से बोले जाए तथा जिनका उच्चारण करते समय वायु, मुख से अलग-अलग स्थानों पर रुक-रुक कर निकले, उसे व्यंजन कहते हैं ।

व्यंजन के भेद : १. स्पर्श व्यंजन २. अंतस्थ व्यंजन ३. ऊष्म व्यंजन

१. स्पर्श व्यंजन : जिन वर्णों के बोलने में प्राण-वायु किसी उच्चारण स्थान विशेष को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं । स्पर्श व्यंजन २५ हैं - कवर्ग -५, चवर्ग - ५, टवर्ग -५, तवर्ग - ५, पवर्ग - ५ (२५)

२. अंतस्थ व्यंजन - जिन व्यंजनों को बोलने में हवा बहुत कम रुक कर बाहर निकलती है, वे अंतस्थ व्यंजन कहते हैं । - य, र, ल, व (४)

३. ऊष्म व्यंजन : जिन व्यंजनों के बोलने में मुख से गर्म हवा निकलती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं । - श, ष, स, ह (४)

संयुक्त व्यंजन : दो भिन्न-भिन्न व्यंजनों के परस्पर मेल को संयुक्त व्यंजन कहते हैं । -

क् + श् = क्ष त् + र् = त्र ग् + न् = ज्ञ

अनुनासिक (अँ) अनुस्वार (अं), विसर्ग (अः)

वर्तनी का मानकीकरण

परिभाषा : उच्चारित शब्द को लिखने में प्रयुक्त लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहते हैं ।

हिन्दी भाषा की लिपि 'देवनागरी' के लिपि चिह्नों को मुख्यत: चार भागों में बाँटा जा सकता है :

१. मूल लिपि चिह्न - सभी स्वरों और व्यंजनों के लिपि चिह्न मूल लिपि चिह्न होते हैं - जैसे - अ, इ, क, त

२. संयुक्त चिह्न - एक से अधिक ध्वनियों के लिए निर्धारित लिपि चिह्न संयुक्त चिह्न कहलाते हैं । जैसे - क्ष, त्र, ज्ञ, श्री

३. मात्रा चिह्न - इनमें सभी स्वरों की मात्राएँ आती हैं । 'अ' को छोडकर अन्य सभी स्वरों आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, के मात्रा चिह्न निर्धारित है ।

४. विशिष्ट चिह्न - इनमें अनुस्वार (ं) विसर्ग (:) अनुनासिक (ँ) और अंग्रेज़ी से आया (ॉ)

प्राय: वर्तनी की अशुद्धियाँ निम्न रूपों में पाई जाती हैं -

	अशुद्ध	शुद्ध
अ) स्वरों के प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ -	अवाज़	आवाज़
आ) अनुस्वार-अनुनासिक संबंधी अशुद्धियाँ -	चांद	चाँद
इ) व्यंजनों के प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ -	विश	विष
ई) लेखन और वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ -	आर्दश	आदर्श
उ) क्षेत्रीय बोली के प्रभाव संबंधी अशुद्धियाँ -	रामचंदर	रामचंद्र
ऊ) भाषा के अमानक प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ -	इसटेशन	स्टेशन

Unit II

१. वाक्य विचार : अर्थ और परिभाषा

भावों और विचारों को प्रकट करने वाले व्यवस्थित शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं ।

वाक्य के अंग : रचना की दृष्टि से वाक्य के दो अंग होते हैं - १. उद्देश्य २. विधेय

१. उद्देश्य :- वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं । जैसे-

कमला ने कुत्ते को खाना खिलाया । **शकुंतला** कपडे धो रही थी ।

इन वाक्यों में कमला और शकुंतला उद्देश्य हैं ।

२. विधेय :- वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ बताया जाता है, उसे विधेय कहते हैं । जैसे -

राम **लिख रहा था** । सीता **सितार बजाती है** ।

इन वाक्यों में लिख रहा था और सितार बजाती है विधेय है ।

उद्देश्य	विधेय
सरदार भगतसिंह ने	अंग्रेज़ों की नाक में दम कर दिया था ।
महात्मा गांधी ने	सत्याग्रह का मार्ग दर्शाया ।
वीर सावरकर	स्वतंत्रता-सेनानी थे ।
रानी लक्ष्मीबाई	वीरांगना थी ।
सुभाषचंद्र बोस ने	आज़ाद हिंद फौज का गठन किया था ।

वाक्य के भेद : १. अर्थ के आधार पर २. रचना के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

भेद	उदाहरण
१. विधानवाचक वाक्य	रोहित लखनऊ जाएगा ।
२. नेषेधवाचक वाक्य	मैं बाज़ार नहीं जाऊंगा ।
३. विस्मयवाचक वाक्य	बाप रे ! इतना मोटा चूहा ।
४. संदेहवाचक वाक्य	शायद कल वर्षा हो जाए ।
५. आज्ञावाचक वाक्य	कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए ।
६. संकेतवाचक वाक्य	पानी न बरसता, तो धान सूख जाता ।
७. इच्छावाचक वाक्य	चलिए, फिल्म देख आए
८. प्रश्नवाचक वाक्य	कहो, कैसे आना हुआ ?

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

भेद	उदाहरण
१. सरल वाक्य	कबूतर उडा । वह आया ।
२. संयुक्त वाक्य	आज दीदी आने वाली थी किंतु नहीं आई ।
३. मिश्र वाक्य	हो सकता है कि हम नया टीवी खरीदें ।

रचना के आधार पर वाकयों में परिवर्तन :

१. सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य	संयुक्त वाक्य
१. टी या काफी में से कोई पी लेंगे ।	टी पी लेंगे या काफी पी लेंगे ।
२. मा ने पुत्र को डाटकर सुलाया ।	मा ने पुत्र को डाटा और सुला दिया ।

२. सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

सरल वाक्य	मिश्र वाक्य
१. लापरवाह मज़दूर छत से गिर गया ।	जो मज़दूर लापरवाह था, वह छत से गिर गया
२. ईमान्दार व्यक्ति का सभी का आदर करते हैं ।	जो व्यक्ति ईमानदार होता है, सभी उसका आद करते हैं ।

३. संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य

संयुक्त वाक्य	सरल वाक्य
१. ईशा आई और पढने लगी ।	ईशा आकर पढने लगी ।
२. घबराओ मत और गीत सुनाओ ।	बिना घबराए गीत सुनाओ ।

४. संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य

संयुक्त वाक्य	मिश्र वाक्य
१. राम खूब पढता था और प्रथम आया ।	क्योंकि राम खूब पढता था इसलिए प्रथम आय
२. प्रीति आई तो साधना चली गई ।	जब प्रीति आई साधना जा चुकी थी ।

५. सरल वाक्य से संयुक्त तथा मिश्र वाक्य

१. कक्षा में अध्यापिका के आते ही सभी शांत हो गए । (सरल वाक्य)

कक्षा में अध्यापिका अई और सभी शांत हो गए । (संयुक्त वाक्य)

जैसे ही कक्षा में अध्यापिका आई, वैसे ही सब शांत हो गए । (मिश्र वाक्य)

Dr.Rajeeva C, Alva's College, Moodubidire

2.संवाद लेखन

अर्थ :- संवाद शब्द दो अलग शब्दों को मिलाकर बनाया गया है,जैसे सम और वाद | इस प्रकार संवाद का शाब्दिक अर्थ होता है ' समान रूप से विचारों का आदान प्रदान करना'| मगर संवादों के माध्यम से न केवल शब्दों का आदान प्रदान करना होता है बल्कि उनका प्रयोग

करने वालों के हाव भाव को प्रकट करना भी है, जो संवादों में प्रयुक्त किये जानेवाले शब्दों को स्वाभाविकता प्रदान करते है |

परिभाषा :- दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाले वार्तालाप को जब लिखा जाता है तो वह संवाद कहलाता है |

संवाद के प्रकार:- संवाद के मुख्य रूप से चार प्रकार होते हैं :- १) सामान्य संवाद २) औपचारिक कार्य के लिए संवाद ३) विचार व्यक्त करनेवाले संवाद ४) भावनाएं व्यक्त करने वाले संवाद |

संवाद लेखन लिखते समय इन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :- वाक्य - रचना सजीव हो,, भाषा सरल हो , कठिन शब्दों का प्रयोग कम से कम हो, संवाद के वाक्य बड़े न हो , संक्षिप्त और प्रभावशाली हो, मुहावरेदार भाषा काफी रोचक होती है इसे ध्यान में रख़कर मुहावरों का सही जगह प्रयोग हो | संवाद का आरम्भ और अंत रोचक हो |

संवाद लेखन अभ्यास:-

1. दूरदर्शन के कार्यक्रम देखने और अध्ययन के प्रति लापरवाह होने पर पिता और पुत्र के बीच संवाद।

पिता : देखो बेटा! मैं यह नहीं कहता कि तुम दूरदर्शन देखो ही नहीं लेकिन अपने अध्ययन के प्रति लापरवाही उचित नहीं।

पुत्र : पिता जी! मैं ही अकेला देखता हूँ क्या? जब घर में टेलीविज़न सभी देखते हैं तो आप मुझे ही क्यों डाँटते हैं?

पिता : मैं तुम्हें इसलिए समझाता हूँ कि तुम अपने कर्तव्य से पीछे हट जाते हो। तुम्हारी बहन कक्षा में 92 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम आई है और तुम मात्र 50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सके हो।

पुत्र : आप सदा ही नीता का पक्ष लेते हैं।

पिता : इसमें पक्ष लेने वाली कोई बात नहीं है।

पुत्र : क्या सारे माता-पिता ऐसा नहीं करते ?

पिता : तो क्या तुम सभी का उदाहरण देकर अपने कर्तव्य को निभा लोगे। भविष्य तो तुम्हारा बनना है।

पुत्र : ठीक है! मैं भी बहुत अच्छे अंक प्राप्त करूँगा।

पिता : मुझे तुमपर विश्वास है। देर आए दुरस्त आए।

2) रोगी और वैद्य का संवाद -

रोगी- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!

वैद्य- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है ?
रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है केवल खाँसी रह गयी है।
वैद्य- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।
रोगी- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन (बिस्तर) पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।
वैद्य- चिंता की कोई बात नहीं। सुखदुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।
रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।
वैद्य- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।
रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ?
वैद्य- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।
रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।
वैद्य- अच्छा, नमस्कार।

अन्य नमूनों के लिए व्यावहारिक व्याकरण की किताब में देखा जाय | (डॉ नागरत्ना राव और डॉ सुमा से सम्पादित)

सम्भाषण कला

अर्थ एवं स्वरुप :- सम्भाषण का सामान्य अर्थ है - बातचीत अथवा वार्तालाप \ सैम उपसर्ग के साथ साथ अव्यय भी है इसका अर्थ सामान , बराबर और सारा | 'सम्भाष' में 'अन' प्रत्यय जोड़ने से सम्भाषण बनता है | इसका अर्थ अभिवादन, अनुभाषण , आलाप, भाषण ,कथोपकथन, चर्चा ,संलाप, संवाद और सम्भाषण है | " ऊँची आवाज में कहा गया कथन सम्भाषण कहलाता है |
सम्भाषण अकेले संभव नहीं है इस में दो से अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता है | जब दो व्यक्ति आपस में प्रथम बार मिलते है तो अभिवादन के साथ आपस में जब परस्पर सम्भाषण करते है तब एक व्यक्ति मन की बात बताता है तो दूसरा ध्यान से सुनता है और जब वह बात करेगा तो पहले व्यक्ति का कथन पूरा हो जाता है | दो व्यक्तियों के बीच बातचीत जो होती है उसे सम्भाषण कहा जाता है | कहने का अर्थ यह है कि जब वक्ता और श्रोता के बीच संदेशों का आदान प्रदान सामान रूप से होता है तो उसे सम्भाषण कहा जा सकता है |

<u>संभाषण के विविध रूप</u>

वार्तालाप या संवाद, व्याख्यान, वाद-विवाद, एकालाप , परिचर्चा और जनसंचार आदि सम्भाषण के विविध रूप हैं |

वार्तालाप या संवाद,- वार्तालाप का अर्थ है बातचीत | दो व्यक्ति जब भाषा के माध्यम से विचारों या सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं, तो उसे वार्तालाप कहा जाता है |

व्याख्यान :- व्याख्यान सम्भाषण का विशिष्ट रूप है | इसका प्रयोग आम टूर पर किसी विषय की व्याख्या करने के लिए किया जाता है |

वाद- विवाद :-वाद वह बातचीत या तर्क है जिससे कोई सिद्धांत निश्चित हो | लेकिन सिद्धांतो को न माननेवाले विवाद या उल्टा तर्क करते है | अर्थात किसी भी विषय के पक्ष या विपक्ष में विचार व्यक्त करने के माध्यम को वाद विवाद या बहस कहा जाता है |

एकालाप :- एकालाप का अर्थ है एक व्यक्ति या पात्र का सम्भाषण | इसमें संबोधक और सम्बोधित एक ही पात्र होता है | इसमें एक ही व्यक्ति आरम्भ से अंत तक अपने मोभवों और घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता है |

परिचर्चा :- किसी भी तथ्य, विषय या समस्या पर विस्तृत रूप से की जानेवाली चर्चा को परिचर्चा कहा जाता है | इस तरह के सम्भाषण में कई लोग भाग लेते हैं | यह ओपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार से हो सकती है | परिचर्चा सहज और मैत्रीपूर्ण वातावरण में होनी चाहिए |

जनसंचार :- सूचना तथा विचारों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक प्रेषित करने की कला को संचार कहा जाता है | जनसंचार के लिए उपयोगी सम्भाषण के विविध रूप हैं - घोषणा करना, आँखों देखा हाल और वाचन |

सम्भाषण की आवश्यकता:-

मनुष्य की भावनाओं एवं संवेदनाओं के आदान-प्रदान के लिए संभाषण आवश्यक है। स्वागत-विदाई, शंका-समाधान आदि क्रिया व्यापारों के लिए भी संभाषण आवश्यक है। क्योंकि इसके माध्यम से बात बनती है और काम चलते हैं। वाक् चातुर्य के गुण से युक्त व्यक्ति आसानी से अपना काम करवा लेता है। यदि व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी हो तो वह न ही अपनी बात रख सकता है, न ही तर्क-वितर्क कर सकता है और न ही अपना पक्ष रख सकता है। वह असमंजस की स्थिति में पड़ सकता है। मनुष्य संभाषण के माध्यम से अपने गुण-दोषों के साथ-साथ दूसरों के गुण-दोषों का विवेचन कर सकता है। व्यक्ति के अपने व्यक्तित्व निर्माण में भी संभाषण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सम्भाषण व्यवहार कुशलता सिखाता है|

<u>सम्भाषण के कुछ नमूने :-</u>

१) कामचोर नौकर और सख्त मालकिन के बीच होने वाले संभाषण को अपने शब्दों में लिखिए।

मालकिनः आज तो हद हो गई, बाज़ार से सामान लाने में तुमने तीन घंटे लगा दिए

नौकर : मालकिन, रास्ते में बहुत ट्रैफ़िक था, पैदल चलना भी मुश्किल हो रहा था।

मालकिन :-ऐसे बहाने सुनते-सुनते मेरे कान पक गए हैं। जाओ, अब जल्दी से बरतन धो दो।

नौकर : पहले जरा सुस्ता फिर झट से बरतन धो दूँगा।

मालकिन:- लगता है तुमने काम न करने की कसम खा रखी है। जब देखो, बहानेबाजी करते रहते हो। जाओ, पहले बरतन धोओ, फिर सुस्ता लेना।

नौकर:- जी, अभी धोता हूँ।

२) घर में होने वाले किसी समारोह के बारे में माँ-बेटे का संभाषण लिखिए।

माँ :-अरे बेटा, तुम आ गए। मैं तुम्हें ही याद कर रही थी।

बेटा:-माँ, मैं बहुत खुश हूँ।

माँ :- हाँ बेटा। खुशी की ही बात है। आज तुम्हारे पिता जी का जन्मदिन है। सामान की खरीदारी तुम्हें ही करनी है।

बेटा :- हाँ माँ चलो जल्दी से बाज़ार चलते हैं।

माँ :- हाँ बेटा, चलो।

बेटा : अच्छा माँ, पहले सामानों की लिस्ट बनाते हैं।

३) परीक्षा की तैयारी के संबंध में दो सहपाठियों के बीच सम्भाषण लिखिए।

राजीव :-अरे, गौरव परीक्षा निकट आ रही है। तुमने तैयारी तो शुरू कर दी ह बताओ, क्या- क्या कर रहे हो?

सुरेश : मित्र गौरव, अभी मैंने केवल हिंदी और विज्ञान की तैयारी की योजना वा है। नोट्स बना रहा हूँ। हिंदी और विज्ञान के असाइनमेंट हल कर रहा हूँ

राजीव: ठीक है मित्र, अब मैं अंग्रेजी तथा गणित पर भी ध्यान दूँगा। हम दोनो मिलकर सभी विषयों

की तैयारी कर लेंगे।

गौरव :-हाँ मित्र इससे तो सभी मुश्किलें चुटकियों में हल होगी यही तो परीक्षा की तैयारी का सही

तरीका है।

४). पोलियो कार्यकर्ता और एक गृहिणी के बीच संभाषण लिखिए |

कार्यकर्ता: - हैलो. दरवाजा खोलिए हम लोग बच्चों को पोलियो की खुराक देने आए है

गृहिणी :-दो बार पहले भी पोलियो की खुराक पिलाई गई है, फिर भी मैं बच्चे को ले आतीहूँ।

कार्यकर्ता: जल्दी से ले आइए।

गृहिणी : सुना है, पोलियो की खुराक लेने के बाद बुखार आ जाता है।

कार्यकर्ता :- हमेशा नहीं, कभी-कभी ऐसा होता है। आपने तो अनुभव किया होगा।

गृहिणी :- ठीक है. आप बैठिए। मैं बच्चे को अभी ले आई।

५). आर्ट गैलरी में किसी चित्रकार की पेंटिंग्स के संबंध में दो कला-प्रशंसकों के मध्य संभाषण लिखिए ।

पहला प्रशंसक : कितनी अच्छी पेंटिंग है। इसकी मुसकान तो मोनालिसा जैसी है।

दूसरा प्रशंसक- यह तो ठीक है। लेकिन मोनालिसा जैसी मुसकान से तुलना करना कुछ ज्यादा तो नहीं है।

पहला प्रशंसक:-देखो, तब लियोनार्डो दा विसी पहले ऐसे कलाकार थे। किंतु आज तो अनेक उदीयमान कलाकार बढ़िया काम कर रहे हैं।

दूसरा प्रशंसक :- ठीक कह रहे हो, किंतु मेरा तो इतना ही कहना है कि मोनालिसा तो हम लोगों के लिए मील का पत्थर है। वह हमारे लिए आदर्श है। सामने वाली पेटिंग भी काफ़ी अच्छी है। चेहरे पर अनेक प्रकार के भाव छिपे हैं |

पहला प्रशंसक :-यह तुमने बिलकुल ठीक कहा। यह पेटिंग बहुत अच्छी है।

.एक अंक के लिए प्रश्न के नमूने :-

(1) mark

१) संवाद लेखन कितने प्रकार का होता है ? - चार |

२) संवाद की पहली शर्त क्या है ? दो व्यक्ति होना |

३) संवाद किस भाषा में होनी चाहिए? मुहावरेदार |

४) सम्भाषण के लिए व्यक्ति का क्या होना आवश्यक है ? विवेकशील होना |

५) सम्भाषण का एक अनिवार्य तत्व क्या है ? सरसता |

६) एकालाप किसे कहते हैं ? - एक ही व्यक्ति या पात्र का संभाषण |

७) सम्भाषण का सामान्य अर्थ क्या है ? बातचीत या वार्तालाप |

८) परिचर्चा किस वातावरण में होनी चाहिए ? -सहज और मैत्रीपूर्ण |

प्रश्नों का उत्तर लिखिए | (5) marks

१) वार्तालाप या संवाद किसे कहते है ? स्पष्ट कीजिए ?

२) संभाषण के विविध रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिए ?

३) संभाषण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए ?

नीचे दिए प्रश्नों का उत्तर लिखिए :- (6 Marks)

१) दो मित्रों के बीच अपने कॉलेज में बिताए पहले दिन के बारे संवाद लिखिए |

२) यातायात पुलिसकर्मी और हेलमेट न पहने हुए वाहन चालक के बीच संवाद प्रस्तुत कीजिए |

३) परीक्षा की तैयारी को लेकर रौनक और भैरवी के बीच संभाषण लिखिए |

<u>प्रस्तुतकर्ता:- डॉ कल्पना प्रभु जे, हिन्दी विभागाध्यक्षा, केनरा कॉलेज, मंगलुरु</u>